इला भट्ट

सेवा संगठन की संस्थापक

ज्योत्सना श्रीनिवासन



इला भट्ट

सेवा संगठन की संस्थापक

ज्योत्सना श्रीनिवासन

विषयवस्तु

1. बचाव के लिए वकील

2. स्वतंत्रता के माहौल में बड़े होना

3. एक युवा आदर्शवादी

4. जीवन में आदर्श काम खोजना

5. "महिलाओं को वास्तव में क्या चाहिए"

6. गरीब महिलाओं के लिए एक बैंक

7. SEWA महिलाएं अपने दम पर

8. SEWA ने राष्ट्र और विश्व को सिखाया

समयरेखा

“जो महिलाएं अदृश्य थीं..... वे हमारी
सामूहिक ताकत से अब दिखाई दे रही हैं.”

—इला भट्ट



इला भट्ट – सेवा संगठन की संस्थापक

अध्याय 1

बचाव के लिए वकील

इला भट्ट भारत के सबसे बड़े शहरों में से एक, अहमदाबाद की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर काम पर जाने के लिए अपने स्कूटर पर सवारी कर रही थीं. उन्होंने कारों, बसों, ट्रकों, मोटरसाइकिलों, साइकिलों और नंगे पांव लोगों के साथ सड़क पर आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा की. कुछ लोग अपने शरीर की ताकत से बड़े, भारी ठेले खींच रहे थे. इला की साड़ी हवा में फड़फड़ा रही थी क्योंकि वो मध्य अहमदाबाद में एक पहाड़ी से नीचे उतर रही थीं. तभी उन्होंने एक पुलिसकर्मी को सड़क पर खड़ा देखा. वो अपने हाथ से "रुको" का संकेत दे रहा था. इला तुरंत रुकने के लिए तैयार हुईं.

तभी उन्होंने एक भयावह नजारा देखा. एक महिला, अपने ठेले को ढलान से नीचे ला रही थी. ठेला, तेल से भरे टिन के कनस्तरों से लदा था. पुलिसकर्मी के इशारे पर उस महिला ने ठेले को रोकने के लिए काफी मशक्कत की. इन ठेलों में कोई ब्रेक नहीं होता था. इसलिए महिला के लिए गाड़ी को रोकने का एकमात्र तरीका था कि वो अपने पैरों पर ज़ोर लगाए, हैंडल को पीछे खींचे, और ठेले के रुकने की उम्मीद करे.

लेकिन ढलान से नीचे जाते समय गाड़ी ने तेज़ स्पीड पकड़ ली थी, और सारी कोशिश के बावजूद वो ठेला रुका नहीं. महिला गिर गई और गाड़ी उसके ऊपर से लुढ़क गई और उसने उसके पैरों को कुचल दिया.

इला अपने स्कूटर से कूदी और महिला के पास गई. लोगों ने महिला को गाड़ी के नीचे से खींचकर बाहर निकाला. इला ने उसे खड़े होने में मदद करने की कोशिश की. लेकिन वो खड़ी नहीं हो पाई. उसके दोनों घुटने टूट गए थे. उसे अस्पताल ले जाया गया और इला अपने काम पर चली गई. लेकिन इला उस महिला को कभी नहीं भूल पाई. वो उसकी मदद करने के लिए दृढ़ थी.



कंकू राणा भी वैसा ही ठेला खींचती थी.
भार जितना अधिक होता था, ठेले को खींचना उतना ही कठिन होता था.

इला भट्ट ने पहले ही अपने कई साल गरीब भारतीय महिलाओं की मदद करने में लगाए. इस दुर्घटना के समय, 1973 में, इला चालीस वर्ष की थीं. वो एक वकील और एक अनूठे नए श्रमिक संघ, स्वरोजगार महिला संघ (SEWA) की नेता थीं. भारत में कई यूनियनें थीं, जहाँ पर श्रमिक अपने मालिकों से उचित वेतन और व्यवहार के लिए लड़ते थे. लेकिन यह संघ अनूठा था क्योंकि उसकी सदस्य केवल गरीब महिलाएं थीं जिनका कोई एक स्थाई मालिक नहीं था. उन्हें जो और जहाँ भी काम मिलता वो करती थीं - और आमतौर पर उन्हें काम के लिए बहुत कम मज़दूरी मिलती थी. ठेला खींचने वाली महिला कंकू राणा ऐसी ही एक कार्यकर्ता थी. वो रोजाना अपनी मेहनत उस मालिक को बेंचती थीं जिसे गाड़ी खींचने वाले की जरूरत होती थी.

इला ने सोचा कि वो SEWA के माध्यम से कंकू राणा की मदद कर सकती थीं. कामगार मुआवजा अधिनियम नामक एक कानून था. उसके अनुसार जब काम करते समय कोई कर्मचारी घायल हो जाता था, तो वो चिकित्सा खर्च और काम न कर सकने के दौरान खोई हुई आय की भरपाई का हकदार होता था. लेकिन जब इला ने इस कानून पर शोध किया तो उन्हें पता चला कि कंकू राणा जैसी महिलाएं उस कानून के दायरे में आतीं ही नहीं थीं! वास्तव में कानून की अनुसार कंकू राणा "मज़दूर" थी ही नहीं! कानून के अनुसार "मज़दूर" का कोई एक स्थाई मालिक होना ज़रूरी था जो कि कंकू राणा जैसी महिलाओं के पास नहीं था.

इला नाराज हुई. कंकू राणा ने बहुत कम पैसे में और खतरनाक परिस्थितियों में इतनी मेहनत की और फिर भी उसे इस कानून के तहत एक "मज़दूर" तक नहीं माना गया था. इला ने महसूस किया कि वो कानून ज्यादातर कारखानों या ऑफिस में काम करने वाले लोगों के लिए उपयोगी था. उस कानून ने कंकू राणा जैसी बहुत सारी गरीब स्वरोजगार करने वाली महिलाओं के साथ भेदभाव किया था.

इला अंततः कंकू राणा को उसकी चोट के लिए मुआवजा दिलाने में सफल हुईं, लेकिन उन्हें न्यायाधीशों के साथ उसके लिए नौ वर्षों तक संघर्ष करना पड़ा. इस दौरान, SEWA एक छोटे, स्थानीय संगठन से एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त संगठन के रूप में विकसित हुआ, और उसने पूरे भारत और दुनिया भर में इसी तरह के अन्य संगठनों को प्रेरित किया. कई देशों के पत्रकारों ने SEWA के बारे में पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में लिखा. "व्हेयर वूमेन आर लीडर्स: द SEWA मूवमेंट इन इंडिया", नाम की कलिमा रोज़ ने एक किताब भी लिखी. इला के काम और दूरदृष्टि से दुनिया को इस बात का एहसास होने लगा कि कंकू राणा जैसी महिलाएं वास्तव में मजदूर थीं. काम पर घायल होने के बाद वे मुआवजे की भी हकदार थीं, और साथ में उन्हें श्रमिकों के अन्य सभी लाभ - उचित वेतन, बैंक ऋण, स्वास्थ्य सेवाएं, बाल देखभाल सेवाएं भी मिलनी चाहिए थीं.

जब इला बड़ी हो रही थी, तो कम ही लोग यह सोच सकते थे कि वो कभी इस प्रकार की लड़ाइयां लड़ेगी. एक आरामदायक, शिक्षित परिवार में जन्मी, इला ने खुद गरीबी का कोई अनुभव नहीं किया था. वो एक डरपोक बच्ची थी और वो खुद के लिए खड़े होने से भी डरती थी - किसी और की मदद करना तो दूर की बात रही. उनके माता-पिता को केवल यही उम्मीद थी कि उनकी किसी अच्छे आदमी से शादी होगी और फिर वो एक पत्नी और बच्चों की माँ के रूप में एक आरामदायक जीवन जिएंगी.

इसके बजाय, इला भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और उसके नेता, महात्मा गांधी से प्रेरित थीं, जिन्होंने भारत में कई गरीब लोगों की मदद के लिए अपना जीवन समर्पित किया था. जैसे-जैसे इला ने गरीब लोगों की दुर्दशा के बारे में अधिक से अधिक जाना, उन्होंने विशेष रूप से गरीब महिलाओं की मदद करने का फैसला किया, क्योंकि बाकी लोग उन पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे. ये वो महिलाएं थीं जो फुटपाथ पर सब्जियां बेचती थीं, या जिनके पास एक बकरी थी और वो उसका दूध बेचती थीं, या जो री-सायकल करने के लिए सड़क के किनारे से स्क्रैप-पेपर उठाती थीं, या फिर पुराने कपड़ों की मरम्मत करती थीं और उन्हें बेचती थीं. ये महिलाएं आमतौर पर निरक्षर थीं, और भारत में अधिकांश मध्यम वर्ग और धनी लोग उन्हें नीची निगाह से देखते थे और उनके साथ खराब व्यवहार करते थे.



एक महिला रद्दी कागज को री-सायकल केंद्र में लाती है.

लेकिन इला के मन में इन महिलाओं के प्रति सम्मान और सहानुभूति थी. वो उनकी मदद करना चाहती थीं. और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण वो चाहतीं थी कि वो महिलाएं स्वयं अपनी और दूसरी महिलाओं की सहायता करें. नतीजतन, महिलाओं ने अपना खुद का एक बैंक शुरू किया, पुलिस अत्याचार का सामना करने के लिए वे खुद के लिए डट कर खड़ी हुईं, और छोटे व्यवसायों का गठन किया जिससे उन्हें आजीविका कमाने में मदद मिली.

धीरे-धीरे एक शर्मीली युवती, इला एक विश्व नेता के रूप में विकसित हुईं. उन्होंने अपना काम ज़ारी रखा जिससे सभी को सम्मानजनक और बेहतर जीवन जीने का मौका मिल सके. उनकी दृष्टि ने हजारों गरीब महिलाओं को अपने जीवन और अपनी दुनिया को बदलने के लिए एक-साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया.

अध्याय 2

स्वतंत्रता के माहौल में बड़े होना

इला भट्ट का जन्म 7 सितंबर 1933 को अहमदाबाद में हुआ जो गुजरात, राज्य का सबसे बड़ा शहर था और भारत के पश्चिमी भाग में स्थित था. अहमदाबाद एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था, जिसमें एक बड़ा कपड़ा उद्योग बारहवीं शताब्दी से स्थापित था. इला, सुमंत भट और वनलीला भट की सबसे बड़ी बेटी थीं. वे गुजरात राज्य में सूरत नामक शहर में रहते थे. सूरत, अहमदाबाद और मुंबई शहरों के बीच स्थित था. इला का जन्म अहमदाबाद में हुआ क्योंकि उनकी माँ अहमदाबाद में अपनी माँ के घर जन्म देने गई थीं, जैसे कि भारत में परंपरा थी.

सुमंत की यह दूसरी शादी थी; उनकी पहली पत्नी की मृत्यु उनके इकलौती बच्ची के जन्म के दौरान हुई थी. इला से छह साल पहले एक बेटी रुद्र पैदा हुई थी. रुद्र अपनी नानी के साथ अहमदाबाद में रहने चली गई. (भारत में एक मातृहीन बच्चे को अक्सर नाना-नानी द्वारा पाला जाता है). सुमंत ने इला की मां वनलीला से परिवार द्वारा तय की गई शादी की, यानि माता-पिता ने उन्हें एक-दूसरे के लिए चुना था. भारतीय लोगों में आज भी शादी करने का यह एक सामान्य तरीका है.

वनलीला की सीखने में बहुत दिलचस्पी थी, लेकिन उनके माता-पिता ने उनका कम उम्र में ही स्कूल छुड़वा दिया था. उस समय यदि किसी लड़की को स्कूल भेजा भी जाता था तो वो लंबे समय तक स्कूल में नहीं पढ़ती थी. वनलीला के तीन भाई थे जिन्होंने स्कूल जाना जारी रखा था. माता-पिता ने अपने बेटों की अतिरिक्त मदद के लिए घर पर एक ट्यूटर भी रखा था.

वनलीला अपने भाइयों के साथ कमरे में बैठ जाती थी ताकि वो भी सीख सके. जैसा कि उस समय भारत में प्रथा थी, वनलीला की शादी पंद्रह साल की उम्र में कर दी गई. उस समय उनके पति सुमंत पच्चीस वर्ष के थे.

सुमंत ने देखा कि वनलीला सीखने के लिए बहुत उत्सुक थी, इसलिए उन्होंने उसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया. सूरत में वयस्क महिलाओं के लिए एक नया हाई स्कूल और कॉलेज खुला था. वनलीला ने इला और उसकी छोटी बहन रूपा (इला से छह साल छोटी) की परवरिश करते हुए, पढ़ाई की और हाई स्कूल डिप्लोमा और एक कॉलेज डिग्री प्राप्त की.

इला के माता-पिता संपन्न थे. वे उच्च शिक्षित परिवारों से आते थे और वे हिंदू समाज में सबसे ऊंची जाति-ब्राह्मण जाति के थे. वे नागर उप-जाति के ब्राह्मण थे जिन्हें बहुत ही सुरुचिपूर्ण, और परिष्कृत माना जाता था.

"मेरे माता-पिता प्यार करते थे लेकिन वे सख्त भी थे," इला ने याद किया. वे स्वस्थ, उज्ज्वल, संस्कारी बेटियों की परवरिश करना चाहते थे. इसलिए इला और उसकी बहन हर सुबह 5:30 बजे उठती थीं और कुछ व्यायाम करती थीं, जैसे ब्लॉक के आसपास दौड़ना. कठिन अध्ययन और वृद्ध लोगों का सम्मान करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था, और वे नागर ब्राह्मणों की सुसंस्कृत, परिष्कृत शैली में ही बोलती थीं.

इला एक शर्मीली, डरपोक बच्ची थी. वो अजनबी लोगों और नई स्थितियों से डरती थी. किसी प्रश्न का उत्तर जानते हुए भी वो कक्षा में हाथ उठाने से डरती थी. उसे खेल बेहद पसंद थे, और हर सर्दी में उसके स्कूल में खेल प्रतियोगिताएं आयोजित होती थीं - लेकिन इला खुद उनमें भाग लेने से डरती थी. जब वो लगभग नौ वर्ष की थी, तब एक प्रतियोगिता हुई, जिसमें वो सच में भाग लेना चाहती थी.



पांच साल की उम्र में, इला ने इस औपचारिक फोटो के लिए एक साड़ी पहनी.

भारत के बारे में कुछ तथ्य

भारत दक्षिण एशिया, अफ्रीका के पूर्व और चीन के पश्चिम में स्थित है. इसका क्षेत्रफल लगभग 10-लाख वर्ग मील है - जो अमेरिका के आकार का लगभग एक-तिहाई है. लेकिन भारत में, चीन को छोड़कर दुनिया में सबसे अधिक लोग हैं - लगभग एक सौ करोड़ लोग. इसके विपरीत, अमेरिका में लगभग 30-करोड़ लोग हैं.

भारत का आकार एक पतंग की तरह है. पतंग के उत्तरी सिरे पर हिमालय पर्वत है, जो दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत हैं. दक्षिणी सिरे को "कन्याकुमारी" कहा जाता है, जहाँ पानी के तीन पिंड अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी आपस में मिलते हैं. भारत, दुनिया की सबसे प्रसिद्ध नदियों में से एक गंगा, का भी घर है. हिंदू मान्यता के अनुसार गंगा एक पवित्र नदी है जो धरती पर उतरने से पहले स्वर्ग में बहती थी.

हालाँकि भारत में दुनिया के कुछ सबसे अधिक भीड़-भाड़ वाले शहर शामिल हैं, लेकिन 70 प्रतिशत भारतीय लोग अभी भी ग्रामीण इलाकों में ही रहते हैं, जहाँ इतनी भीड़ नहीं होती है. गांवों में लोग खेती करके या मवेशी या अन्य जानवरों को पालकर अपना जीवन यापन करते हैं. भारत में चावल और गेहूं कपास, चाय, कॉफी, नारियल, दाल, और सभी प्रकार के फल और सब्जियां पैदा होती हैं. भारतीय किसान, भारत में पूरी आबादी को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन उगाते हैं, साथ ही वे अन्य देशों को अपना अनाज बेचते भी हैं. हालांकि, लगभग 40 प्रतिशत भारतीयों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं होता है क्योंकि गरीबी के कारण वो खुद भोजन खरीद नहीं पाते हैं.

भारतीय, स्टील और कपड़े का उत्पादन करते हैं. भारतीय रेशम की साड़ियाँ और अपने शिल्प कौशल के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं. भारतीय फैक्ट्रियां लोगों के इस्तेमाल के लिए जरूरी चीज़ें जैसे कार, रेफ्रिजरेटर, साइकिल, बर्तन, साबुन और कंप्यूटर आदि बनाती हैं.



इला ने साड़ी पहनी है और वो अपने माता-पिता के बीच खड़ी है, उसका हाथ छोटी बहन रूपा के कंधे पर है. दोनों लड़कियों को शिक्षित, अनुशासित और स्वतंत्र होने के लिए पाला गया था.

प्रतियोगिता में कूदना था और अपने सिर से लगभग दस इंच ऊपर एक तार से लटके केले को, दांत से काटना था. इला जानती थी कि वो ऐसा कर सकती थी लेकिन वो खुद उसमें भाग लेने से शर्मा रही थी. पर अगले साल एक शिक्षक ने केले वाली प्रतियोगिता में उसका नाम जोड़ दिया और फिर इला ने उसमें जीत हासिल की.

उसके शर्मीलेपन का एक कारण यह भी था कि वो अपने माता-पिता से थोड़ा-बहुत विस्मय में थी. उसके माता-पिता सम्मानित और अपने समुदाय के प्रमुख सदस्य थे, और इला कभी-कभी उन पर अत्यधिक ध्यान दिए जाने से अभिभूत महसूस करती थी. दूसरा कारण यह था कि वो पहली कक्षा से सीधे तीसरी में चली गई थी और इसलिए वो अपनी कक्षा में सबसे छोटी थी. और तीसरा कारण यह था कि वो हकलाती थी, और उसे बात करने में शर्म आती थी. इस वजह से, इला को अपने लिए खड़े होने में मुश्किल होती थी. लेकिन उसके हकलाने और उसके शर्मीलेपन ने उसे अन्य लोगों के प्रति दयालु और संवेदनशील बनाया था जो उसके जैसे ही शक्तिहीन महसूस करते थे.

भारत ब्रिटिश उपनिवेश कैसे बना?

भारत आधिकारिक तौर पर 1858 में एक ब्रिटिश उपनिवेश बन गया लेकिन ब्रिटिश और अन्य यूरोपीय, भारत में बहुत लंबे समय से व्यापार कर रहे थे. यूरोपीय लोग, सोलहवीं शताब्दी में भारतीय मसालों जैसे कि दालचीनी, अदरक, लौंग और काली मिर्च के साथ-साथ भारतीय सूती कपड़े खरीदने के लिए भारत आए थे. उस समय भारत एक एकीकृत देश नहीं था बल्कि कई राज्यों से मिलकर बना था.

धीरे-धीरे अंग्रेज भारत के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारी बन गए, उन्होंने भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटों पर अपनी फैक्ट्रियां बना लीं. इन व्यापारियों ने भारतीय भूमि पर कब्जा करने के लिए भारतीय शासकों के साथ युद्ध करते हुए भारत के बड़े हिस्से पर शासन करना शुरू कर दिया. 1858 में ब्रिटिश सरकार ने भारत पर अधिकार करने और एक उपनिवेश के रूप में शासन करने का निर्णय लिया. 1858 में इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया भारत की "महारानी" बन गईं.

इंडिगो (नील), सूती कपड़े, चाय और कॉफी जैसी भारतीय वस्तुओं को छीनकर ब्रिटेन समृद्ध हुआ और भारतीय लोगों को ब्रिटिश सामान खरीदने के लिए मजबूर किया गया. जिन भारतीयों ने इस व्यवहार का विरोध किया उन्हें ब्रिटिश लोगों ने जेल में डाल दिया और कभी-कभी उन्हें मार भी डाला.

इला के बचपन में पूरा देश अंग्रेज़ों के खिलाफ अपनी शक्तिहीनता पर काबू पाने के लिए संघर्ष कर रहा था. भारत, ग्रेट ब्रिटेन का उपनिवेश था. भारतीय लोगों की खुद अपनी सरकार नहीं थी, बल्कि वो ब्रिटिश सरकार द्वारा नियंत्रित थी. भारतीय लोगों ने अपने लिए खड़े होने का फैसला किया. वे नहीं चाहते थे कि कोई दूसरा देश उन्हें बताए कि उन्हें कैसे जीना है. वे ब्रिटिश सरकार से स्वतंत्रता चाहते थे.

इला के कुछ रिश्तेदारों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, मोर्चे निकाले, नेतृत्व किया और भाषण दिए. इला उनसे प्रेरित और प्रभावित थी. इला के जन्म से कुछ ही वर्ष पूर्व उसके दादा, मणिधरप्रसाद व्यास ने "नमक आंदोलन" के दौरान अहमदाबाद छोड़ने वाले लोगों के पहले जत्थे का नेतृत्व किया था. नमक पर ब्रिटिश सरकार के उच्च टैक्स लगाया और भारतीयों द्वारा नमक बनाने पर प्रतिबंध लगाया. उसका विरोध करने के लिए हजारों लोगों ने 240 मील की एक यात्रा में भाग लिया.



इस घुड़सवार पुलिसकर्मी, ब्रिटिश सैनिक ने भारतीय प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर वार किया जो 1930 के दशक की शुरुआत में एक सरकारी नमक भंडार पर छापा मारने के लिए आंदोलन कर रहे थे. हालांकि प्रदर्शनकारियों ने अहिंसा का संकल्प लिया था पर अक्सर उन्हें बुरी तरह पीटा जाता था.

इला के दादाजी अपने समूह को तट तक ले गए, जहां उन्होंने और हजारों अन्य लोगों ने, वहां समुद्र तट पर पड़े समुद्री नमक को इकट्ठा किया. इस प्रकार उन्होंने नमक बनाने के ब्रिटिश कानून को तोड़ा. फिर उन्होंने "धरसाना साल्ट वर्क्स" पर छापा मारने के लिए अपने समूह का नेतृत्व किया, जहां उन्हें और अन्य लोगों को ब्रिटिश पुलिस ने बुरी तरह पीटा. इला के दादाजी ने अपने लोगों को वापस वार के लिए नहीं बल्कि "अहिंसक" होने के लिए प्रोत्साहित किया, जैसा कि स्वतंत्रता आंदोलन के नेता महात्मा गांधी ने सिखाया था. एक बच्ची के रूप में, इला ने नमक मार्च में अपने दादाजी की भागीदारी की कहानी सुनी और उनकी बहादुरी और बलिदान की प्रशंसा की.

जब इला नौ साल की थी, तब उसके दादा और उसके चाचाओं ने विरोध प्रदर्शन में भाग लिया और उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया. उस समय—1942 में—गांधी ने अपना अंतिम विरोध अभियान, "भारत छोड़ो" आंदोलन शुरू किया था. उन्होंने मांग की कि ब्रिटिश सरकार बिना किसी बातचीत या देरी के तुरंत भारत छोड़ दे. इला के चाचा और दादा ने रैलियों में मार्च किया और सभाओं में भाषण दिए. इन गतिविधियों के लिए उन्हें गिरफ्तार किया गया और लगभग आठ महीने की जेल हुई.

महात्मा गांधी कौन थे?

महात्मा गांधी (1869-1948) भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे वह "अहिंसक असहयोग" की अपनी नीति के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं. उन्होंने अंग्रेजों को युद्ध के बिना भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया. महात्मा उनका पहला नाम नहीं था; वो एक शीर्षक था जिसका अर्थ था "महान" आदमी. उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था.

गांधी, भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करना चाहते थे. इस तरह की परिस्थितियों में, अन्य देश युद्ध का सहारा लेते हैं. उदाहरण के लिए, अमेरिकी क्रांति, ब्रिटिश शासन से मुक्त करने के लिए लड़ी गई थी. लेकिन गांधी, युद्ध या हिंसा में विश्वास नहीं करते थे. उनका परिवार अहिंसा में विश्वास करता था, किसी भी जीवित वस्तु को नुकसान न पहुंचाने की नीति में. गांधी, भारतीय लोगों के लिए गरिमा और स्वतंत्रता चाहते थे. लेकिन स्वतंत्रता, युद्ध या हिंसा के बिना कैसे हासिल की जा सकती थी?

1919 में, गांधी ने फैसला किया कि अहिंसक असहयोग उसका उत्तर था. भारतीय लोगों को ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग करने से इंकार कर दिया. इसका मतलब ब्रिटिश उत्पादों को नहीं खरीदना, ब्रिटिश स्कूलों या कॉलेजों में नहीं पढ़ना, ब्रिटिश मालिकों के लिए काम नहीं करना, ब्रिटिश पुरस्कार और सम्मान स्वीकार नहीं करना और अन्यायपूर्ण ब्रिटिश कानूनों का पालन नहीं करना था. गांधी ने अपने साथी भारतीयों को प्रेरित और संगठित करते हुए पूरे भारत की यात्रा की. उन्होंने लोगों से हिंसा का सहारा न लेने से मना किया - तब भी नहीं जब ब्रिटिश पुलिस ने, भारतीय लोगों को पीटा या उन्हें जेल में डाला.

गांधी और उनके अनुयायियों ने हड़तालें आयोजित कीं, जिसके दौरान हर कोई - छात्र और कार्यकर्ता - बस दिन भर घर पर ही रहे और उन्होंने ब्रिटिश सामान और दुकानों का बहिष्कार किया. सबसे प्रसिद्ध कार्यों में से एक 1930 में "नमक आंदोलन" था. ऐसे अवसरों पर जब कभी हिंसा भड़कती थी, तब गांधी कभी-कभी उपवास की घोषणा करते थे: जब तक हिंसा समाप्त नहीं हो जाती थी, तब तक वो भोजन नहीं करते थे. क्योंकि गांधी भारत में इतने लोकप्रिय थे इसलिए लोग उनके उपवास के कारण अपनी लड़ाईयां बंद कर देते थे. असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप, ब्रिटेन के लिए भारत पर शासन करना बहुत मुश्किल हो गया, और भारत ने अंततः अपनी स्वतंत्रता जीती. न्याय और अहिंसा के प्रति गांधी के समर्पण ने न केवल भारतीय लोगों को प्रेरित किया, बल्कि दुनिया के कई अन्य नेताओं को भी प्रेरित किया जैसे - बर्मा में औंग सान सू की, और डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर, जो अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन में सक्रिय थे.



1930 के दशक की शुरुआत में, गांधी के कई लाख अनुयायिओं ने मुंबई में प्रदर्शन किया.

इला के एक चाचा को एक सरकारी स्कूल में भारतीय झंडा फहराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 60,000 भारतीयों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल में डाला गया था.

जब इला के दादा और चाचा जेल में थे, तब घर की महिलाओं - इला की दादी, मौसी को - घर का काम खुद ही चलाना पड़ता था. उन्हें अपने पैसे का इस्तेमाल बड़ी सावधानी से करना पड़ता था क्योंकि पैसे कमाने वाले लोग जेल में थे. इला ने भारत की आज़ादी के लिए अपनी सुख-सुविधाओं को त्यागने में अपने परिवार के साहस की प्रशंसा की.

हालांकि इला की दादी और मौसी जैसी महिलाओं ने खुद को मजबूत और साधन संपन्न साबित किया, लेकिन भारत में ज्यादातर महिलाओं को, पुरुषों के समान अवसर नहीं उपलब्ध थे. इला के बचपन में, कई भारतीय परिवार, लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक नहीं मानते थे, इसलिए अधिकांश लड़कियां अनपढ़ ही रहती थीं. साथ ही, अधिकांश लड़कियों की शादी, वृद्ध पुरुषों से कर दी जाती थी जिन्हें वे नहीं जानती थीं. उन्हें अपने पति के परिवारों के साथ रहने और अक्सर सबसे कठिन, अप्रिय काम करने के लिए मजबूर किया जाता था. और अगर उनका पति मर जाता, तो एक विधवा के रूप में उनका जीवन और भी बुरा होता था: कई परिवारों में विधवाओं को फिर से शादी करने, आभूषण या रंगीन कपड़े पहनने, या त्योहारों में शामिल होने की अनुमति नहीं थी; सामान्य तौर पर, वे अपने घरों की चारदीवारी तक ही सीमित रहती थीं.

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी इस स्थिति को बदलने की कोशिश कर रहे थे. क्योंकि गांधी, महिला और पुरुष को समान मानते थे, उन्होंने विधवाओं के लिए पुनर्विवाह और लड़की-लड़कों दोनों की शिक्षा को बढ़ावा दिया. उन्होंने पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया. वास्तव में, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कुछ सबसे प्रमुख नेता महिलाएं थीं, जैसे सरोजिनी नायडू, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष थीं.

इला के माता-पिता भी लड़कियों की शिक्षा के महत्व को मानते थे. इला के पिता लड़कियों को अशिक्षित और अनपढ़ रखने की भारतीय परंपरा में विश्वास नहीं करते थे. इसके बजाय, उन्हें प्रगतिशील और शिक्षा के आधुनिक विचार पसंद थे.

जब इला के रिश्तेदार स्वतंत्रता आंदोलन में भाग ले रहे थे, तब इला पढ़ाई में व्यस्त थी. वो अपने दोस्तों के साथ खेलती थी और किताबें पढ़ती थी. इला की पसंदीदा गतिविधियों में से एक था - घर की छत पर खेलना. उनका एक तीन मंजिला घर था, जो उस इलाके का सबसे ऊंचा घर था, और प्रत्येक मंज़िल पर एक छत थी. गर्मी के दिनों में इला का परिवार बाहर छतों पर सोता था.

स्कूल के बाद, जब वो पढ़ नहीं रही होती या दोस्तों के साथ खेल नहीं रही होती थी, तब इला को पेंट करना पसंद था. यहां इला एक नई लैंडस्केप पेंटिंग पर काम कर रही है.



इला को याद है कि वो सबसे निचली छत पर घंटों संस्कृत व्याकरण को याद करते हुए बिताती थी. वो छतों पर अपने दोस्तों का मनोरंजन करती थी, उनके साथ ताश और लुका-छिपी खेलती थी.

इला की माँ ने उसे छत पर पतंग उड़ाना सिखाया. पूरे गुजरात राज्य में पतंगबाजी एक लोकप्रिय खेल है. मकर-संक्रांति त्योहार के दौरान, राज्य भर में पतंगबाजी की प्रतियोगिता आयोजित होती है, और अहमदाबाद में एक अंतरराष्ट्रीय पतंग प्रतियोगिता आयोजित होती है. इला की मां पतंगबाजी में अपने कौशल के लिए प्रसिद्ध थीं. जब अन्य महिलायें वनलीला को छत पर पतंग उड़ाते हुए देखतीं, तो वे भी अपनी छतों पर पतंगें देखने और उड़ाने के लिए निकलतीं थीं.

परिवार घर में गुजराती बोलता था, लेकिन इला अंग्रेजी भी जानती थी. भारत के विभिन्न हिस्सों में सैकड़ों अलग-अलग भाषाएँ हैं, जिनमें गुजराती सहित अठारह आधिकारिक भाषाएँ हैं जो भारतीय स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं. लेकिन इसके अलावा, पूरे भारत में पढ़े-लिखे लोग अंग्रेजी का इस्तेमाल करते हैं. इला ने अंग्रेजी और गुजराती दोनों को व्यापक रूप से पढ़ा. उनकी पसंदीदा किताबों में से एक भारतीय नेताओं के बारे में थी. इस पुस्तक पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था, क्योंकि वो नहीं चाहती थी कि भारतीय लोग उन भारतीय नेताओं के बारे में जानें, जिन्होंने अपने देश की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी थी. वो किताब इला के घर में पूजा कक्ष में छिपा कर रखी गई थी. इला ने उस किताब में झांसी की रानी जैसे प्रसिद्ध भारतीय नेताओं के बारे में भी पढ़ा.

झांसी की रानी ने उन्नीसवीं शताब्दी में मध्य भारतीय राज्य झांसी पर शासन किया था. जब ब्रिटिश सरकार भारतीय राज्यों की ज़मीन पर कब्ज़ा कर रही थी, तब झांसी की रानी ने अपनी जमीन सुरक्षित रखने की लड़ाई लड़ी लेकिन वो उसमें असफल रहीं.



पतंगबाजी प्रतियोगिता से पहले, एक आदमी अपनी पतंग को उड़ाने का अभ्यास करता है.

भारतीय शहरों की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर स्कूटर या साइकिल पर घूमना कार की तुलना में अक्सर आसान होता है. ये बच्चे सुबह स्कूल जाने के लिए बस के बजाय तीन पहियों वाली साइकिल रिक्शा पर सवारी करते हैं.



जब अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह छिड़ा, तो रानी ने घोषणा की कि वो अपनी जमीन वापस लेगी. उन्होंने झांसी के किले से और बाद में घोड़े पर सवार होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी. रानी ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया. लेकिन आखिरकार उन्हें मार डाला गया. वो युद्ध में अंग्रेजों का सामना करने वाली शायद एकमात्र महिला थीं.

15 अगस्त 1947 को, जब इला लगभग चौदह वर्ष की थी, तब भारत ने अंततः स्वतंत्रता प्राप्त की. वो एक खुशी का दिन था, क्योंकि अब भारतीय लोग अपना देश खुद चला सकते थे. लेकिन वो एक दुखद दिन भी था, क्योंकि आजादी के बाद, भारत दो देशों - भारत और पाकिस्तान में विभाजित हो गया. भारत में ज्यादातर हिंदू लोग थे, और पाकिस्तान के ज्यादातर मुस्लिम लोग थे, और कई लोगों का यह मानना था कि दोनों धर्मों को एक देश साझा नहीं करना चाहिए. लेकिन क्योंकि पाकिस्तान में बहुत से हिंदू रहते थे, और बहुत से मुसलमान भारत में रहते थे, स्वतंत्रता के दिन बड़े पैमाने पर लोगों का पलायन हुआ.

पाकिस्तान के हिंदुओं ने अपना घर और जमीन और अपना अधिकांश सामान छोड़ दिया और भारत की यात्रा की, और भारत के मुसलमान, पाकिस्तान चले गए. रास्ते में कुछ लोगों ने, दूसरे धर्म के लोगों को मार डाला. यह नए राष्ट्रों के लिए एक दुखद शुरुआत थी.

इला को स्वतंत्रता दिवस स्पष्ट रूप से याद था. उसने हरे बटन वाली एक सफेद पोशाक और एक नारंगी रंग की बेल्ट—नए भारतीय ध्वज के समान रंगों के कपड़े पहने थे. उसके स्कूल में मिठाइयाँ बांटी गईं, और छात्रों ने राष्ट्रीय गीत गाया. इला ने "वंदे मातरम" नामक एक गीत के कोरस का नेतृत्व किया, जो उस समय का राष्ट्रगान था. अब राष्ट्रगान "जन गण मन" नामक गीत है.

हालाँकि इला के पिता चाहते थे कि इला शिक्षित हो, लेकिन वो इला को कॉलेज भेजना नहीं चाहते थे. उन्हें लगता थे कि इला कॉलेज में बुरे प्रभावों के संपर्क में आ सकती थी. लेकिन उसकी माँ को खुद को शिक्षित करने का अपना संघर्ष याद था इसलिए उन्होंने जोर देकर कहा कि इला ज़रूर कॉलेज जाएगी.

चौदह साल की उम्र में, इला ने दसवीं कक्षा पास की. फिर वो अन्य युवतियों और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कॉलेज गई. वो अपने नए स्वतंत्र देश के पुनर्निर्माण में मदद करना चाहती थी.

अध्याय 3

एक युवा आदर्शवादी

इला ने 1948 में सूरत के मगनलाल ठाकोरदास बृजभूषणदास (एमटीबी) कॉलेज में पढ़ना शुरू किया और अपने पिता के अंग्रेजी साहित्य के प्यार से प्रभावित होकर उसने अंग्रेजी साहित्य पढ़ने का फैसला किया. वो अपने पिता, दादा और चाचाओं की तरह एक वकील बनना चाहती थी, और अंग्रेजी, कानून के अध्ययन के लिए एक अच्छा विषय था.

इस दौरान नई भारत सरकार बनाई जा रही थी. भारत की कई आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान पर चर्चा चल रही थी. नए भारत के नेताओं के सामने एक बहुत बड़ा काम था. भारत को कई बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था. उदाहरण के लिए, अधिकांश भारतीय गरीब और अशिक्षित थे. जाति व्यवस्था के सख्त सामाजिक नियमों के कारण कई भारतीय अपने जीवन में सुधार नहीं कर पाए थे. उस समय भारत अपने सभी लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन का उत्पादन करने में भी सक्षम नहीं था.

पढ़ाई के दौरान इला की देश की योजनाओं में अत्यधिक दिलचस्पी जगी. क्या भारत को बड़ी फैक्ट्रियों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि भारतीय लोगों के लिए कई आवश्यक चीज़ों का उत्पादन किया जा सके, जिन्हें वे अभी दूसरे देशों से खरीद रहे थे? या फिर भारत को गरीब ग्रामीण लोगों के कौशल और छोटे व्यवसायों को विकसित करने में मदद करने पर ध्यान देना चाहिए? "निम्न" जातियों के लोगों की मदद के लिए क्या किया जाना चाहिए जो अक्सर गरीब, अशिक्षित और भेदभाव से पीड़ित थे?

भारत सरकार को वास्तव में किस प्रकार संरचित किया जाना चाहिए? क्या राष्ट्रीय सरकार को, या स्थानीय ग्राम सरकारों को अधिकांश शक्ति देनी चाहिए? यह कुछ ऐसे विषय थे जिन पर गांधी और प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू सहित भारत के अन्य नेता चर्चा कर रहे थे.

जाति क्या है?

हिन्दुओं ने पारंपरिक रूप से खुद को समूहों, या जातियों में विभाजित किया था. मूल रूप से, जाति उस प्रकार के काम पर आधारित थी जो कोई परिवार करता था. चार मुख्य जातियाँ हैं: ब्राहमण (पुजारी), क्षत्रिय (योद्धा), वैश्य (व्यापारी), और शूद्र (मजदूर). इसके अलावा, एक पाँचवाँ "जातिविहीन" समूह है, जो ऐसे लोगों का बना था, जो शौचालयों की सफाई, जानवरों की लाशों को उठाने और जलाने जैसे अवांछनीय कार्य करते थे, उन्हें "अछूत" कहा जाता था. महात्मा गांधी ने अछूतों का नाम बदलकर हरिजन, या "भगवान के बच्चे" कर दिया.

यद्यपि ये सभी प्रकार के कार्य, समाज के लिए समान रूप से उपयोगी थे, एक पदानुक्रम विकसित हुआ: ब्राहमण तथाकथित "उच्चतम" जाति थे, अन्य जातियां क्रम में उनके नीचे थीं. उदाहरण के लिए, उच्च जाति के लोग नीची जाति के लोगों को नीची दृष्टि से देखते थे और उनके साथ भेदभाव करते थे, निचली जाति के लोगों को उच्च-भुगतान वाले या अधिक प्रतिष्ठित व्यवसायों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी. और उच्च जाति के लोग कभी-कभी निचली जातियों के लोगों के साथ भोजन करने से भी मना कर देते थे. जाति वंशानुगत थी, प्रत्येक व्यक्ति एक जाति में पैदा होता था और वो अपनी जाति को बदल नहीं सकता था. प्रत्येक जाति, उप-जातियों में विभाजित थीं.

आज, भारत में कॉलेज में पढ़े-लिखे लोग अक्सर अपनी जाति के पेशे का पालन नहीं करते हैं. उदाहरण के लिए, कोई दुकानदार वैश्य या ब्राहमण हो सकता है. लेकिन गरीब, अशिक्षित लोग अक्सर अपनी जाति के जाल में फंसे रहते हैं, और समाज द्वारा उन्हें दुनिया में आगे बढ़ने से रोका जाता है. वैसे कई कॉलेज-शिक्षित लोग अभी भी जाति की परवाह करते हैं जब उनकी शादी की बात आती है, तो वे केवल अपनी ही जाति या यहां तक कि अपनी उप-जाति के किसी व्यक्ति से शादी करते हैं.

भारतीय संविधान जाति के आधार पर भेदभाव की अनुमति नहीं देता है. और सरकार निचली जातियों के सदस्यों के लिए कॉलेजों और पेशेवर स्कूलों में कुछ सीटों को आरक्षित करती है, ताकि उन्हें उनके साथ होने वाले भेदभाव को दूर करने में मदद मिल सके. लेकिन भारत में जाति-आधारित भेदभाव आज भी जारी है.

एक विषय जिस पर लगभग सभी भारतीय नेता सहमत थे, वो यह था कि भारत एक लोकतंत्र होगा, और सभी वयस्क भारतीय - महिला और पुरुष, अमीर और गरीब को, मतदान करने की अनुमति होगी. भारत एकमात्र पूर्व औपनिवेशिक देशों में से एक है जिसने लोकतंत्र के रूप में शुरुआत की और वर्षों तक लोकतंत्र बना रहा. मतदाताओं की संख्या के मामले में भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है.

इला और अन्य छात्र अपने नए स्वतंत्र देश के पुनर्निर्माण के लिए उत्साह से भरे हुए थे. छात्रों ने देश के भविष्य के लिए विचारों पर चर्चा करने के लिए एक "अध्ययन मंडल" का गठन किया, जैसे कि गांवों का विकास और श्रमिकों द्वारा उनके व्यवसायों पर स्वामित्व. गांधी और उनके अनुयायियों का मानना था कि भारत का दिल उसके ग्रामीण इलाकों में बसता था, इसलिए इला और उसके मित्रों की भारतीय गांवों के बारे में जानने में बहुत रुचि थी.

उनके शिक्षक भी आदर्शवादी थे. वे एक सादा जीवन में विश्वास रखते थे. उनका लक्ष्य बहुत सारा पैसा कमाना या बहुत सारी संपत्ति जुटाना नहीं था. इसके बजाय, वे कड़ी मेहनत करने, दूसरों की मदद करने और सादा, स्वस्थ भोजन खाने में विश्वास करते थे. वे हाथ से काते हुए, हाथ से बुने हुए भारतीय सूती कपड़े पहनते थे, जिन्हें खादी कहा जाता है.

पहले इला खादी नहीं पहनती थी, लेकिन उसके शिक्षकों ने उसे और अधिक सरलता से जीने के लिए प्रेरित किया. फिर उसने छह महीने की कॉलेज की अवधि में केवल तीन कपड़े पहनने का फैसला किया. गुजरात में उस समय युवतियां अठारह साल की उम्र तक पश्चिमी शैली के कपड़े पहनती थीं, पर अब उन्होंने भी भारतीय साड़ी पहनना शुरू कर दी थी. धीरे-धीरे इला ने भी खादी के कपड़े पहनना शुरू कर दिए, और वो प्रथा आज भी जारी है. उसकी माँ केवल तीन जोड़ी कपड़े खरीदनेऔर खादी पहनने के लिए इला से नाराज रहती थीं. उन्हें अपनी बेटियों को सुंदर कपड़ों में देखकर बहुत अच्छा लगता. पर उन्हें यह समझ में नहीं आया कि इला खुद को उनसे वंचित क्यों रहना चाहती थी जब परिवार अच्छी तरह से संपन्न था और वो बहुत सारे कपड़े खरीद सकता था.

खादी क्या है और वो क्यों महत्वपूर्ण है?

खादी हाथ काते, हाथ से बुने भारतीय कपास के लिए भारतीय शब्द है. आजादी के आंदोलन के दौरान, गांधी ने भारतीय लोगों को ब्रिटिश कपड़े का बहिष्कार करने का आवाहन दिया, और उन्हें अपने स्वयं के कपड़े कातने और बुनने के लिए प्रोत्साहित किया. खादी, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक बन गई. वास्तव में, भारतीय ध्वज पर नीला पहिया एक चरखा है.

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व संभालने से बहुत पहले, गांधी इस तथ्य से चिंतित थे कि इतने सारे भारतीय लोग क्यों गरीब थे और उनके पास काम क्यों नहीं था. उन्होंने महसूस किया कि कताई और बुनाई ऐसी उपयोगी गतिविधियाँ थीं जिन्हें लोग, विशेष रूप से महिलाएं, अपने घरों में पैसा कमाने के लिए कर सकती थीं. बाद में उन्होंने महसूस किया कि खादी द्वारा भारतीय लोग, ब्रिटिश कपड़े की आय से ब्रिटेन को वंचित कर सकते थे. इसके अलावा, खादी उन भारतीय लोगों के लिए एक प्रकार की वर्दी थी जो स्वतंत्रता में विश्वास करते थे - स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एकता महसूस करने का एक तरीका होगी.

जब उन्होंने साबरमती आश्रम को, स्वतंत्रता के लिए अपने अभियान का मुख्यालय बनाया, तो गांधी ने अपनी सलाह को अमल में लाने का फैसला किया. उन्होंने छोटे पोर्टेबल कताई चरखों और ऐसे पेशेवर लोगों को तैयार किया जो लोगों को कताई और बुनाई करना सिखा सकते थे. कपड़ा मिलों के मालिक इस बात से नाराज़ थे कि गांधी लोगों को अपना कपड़ा बुनने या घर पर बने कपड़े खरीदने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे. वे चाहते थे भारतीयों को केवल भारतीय स्वामित्व वाले कारखानों में बने कपड़े खरीदने चाहिए, लेकिन गांधी आत्मनिर्भरता में विश्वास करते थे. गाँधी ने महसूस किया कि भारतीय गरीब लोगों के लिए बेहतर होगा कि वे किसी और के स्वामित्व वाली फैक्ट्री की बजाय खुद अपने लिए काम करें.

आजादी के पूरे आंदोलन के दौरान, गांधी ने कपास को सूत बनाने के लिए प्रतिदिन आधा घंटा आरक्षित किया. उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान और जेल में भी कताई जारी रखी. चरखा कातते हुए गांधी की तस्वीरें स्वतंत्रता की तमन्ना रखने वाले प्रत्येक भारतीय के लिए एक प्रेरणा का स्रोत थीं.



1948 में, जब यह तस्वीर ली गई थी, तब गांधी 77 वर्ष के थे और दुनिया के सबसे शक्तिशाली नेताओं में से एक थे. वो एक परिचित मुद्रा में अपने चरखा के पास बैठे थे, साधारण खादी पहने थे और चुपचाप कुछ कागज़ों का अध्ययन कर रहे थे.



1952 में इला स्कूटर पर.

इला और कॉलेज की अन्य युवतियाँ अपनी पसंद की कोई भी चीज़ पढ़ सकती थीं, लेकिन उनका सामाजिक जीवन कॉलेज के नियमों और परंपराओं से सीमित था. महिलाएं आमतौर पर खेल मंडप या कैंटीन में नहीं जाती थीं. प्रोफेसर के आने तक महिलाओं को कक्षा के बाहर इंतजार करना पड़ता था. युवतियाँ, प्रोफेसर के साथ क्लास में दाखिल होती थीं और आगे की पंक्ति में ही बैठती थीं. महिलाएं आमतौर पर कॉलेज परिसर में केवल अन्य महिलाओं के समूहों में ही घूमती थीं. इसके विपरीत, लड़के परिसर में कहीं भी जा सकते थे. लड़के कक्षा शुरू होने से पहले कभी भी कक्षा में प्रवेश कर सकते थे और जहाँ चाहें वहां बैठ सकते थे. उस समय इला को महिलाओं पर ये प्रतिबंध अनुचित नहीं लगते थे. वो इस विचार को मानती थी कि "अच्छी लड़कियों" को इन नियमों का पालन करना चाहिए.

महिलाओं और पुरुषों को अलग रखने की इन परंपराओं के बावजूद, इला ने वही किया जो उसके माता-पिता नहीं चाहते थे कि वो करे: उसकी रमेश भट्ट नाम के एक युवक के साथ घनिष्ठ मित्रता हो गई. रमेश युवा कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की युवा शाखा) का एक नेता था. इला उसके सुन्दर चेहरे, उसके भावुक आदर्शवाद और देश के लिए काम करने की उसकी इच्छा से आकर्षित थी. वे एक ही अध्ययन मंडली में थे, और वे वहां सीखे गए विचारों पर अक्सर चर्चा करते थे, और पढ़ने के लिए पुस्तकों का आदान-प्रदान करते थे. जैसे ही इला से उसकी दोस्ती हुई, उसने महसूस किया कि रमेश ने उसे इतना सहज महसूस कराया था कि वो उससे बात करते समय कभी हकलाती नहीं थी. वे एक-दूसरे से कॉलेज में ही मिलते थे. वे साथ-साथ अपनी साइकिल पर घर वापिस जाते थे, क्योंकि दोनों के घर आसपास थे.



इला भले ही शर्मीली रही हो, लेकिन कड़ी मेहनत से उसने शूटिंग और घुड़सवारी जैसे उत्साही खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया.

इला की रमेश के साथ दोस्ती उस समय किसी महिला के लिए असामान्य थी. वास्तव में तब स्त्री और पुरुष का मित्र होना अनैतिक माना जाता था. इला को इस दोस्ती के बारे में उलझन महसूस हुई. वो जानती थी कि माता-पिता या समाज उसकी स्वीकृति नहीं देगा. फिर भी उसने रमेश की कंपनी का भरपूर आनंद लिया.

जब इला ने कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल की तो उसने और रमेश ने शादी करने का फैसला किया. लेकिन उसके माता-पिता ने शादी का विरोध किया, क्योंकि भले ही रमेश और इला दोनों ब्राह्मण थे, पर रमेश का परिवार आर्थिक रूप से संपन्न नहीं था. रमेश के पिता एक कपड़ा मजदूर थे. रमेश की माँ की मृत्यु तब हुई जब वो बहुत छोटा था. जब उसके पिता को नौकरी से निकाला गया, तो रमेश ने अन्य छात्रों को पढ़ाकर अपने परिवार की आर्थिक मदद की. इससे भी बुरी बात यह थी कि रमेश की एक आकर्षक करियर बनाने में कोई रूचि नहीं थी. वो एक गांव में रहकर गरीबों की मदद करना चाहता था. लेकिन इला का परिवार रमेश की मेहनत और उसके आदर्शवाद से प्रभावित नहीं था. वे चाहते थे कि इला किसी अमीर और परिष्कृत व्यक्ति से शादी करे ताकि वो एक आरामदायक जीवन का आनंद ले सके.

इला बहुत परेशान थी. वो अपने माता-पिता को नाराज नहीं करना चाहती थी, लेकिन वो रमेश के साथ अपना जीवन बिताना चाहती थी. फिर उसने और रमेश ने तब तक इंतजार करने का फैसला किया जब तक कि इला के माता-पिता उन्हें शादी की अनुमति नहीं देते.

इला और रमेश दोनों सूरत के एक ही लॉ स्कूल, सार्वजनिक लॉ कॉलेज में पढ़ने की योजना बना रहे थे. इला के पिता उसके लिए राज़ी हो गए थे और अब वो चाहते थे कि उनकी बेटी उनकी ही तरह एक वकील बने. इला का सौभाग्य था कि भारत में लॉ स्कूल, महिला छात्रों को दाखिला देते थे. (इसके विपरीत, अमेरिका में 1950 और 1960 के दशक में, अधिकांश लॉ स्कूल महिला छात्रों को प्रवेश नहीं देते थे.)

इला एक वकील बनना चाहती थी ताकि वह गरीब लोगों को उनके कानूनी मामलों में मदद कर सकें - खासकर किसान और बेक़सूर लोगों की जिन्हें बिना किसी अपराध या आरोप के जेल में डाल दिया गया था. वो कॉलेज में अध्ययन मंडलियों के माध्यम से और रमेश की मदद से गरीब लोगों के लिए काम करने के लिए प्रेरित हुई थी. उस समय, उसे विशेष रूप से महिलाओं के साथ काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी: उसकी वो रुचि बाद में विकसित हुई.

इला को गरीब लोगों की मदद करने के लिए तब प्रेरणा मिली जब कॉलेज के अपने अंतिम वर्ष में, उसने देश की पहली आम जनगणना के लिए एक सर्वेक्षण टीम के साथ काम किया. जब वो गरीब इलाकों में गई तो उसने वहां के परिवारों के बारे में जानकारी जुटाई. उसने जो कुछ देखा उससे इला हैरान रह गई. उसने पहली बार इतनी गरीबी देखी थी. लोग अशिक्षित थे और छोटी-छोटी झोंपड़ियों में रहते थे जो शायद उनके बिस्तर जितनी ही बड़ी थीं. झोपड़ियों में कोई रसोई, स्नानघर या खिड़कियां नहीं थीं. शौचालय के लिए लोगों को गली या कभी-कभी गंदी सार्वजनिक सुविधाओं का उपयोग करना पड़ता था.

नतीजतन, उनकी झोपड़ियां खुले गटर से घिरी हुई थीं और वहां हर समय मैला बहता रहता था. इला ने बच्चों को अस्वस्थता और भोजन की कमी से पीड़ित देखा - ऐसे बच्चे जिनके पैर सीधे नहीं बल्कि टेढ़े-मेढ़े थे, जिनकी आँखें बेसुध थीं, जिनमें बहुत कम ऊर्जा थी. इला ने जो देखा उससे वो इतनी परेशान हुई कि उसने फैसला किया कि वो अपना जीवन गरीब लोगों की मदद करने के लिए समर्पित करेगी.

लेकिन इला, जिसे पर्याप्त भोजन, आलीशान घर और पैसों की कोई कमी नहीं थी, गरीब लोगों को भला कैसे समझ सकती थी? वो, जिसने खुद कभी गरीबी या भूख का अनुभव नहीं किया हो, वो भला कैसे गरीबों की मदद कर सकती थी? गरीबों के साथ रिश्ता जोड़ने से चिंतित होकर उसने फैसला लिया, कि एक साल के लिए, वो एक गरीब व्यक्ति की ज़िंदगी जिएगी. वो पास के एक गाँव में चली गई और उसने वहां एक खेतिहर मजदूर के रूप में काम करना शुरू कर दिया. उसने जमीन की निराई और जुताई की. उसने अपना सारा खाना, कपड़ा और अन्य ज़रूरतें अपनी कमाई से ही खरीदीं. उसकी साठ रुपये प्रति माह से कम आमदनी होती थी, जो सरकार द्वारा निर्धारित "गरीबी रेखा" थी. उसके लिए वो एक कठिन साल था, लेकिन उस अनुभव ने गरीब लोगों की मदद करने के उसके दृढ़ संकल्प को और भी पुख्ता किया.

बाद के वर्षों में इला ने गरीबी में एक वर्ष जीने के बारे में खुद को शर्मिंदा महसूस किया. "वो एक धोखा था," उसने कहा. "लेकिन मेरे इरादे नेक थे," इला ने महसूस किया कि वो एक धोखा इसलिए था क्योंकि वो वास्तव में गरीब नहीं थी: वो स्वस्थ थी, उसकी कोई संतान नहीं थी, और वो जानती थी कि वो एक अस्थायी स्थिति थी. फिर भी, गरीबी में एक वर्ष बिताने से हमें इतना ज़रूर पता चलता है कि इला कम उम्र से ही गरीब लोगों की मदद करने के लिए कितनी गंभीर थी. वो गरीबों की जरूरतों और उनके जीवन को समझने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी.

इला और रमेश दोनों ने लॉ स्कूल में पढ़ाई शुरू की. केवल दो लड़कियां ही कानून की पढ़ाई कर रही थीं. इला और रमेश ने जितना संभव हुआ उतना समय एक साथ बिताया. इला, रमेश से शादी करने की अपनी इच्छा के बारे में दृढ़ थी, भले ही उसके माता-पिता उससे नाराज थे. इला अक्सर रमेश के घर जाती थी, और वे एक आपसी दोस्त के घर पर भी मिलते थे.

लॉ स्कूल के अपने प्रथम वर्ष के बाद, इला अपने माता-पिता के साथ भरूच नामक शहर में रहने चली गई, जहाँ इला के पिता एक न्यायाधीश थे. घर के बगल में तमाम खेल सुविधाओं वाला अधिकारियों का एक क्लब था, जिसमें एक शूटिंग रेंज भी शामिल थी, जहां इला ने लोगों को .22-कैलिबर राइफल से निशानेबाजी करते हुए देखा. हालाँकि उसकी शूटिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इला इस नए खेल का कौशल सीखना चाहती थी. और यद्यपि एक महिला के लिए राइफल-शूटिंग कक्षाएं लेना उस समय असामान्य था, लेकिन अब इला को वो करने में कोई शर्म नहीं थी.



इला एक स्कार्फ बांधे अपने लक्ष्य पर सावधानी से निशाना साधती है. अहमदाबाद में आयोजित सातवीं महा-गुजरात राइफल प्रतियोगिता में 150 से अधिक पुरुषों और महिलाओं ने भाग लिया.

इला को लगा कि उसमें खेलों की एक वास्तविक प्रतिभा थी: उसकी एकाग्रता उत्कृष्ट थी, और उसका लक्ष्य सटीक था. अगले कुछ वर्षों में, उसने राज्य प्रतियोगिताओं में प्रवेश किया और कई पदक और कप जीते, और यहां तक कि उसने एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी भाग लिया और अपने आयु वर्ग के लिए एक पदक जीता.

इला ने लॉ स्कूल से स्नातक की डिग्री ली. फिर वो कानून का अभ्यास करने के लिए तैयार थी. लेकिन उसके पिता अब अहमदाबाद के जिला और सत्र न्यायाधीश थे, इसलिए इला का अहमदाबाद जिले में वकील होना अवैध था. क्योंकि एक वकील जैसे, इला किसी दिन जज के रूप में अपने पिता के सामने कोई मामला पेश कर सकती थी, तब हो सकता था कि जज साहिब गलत तरीके से अपनी ही बच्ची का पक्ष लेते.

इला गरीब और वंचित लोगों की मदद करना चाहती थी. इसलिए, उसने भारत में सबसे पुराने और सबसे बड़े श्रमिक संघों में से एक, टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (TLA) में एक कानूनी सहायक के रूप में नौकरी स्वीकार कर ली. उसके माता-पिता इस बात से सहमत थे कि किसी को गरीब लोगों की मदद जरूर करना चाहिए, लेकिन वो काम उनकी बेटी ही क्यों करे वो उन्हें समझ नहीं आता था. वे नहीं चाहते थे कि इला इतने कम पैसे कमाए और वो शहर के गंदे इलाकों की यात्रा करे जहाँ गरीब लोग रहते थे. हालाँकि इला को अपने माता-पिता को निराश करना पसंद नहीं था, लेकिन वो अपने दिल का काम करना चाहती थी.

अध्याय 4

जीवन में आदर्श काम खोजना

जब इला अहमदाबाद चली गई और टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (TLA) के लिए कानूनी सहायक बन गई, तो उसे TLA के अध्यक्ष के रूप में एक अद्भुत रोल मॉडल मिला - अनुसूया साराभाई. अनुसूया, गरीब श्रमिकों को संगठित करने वाली और मज़दूरों को बेहतर वेतन और उपचार दिलाने में मदद करने वाले पहली भारतीय महिला थीं.

अनुसूया लगभग सत्तर साल की थीं जब इला ने TLA के लिए काम करना शुरू किया. पर अब वो यूनियन में सक्रिय नहीं थीं. इसलिए, इला TLA के कार्यालय में एकमात्र महिला वकील या उच्च-स्तरीय स्टाफ सदस्य थीं. वो अहमदाबाद की चंद महिला वकीलों में से एक थीं. वो जब भी किसी मुकदमे में TLA सदस्यों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अदालत में जाती थीं, तो उन्हें दूसरे पक्ष (आमतौर पर कपड़ा मिलों में से एक) का प्रतिनिधित्व करने वाले पुरुष वकील से मामले की बहस करनी पड़ती थी.

क्योंकि वो शर्मीली थीं, इला के लिए अदालत में बोलना मुश्किल होता था. इला ने अपने लंबे बालों का अपने सिर के पीछे एक बड़ा ज़ूड़ा बनाया था, और कभी-कभी दूसरे वकील यह कहकर उनका मज़ाक उड़ाते थे कि उनका ज़ूड़ा उनके सिर से बड़ा था. या फिर वे इला की साड़ी के रंग या नमूने पर टिप्पिणी करके उन्हें चिढ़ाते थे. उससे इला घबरा जातीं और शर्मिंदा हो जाती थीं. जज के सामने अपनी बात रखते समय वो हकलाने लगती थीं.

इसके अलावा, इला को कभी-कभी पुरुषों के साथ यात्रा भी करनी पड़ती थी और रात को किसी होटल में रुकना पड़ता था. लोग उनके बारे में अफवाहें फैलाने लगे. एक महिला के लिए अकेले, पुरुषों के साथ यात्रा करना उस समय उचित नहीं माना जाता था. इला लगातार सोचती थीं, "क्या मैं सही काम कर रही हूँ?" लेकिन रमेश ने हमेशा उनका समर्थन किया और कहा उन्हें अफवाहों पर ध्यान नहीं देना चाहिए.

अनुसूया साराभाई कौन थीं?

अनुसूया साराभाई भारत की पहली व्यक्ति थीं जिन्होंने श्रमिकों को एक यूनियन में संगठित किया. उनका जन्म 1885 में अहमदाबाद में करोड़पतियों के परिवार में हुआ था, जो कई कपड़ा मिलों के मालिक थे. उनकी शादी बहुत कम उम्र में हुई थी, लेकिन उन्हें एक गृहिणी का जीवन पसंद नहीं था. अपने भाई अंबालाल के समर्थन से, वो डॉक्टरी का अध्ययन करने के लिए इंग्लैंड गईं, लेकिन उन्हें उस समय के सामाजिक मुद्दों में अधिक रास आया : महिलाओं के वोट के अधिकार के लिए आंदोलन, और ट्रेड यूनियन आंदोलन आदि.

जब अनुसूया भारत लौटीं, तो उन्होंने देखा कि कपड़ा मिल के मजदूर बहुत गरीब थे और उन्हें कम मजदूरी के लिए लंबे समय तक काम करना पड़ता था. फिर उन्होंने मिल मजदूरों और उनके परिवारों की मदद करने का फैसला किया. उन्होंने बच्चों के लिए एक स्कूल की स्थापना की, और मज़दूरी बढ़ाने के लिए मज़दूरों की हड़ताल करने में मदद की. यह पहली बार था जब भारत में श्रमिकों ने अधिक वेतन पाने के लिए हड़ताल की.

दूसरी बार मिल मजदूरों ने मजदूरी बढ़ाने के लिए अनुसूया से मदद मांगी. अनुसूया ने महात्मा गांधी से श्रमिकों और मिल मालिकों के बीच समझौते में मदद करने को कहा. लेकिन मिल मालिकों ने मजदूरों से बातचीत करने से इनकार कर दिया, इसलिए मजदूरों ने हड़ताल शुरू कर दी. गांधी और अनुसूया ने जोर देकर कहा कि श्रमिकों को केवल उतना ही पैसा मांगना चाहिए जितनी उन्हें वास्तव में जरूरत हो. श्रमिकों और मिल मालिकों दोनों ने, हिंसा का उपयोग न करने का वादा किया. गांधी और अनुसूया यह दिखाना चाहते थे कि मिल मालिक और मज़दूर, दोनों उद्योग में भागीदार थे, और वे एक-दूसरे के दुश्मन नहीं थे. अंत में, उन्हें एक समझौते पर पहुंचना ज़रूरी था.

यह हड़ताल टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (TLA) की शुरुआत थी. अनुसूया के उदाहरण ने पूरे भारत में अन्य श्रमिक आयोजकों को यह सिखाने में मदद की कि वे श्रमिक संघ कैसे शुरू करें और उन्हें कैसे चलाएं. अनुसूया ने 1972 में अपनी मृत्यु तक TLA के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया.

उन्हें अनुसूया साराभाई का भी समर्थन मिला. जब इला ने TLA के साथ काम करना शुरू किया तो अनुसूया रोमांचित हो गईं. अनुसूया ने इला को कई बार अपने घर बुलाया और उन्हें पुरुषों से निडर बनने के लिए प्रोत्साहित किया. अनुसूया ने इला से कहा, "खुद से पूछो, कि क्या सही है और क्या गलत है - और फिर उस फैसले में विश्वास करो और उसके लिए निडर होकर कार्य करो."

इला ने कहा, "अनुसूया चाहती थी कि सभी महिलाएं निडर हों." यह एक असामान्य विचार था, क्योंकि उस समय भारत में, और आज भी, महिलाओं से उनके पिता और पति के अधीन रहने की उम्मीद की जाती थी. एक महिला जो शर्मीली और विनम्र होती थी भारतीय समाज में एक आदर्श महिला मानी जाती थी.

इला भले ही शर्मीली थीं, लेकिन शर्मीलेपन ने उसे अपना काम करने से कभी नहीं रोका. इसके अलावा, जब वो किसी चीज़ के बारे में दृढ़ता से महसूस करती थीं तो वो उसके लिए खड़े होने में संकोच नहीं करती थीं. TLA में सभी महिला स्टाफ सदस्यों के लिए अपनी साड़ी के पल्लू से अपना सिर ढंकने का रिवाज था.



बात करते और हंसते हुए, एक महिला अपनी मां के बालों में कंघी कर रही है. जैसे कि भारत में प्रथा है, बेटी अपनी साड़ी के पल्लू से अपना सिर ढकती है.

इला ने अपना सिर नहीं ढका क्योंकि जहाँ वो बड़ी हुई थीं वहाँ यह प्रथा नहीं थी. जब उन्होंने TLA में काम करना शुरू किया तो एक नेता उन्हें एक तरफ ले गया और उसने उनसे सिर ढकने को कहा. लेकिन इला ने मना किया. इला ने कहा, "मैंने उस नेता से कहा कि मैं TLA में सीखने आई हूं, और TLA मेरे माता-पिता के घर की तरह है." भारत की महिलाएं परंपरागत रूप से अपने माता-पिता के घर में अपना सिर नहीं ढकती हैं. "उसके बाद किसी ने मुझे इस बारे में परेशान नहीं किया." TLA के साथ अपने काम के पहले कुछ वर्षों में इला अपने माता-पिता के साथ अहमदाबाद के शाहीबाग इलाके में एक बड़े घर में रहती थीं. इस समय इला की माँ वनलीला अखिल भारतीय महिला सम्मेलन नामक एक महिला संगठन से जुड़ीं थीं. वनलीला और कुछ अन्य महिलाओं ने ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के लिए एक छात्रावास की स्थापना की थी, ताकि अगर वे अहमदाबाद आना चाहें तो उनके पास रहने के लिए एक सुरक्षित जगह हो.

इसी बीच रमेश को अहमदाबाद में नौकरी मिली. वे गुजरात विद्यापीठ में अर्थशास्त्र के शिक्षक बने. गांधीजी ने ही वो विश्वविद्यालय शुरू किया गया था. रमेश ग्रामीण इलाकों में गरीब लोगों के साथ काम करना चाहता था, लेकिन उसे चिंता थी कि वैसा करने से इला के माता-पिता कभी भी उनकी शादी के लिए राजी नहीं होंगे, इसलिए उसने एक कॉलेज शिक्षक बनने का फैसला किया. अंत में, 1956 में, इला के माता-पिता ने शादी के लिए अपनी सहमति दे दी. वे चाहते थे कि इला खुश रहे. वास्तव में, उस समय तक इला के माता-पिता भी रमेश को चाहने लगे थे. उन्होंने एक बड़ी और भव्य शादी की योजना बनाई. दावत में तीस से अधिक विभिन्न खाने के व्यंजन थे. इला और रमेश ने बहुत ही साधारण शादी पसंद की होती, लेकिन इला के माता-पिता कई लोगों को आमंत्रित करना चाहते थे. फिर 20 अप्रैल, 1956 को, 1,000 मेहमानों के साथ इला और रमेश की शादी हुई.

शादी के बाद इला गुजरात विद्यापीठ के परिसर में, रमेश के साथ रहने लगीं और कुछ और वर्षों तक TLA के लिए काम करती रहीं. पैसे की कमी थी क्योंकि इला और रमेश दोनों को नौकरी में बहुत कम पैसा मिलता था.



शादी के समय इला ने एक सूती साड़ी और रमेश ने, पारंपरिक धोती और एक झब्बा पहना था. गेंदे और हरी पत्तियों की लंबी लटकती हुई मालाओं से मंडप सजाया गया था.

उनकी बेटी अमीमयी, जनवरी 1958 के जन्म के बाद पैसे की और भी तंगी होने लगी. उस समय इला ने बच्ची की देखभाल के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी थी. जल्द ही देखभाल करने के लिए इला के दो बच्चे थे: बेटा, मिहिर, 24 नवंबर, 1959 को पैदा हुआ था.

जब मिहिर दो साल का हुआ तब इला ने गुजरात राज्य के श्रम विभाग में नौकरी स्वीकार कर ली. इस नौकरी ने TLA में उसे पुरानी नौकरी से अधिक वेतन मिलता था, इसलिए परिवार को पैसे की चिंता कम हो गई थी. इला ने 1968 तक सहायक रोजगार अधिकारी के रूप में काम किया, और बेरोजगार लोगों को निजी कंपनियों और सरकारी कार्यालयों में नौकरी खोजने में मदद की. उन्होंने इस दौरान बहुत कुछ सीखा कि कैसे श्रमिकों को "औपचारिक क्षेत्र" में नौकरियों के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और काम दिलाया जाता है. औपचारिक क्षेत्र की नौकरियां स्थापित कंपनियों या सरकारी दफ्तरों में ही होती हैं - ऐसी नौकरियां जिनमें परिवार चलाने के लिए पर्याप्त वेतन मिलता हो. लेकिन इला ने जल्द ही महसूस किया कि भारत के सभी श्रमिकों के लिए औपचारिक क्षेत्र में नौकरियां उपलब्ध ही नहीं थीं.

इला ने महसूस किया कि कई श्रमिकों, विशेष रूप से अशिक्षित श्रमिकों को कम वेतन वाले "अनौपचारिक क्षेत्र" की नौकरियों में काम करना पड़ता है, जैसे कि फुटपाथ पर ठेले पर सब्जियां बेचना, घर पर कपड़े सिलना, घर पर बीड़ी रोल करना, या इस्तेमाल किए गए कपड़ों को इकट्ठा करना और उनका पुनर्विक्रय करना. दरअसल, अहमदाबाद में आधे से ज्यादा मजदूर अनौपचारिक क्षेत्र में ही कार्यरत थे. एक बार फिर, इला ने जो कुछ सीखा, उससे वो बहुत चिंतित हुईं. इला ने कहा, "मेरी मूल चिंता हमेशा गरीबी और अन्याय थी," और जैसे-जैसे मैंने असंगठित श्रमिकों के बारे में और अधिक सीखा, मैंने देखा कि गरीब लोगों में महिलाएं ही सबसे गरीब थीं. और इसलिए, इस अहसास के साथ. इला ने इन "गरीबों में से सबसे गरीब लोगों" की मदद करने का संकल्प लिया.



इस युवती ने कड़ी मेहनत से ताड़ की सीकों से झाड़ू बना रही है. उसके काम को "अनौपचारिक क्षेत्र" की नौकरी माना जाता था.

अब इला के हाथ पूरी तरह से भरे थे. वो बाहर नौकरी करते हुए और अपने घर और बच्चों की देखभाल कैसे कर सकती थीं? भारत में, दुनिया के अधिकांश अन्य हिस्सों की तरह, गृहकार्य और बच्चों की देखभाल को महिला की जिम्मेदारी माना जाता था. लेकिन इला और रमेश यह नहीं मानते थे कि घर का काम और बच्चों की देखभाल केवल इला का काम हो, इसलिए रमेश घर पर बराबरी का काम करते थे. और उनके परिवार ने भी की मदद: रमेश की बुज़ुर्ग मौसी उनके साथ रहती थीं और बच्चों की देखभाल में मदद करती थीं. साथ में इला की बहन रूपा और उसके माता-पिता ने भी साथ दिया.

अपनी शादी के पहले बीस वर्षों के दौरान, इला और रमेश ने भारत के अधिकांश मध्यम वर्गीय परिवारों के विपरीत, अपने घर में कोई भी नौकरानी नहीं रखी. सामान्य घरों में सफाई और कपड़े और बर्तन धोने के लिए आमतौर पर कम-से-कम एक दैनिक नौकर होता है. इसके बजाए, इला और रमेश बहुत ही सादा जीवन जीते थे. परिवार के प्रत्येक सदस्य को निश्चित काम सौंपा गया था, और जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते गए, बच्चों ने भी खाना पकाने, सफाई करने और परिवार के लिए खरीदारी करने में मदद की. लेकिन वे जरूरत पड़ने पर मदद लेने के खिलाफ नहीं थे. 1975 में उन्होंने एक रसोइया को काम पर रखा क्योंकि तब इला गुजराती महिलाओं के बारे में एक किताब लिखने में बेहद व्यस्त थीं, जिसे गुजरात सरकार ने उनकी पूर्णकालिक नौकरी के अलावा, लिखने को कहा था. उन्हें रसोइया इतना पसंद आया कि लेखन परियोजना समाप्त होने के बाद भी उन्होंने उसे अपने यहाँ रखा.

इला अपने परिवार के साथ शाम का समय बड़ी ख़ुशी से बिताती थीं. परिवार हर रात एक साथ खाना खाता था, और इला की बेटी अमी को याद है कि रात के खाने की बातचीत आमतौर पर माता-पिता के काम के इर्द-गिर्द ही घूमती थी. कोई गुजरात के गरीब लोगों के सामने आने वाली समस्या का उल्लेख करता, और फिर हर सदस्य - माता-पिता और बच्चे सब मिलकर - भोजन समाप्त होने के बाद लंबे समय तक मेज पर बैठकर समस्या को हल करने के बारे में विचार साझा करते थे. अमी और मिहिर ने अपने माता-पिता में, काम के प्रति एक अद्भुत जुनून देखा और वे जानते थे कि वे जो कुछ कर रहे थे वो महत्वपूर्ण था. अमी ने कहा, "हमारे माता-पिता के उदाहरण से हमने सीखा कि यदि आप खुद तय करते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है और उसे आप अपने जीवन का काम बनाते हैं, तो फिर काम एक खुशी बनती है."



इला का परिवार बाएं से दाएं: बेटी अमी, मां वनलीला, इला और मिहिर, पिता सुमंत, और बहन रूपा.

हर दिन रात के खाने के बाद, इला और रमेश बाहर अपनी छत पर झूले पर बैठकर सुपारी चबाते हुए अपने काम, अपने परिवार, राष्ट्रीय और स्थानीय राजनीति मुद्दों के बारे में चर्चा करते थे. और बच्चों द्वारा अपना गृहकार्य समाप्त करने के बाद, परिवार बाहर बैठकर धार्मिक गीत और प्रार्थना गाता था.

1968 में इला फिर से TLA में शामिल हुईं, इस बार उनकी महिला-विंग की प्रमुख के रूप में. उस समय मिल मजदूरों की पत्नियों और बेटियों को अच्छी पत्नियां और मां बनने के लिए प्रशिक्षण देने के लिए TLA में एक महिला विंग शामिल की गई थी. महिला विंग ने सिलाई, कढ़ाई और अन्य पारंपरिक महिला कौशल के एक वर्ग की पेशकश की थी. लेकिन इला उससे प्रभावित नहीं हुईं. इला ने कहा, "मैंने महसूस किया कि महिलाओं को असल में अधिक आय और रोजगार के अवसरों की आवश्यकता थी."

इसके अलावा, इला किसी भी तरह अनौपचारिक क्षेत्र में हजारों महिला श्रमिकों की मदद करने के लिए कोई रास्ता खोजना चाहती थीं - ऐसी महिलायें जो एक स्थाई मालिक के लिए काम नहीं करती थीं और इसलिए वे रोजगार कानूनों के दायरे में नहीं आती थीं. उस समय इला को इस बात का अहसास नहीं था कि उनका गरीब महिलाओं को देखने और उनकी मदद करने का तरीका उन्हें एक बिल्कुल नए रास्ते की ओर ले जाएगा.

अध्याय 5

"महिलाओं को वास्तव में क्या चाहिए"

जब इला ने TLA की महिला विंग के साथ काम करना शुरू किया, तब उन्होंने महिलाओं को दी जाने वाली कक्षाओं का बहुत विस्तार किया: अब महिलाएं चालीस अलग-अलग कोर्स ले सकती थीं और पारंपरिक रूप से पुरुषों का कोई भी कौशल सीख सकती थीं, जैसे सिलाई, सिलाई मशीनों की मरम्मत, बिजली का काम, प्लंबिंग, रेडियो मरम्मत, और कई अन्य कौशल. इस प्रशिक्षण ने महिलाओं को अपने छोटे-छोटे धंधे स्थापित करने में मदद की.

लेकिन जब इला ने काम करने और अपनी खरीदारी के लिए शहर का चक्कर लगाया, तो उन्होंने अहमदाबाद में अन्य कामकाजी महिलाओं को देखना जारी रखा - उन्हें बेहद गरीब महिलाएं मिलीं जिनकी TLA की महिला विंग मदद करने में असमर्थ थी. इला ने देखा कि कड़ी मेहनत के बावजूद इन महिलाओं को कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता था. वे दुबली-पतली थीं और फ़टे-पुराने कपड़े पहनती थीं. काम करते समय उन्हें अक्सर अपने बच्चों को साथ लाना पड़ता था, जहाँ बच्चे कार्यस्थल की गर्मी और धूल के संपर्क में आते थे. उदाहरण के लिए, इला ने देखा कि ठेला खींचने वाली महिलाएं अक्सर अपने बच्चों को ठेले के नीचे एक गोफन से बांध देती थीं. कभी-कभी कोई बड़ा बच्चा ठेले पर सामान के ऊपर बैठ जाता था.

लेकिन इन महिलाओं की तमाम समस्याओं के बावजूद कोई उनकी मदद नहीं करना चाहता था. उस समय तक, TLA की महिला विंग ने कभी भी इन महिलाओं से यह पूछने की जहमत नहीं उठाई थी कि क्या उन्हें किसी मदद की ज़रूरत थी. सरकार और समाज ने भी इन महिलाओं को गंभीरता से नहीं लिया था. वास्तव में, सरकारी दस्तावेजों में इन महिलाओं को अक्सर "सीमांत" या "अनौपचारिक" कार्यकर्ता कहा जाता था.

भारत में चीजों की कीमत क्या होती है?

भारतीय मुद्रा को रुपया कहा जाता है. एक रुपया एक डॉलर के बराबर नहीं होता है. वास्तव में, यदि आप 1999 में एक डॉलर के साथ भारत जाते, तो आपको इसके लिए लगभग 57 रुपये मिल सकते थे. भारत में कई गरीब महिलाएं प्रतिदिन 20 से 40 रुपये कमाती हैं. उदाहरण के लिए, घर पर अगरबत्ती रोल करने वाली महिलाएं आठ से दस घंटे काम करके प्रतिदिन लगभग 25 रुपये कमाती हैं. यहां तक कि अगर वे साल भर में छह दिन प्रति सप्ताह काम करती हैं, तो भी वे केवल 7,800 रुपये ही कमाएंगी - जो कि केवल 137 डॉलर होंगे! जबकि अमरीका में कई परिवार एक सप्ताह के किराने के सामान के लिए इससे कहीं अधिक खर्च करते हैं.

एक गरीब महिला केवल 137 डॉलर प्रति वर्ष पर भला कैसे जी सकती है - खासकर अगर उसे एक या अधिक बच्चों को भी पालना हो? क्या उसका परिवार भूखा नहीं मरेगा?

उसके जीवित रहने का एक कारण यह है कि भारत में भोजन और अन्य आवश्यकताओं की कीमत बहुत कम होती है. उदाहरण के लिए, 1999 में एक व्यक्ति के लिए एक साधारण भोजन, जिसमें चावल, दाल, सब्जियां और दही शामिल था, की कीमत लगभग 3 रुपये (5 सेंट) थी. इसलिए, अगर एक महिला 25 रुपये प्रतिदिन कमाती थी, तो वह अपने लिए और दो बच्चों के लिए 18 रुपये प्रति दिन या 6,700 रुपये प्रति वर्ष के लिए भोजन कमा सकती थी.

बेशक, फिर आवास, कपड़े, चिकित्सा देखभाल और परिवहन जैसी चीजों के लिए केवल 1,230 रुपये ही बचेंगे. एक कमरा (किचन के साथ) का किराया 100 से 500 रुपये प्रति माह था. एक साधारण सूती साड़ी की कीमत 50 से 100 रुपये थी. एक भारतीय वैद्य की फीस 5 रुपये थी. एक साइकिल की कीमत 500 रुपये थी. बस का किराया करीब आधा रुपया था.

इसलिए, अगर किसी महिला के पास पैसे कमाने के लिए पति या परिवार के कोई अन्य सदस्य नहीं हो, तो वह बेघर हो सकती थी या पर्याप्त भोजन खरीदने में असमर्थ हो सकती थी. मज़दूरी के लिए केंद्र सरकार ने प्रति वर्ष कम-से-कम 250 दिनों की नौकरी, और प्रति कर्मचारी प्रति दिन 125 रुपये की राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी का आह्वान किया था.

चमकीले रंग की साड़ियाँ पहनकर, ये महिला "हेडलोडर" गुजरात में एक निर्माण स्थल पर बजरी-सीमेंट के बड़े-बड़े घमेले लेकर जा रही हैं.



उन्हें "असली" मज़दूर के रूप में नहीं देखा जाता था. उन्हें अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी नहीं माना जाता था. जब सरकार ने सकल राष्ट्रीय उत्पाद को जोड़ा - राष्ट्र द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य - तो उसमें अनौपचारिक क्षेत्र में लोगों के काम को छोड़ दिया गया था. जब श्रमिकों की मदद के लिए कानून पारित किए गए, तो "सीमांत" श्रमिकों को अक्सर उसमें शामिल नहीं किया जाता था. इला को वो अच्छी तरह पता था क्योंकि उसने कंकू राणा जैसी ठेलेवाली के लिए मुआवजा प्राप्त करने की कोशिश की थी.

इला समझ नहीं पा रही थी कि इतनी अधिक महिलाओं को "सीमांत" कैसे माना जा सकता था? जैसा कि इला को बाद में पता चला, मज़दूरी करने वाली महिलाओं की विशाल संख्या बहुमत अनौपचारिक क्षेत्र में थी - 90 प्रतिशत से अधिक. इला देख सकती थीं कि ये महिलाएँ निश्चित रूप से अर्थव्यवस्था का हिस्सा थीं! ठेले या फुटपाथ पर सब्जियां और फल बेचने वाली महिलाओं के बिना, अहमदाबाद के लोग इतनी आसानी से अपनी सब्जियां नहीं खरीद पाते. अहमदाबाद के निवासियों के पास इतना दूध या मक्खन नहीं होता अगर उन गरीब महिलाओं ने बकरी या गाय नहीं पाली होतीं. अहमदाबाद उन महिलाओं के बिना और भी अधिक कूड़ा-करकट और गंदी से भर जाता जो दिनभर बेकार कागज-कचरा बीनतीं थीं और कागज को पुनर्चक्रण के लिए कंपनियों को बेचती थीं. शहर के निवासी इन महिलाओं के बिना पुराने कपड़ों के बदले खाना पकाने के नए बर्तन नहीं ले पाते. और लोग रोज़ाना इस्तेमाल की वस्तुयें - अगरबती, टोकरी, झाड़ू या रजाई को भी इन मज़दूर महिलाओं के बिना नहीं खरीद पाते.

इला जानती थीं कि वो इन महिलाओं की मदद करना चाहती थीं, लेकिन वो इस बारे में निश्चित नहीं थीं कि वो कैसे किया जाना चाहिए. 1971 में स्वरोज़गार महिलाओं के कई समूह TLA में उनसे मिलने आए यह जानने के लिए कि TLA उनकी कैसे मदद कर सकता था. सबसे पहले कपड़ा बाजार में काम करने वाली गाड़ी खींचने वाली आईं. उसके बाद, वो "हेड लोडर" महिलाएं जो अपने सिर पर सामान ढोती थीं. फिर पुराने कपड़ा डीलरों और सब्जी विक्रेताओं वाली महिलाएं आईं. इन महिलाओं की कई समस्याएं थीं: वे सभी बहुत गरीब थीं, कुछ बेघर थीं, अन्य को पुलिस ने पीटा था और उन पर जुर्माना लगाया था, और अन्य को जब भी पैसे उधार लेने की आवश्यकता होती थी, तब उन्हें साहूकारों को ऊंची दर से सूद देना पड़ता था.

हर रात खाने पर, इला, रमेश से उन महिलाओं के बारे में बात करती थीं, और उनकी मदद कैसे की जाए इसके बारे में चर्चा करती थीं. इला ने महसूस किया कि गरीब महिलाओं की मदद करने से पहले उन्हें उनके जीवन के बारे में अधिक जानकारी हासिल करनी होगी. रमेश, एक प्रशिक्षित अर्थशास्त्री थे, उन्होंने गरीब महिलाओं का सर्वेक्षण करने में मदद की, ताकि इला उन तथ्यों को इकट्ठा कर सकें जिनकी उसे ज़रूरत थी.

इला ने रमेश के मार्गदर्शन में अन्य सर्वेक्षण किए थे. उदाहरण के लिए, जब वो 1968 में TLA में शामिल हुईं तो उन्होंने TLA सदस्यों का सर्वेक्षण किया, जिसमें सदस्यों से पूछा गया कि उन पर कितना कर्ज था या फिर कपड़ा मिल बंद होने पर उनके सामने क्या-क्या समस्याएँ आईं.

"सर्वेक्षण मेरे काम का व्यावहारिक औज़ार रहा है," इला ने कहा. "पहले मैं तथ्यों का पता लगाती हूं, और फिर मैं उन लोगों के साथ सर्वेक्षण के तथ्यों को साझा करती हूं. हम सर्वेक्षण से खोजी गई समस्याओं के बारे में चर्चा करते हैं, और फिर कुछ महिलाएं नेता सामने आती हैं जो इन समस्याओं का हल सुझाती हैं."



कालीबहन वो महिला होती है जो घर-घर जाकर इस्तेमाल किए गए कपड़ों के बदले में बर्तनों की अदला-बदली करती है. खड़ी हुई महिला कपड़ों की जांच करके बताएगी कि वो बदले में कौन सा बर्तन दे सकती है. हालांकि ये महिलाएं कभी भी पैसे का आदान-प्रदान नहीं करेंगी, लेकिन वो आर्थिक लेन-देन - जिसे वस्तु विनिमय कहा जाता है - सामान खरीदने और बेचने की प्रक्रिया में पूरी तरह शामिल हैं.

इसलिए अब जब वो स्वरोजगार महिलाओं की समस्याओं के बारे में जानना चाहती थीं, तो इला ने अहमदाबाद के आसपास की झुग्गी-झोपड़ियों में महिलाओं का सर्वेक्षण करना शुरू किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि उनकी सबसे बड़ी समस्या क्या थी. उन्हें पता चला कि कई महिलाओं ने ऐसे ठेकेदारों के लिए काम किया, जिन्होंने उन्हें धोखा दिया और उनके काम का पैसा तक नहीं दिया. कई महिलाओं को पुलिस ने प्रताड़ित किया था और अधिकांश महिलाओं को कानूनी न्यूनतम मजदूरी से बहुत कम पैसा मिलता था.

श्रमिक संघ क्या होता है?

श्रमिक संघ, या ट्रेड यूनियन, श्रमिकों का समूह या संगठन होता है जो अपनी मजदूरी और काम करने की स्थिति में सुधार लाने के लिए एक साथ आते हैं. श्रमिक संघ इसलिए प्रभावी होते हैं क्योंकि एक अकेला मज़दूर, मालिक पर अधिक दबाव नहीं डाल सकता है, लेकिन श्रमिकों के एक समूह के पास बहुत अधिक ताकत होती है: वे हड़ताल पर जा सकते हैं जब तक कि उनको सही मज़दूरी का भुगतान नहीं किया जाता है, या जब तक कि काम करने की स्थिति उनके अनुकूल नहीं होती है. यदि बहुत सारे मज़दूर, श्रमिक संघ का हिस्सा हों तो आमतौर पर मालिक उनकी मांगों पर विचार करने के लिए मजबूर होता है. तब यूनियन, मालिक से कर्मचारियों की कुछ मांगें मनवा सकती है.

आमतौर पर, यूनियनों में ऐसे लोग होते हैं जो एक ही कंपनी के लिए काम करते हैं, या वे एक ही उद्योग में काम करते हैं. जब श्रमिक एक संघ में शामिल होते हैं, तो उनका प्रतिनिधित्व संघ के नेताओं द्वारा किया जाता है जो उच्च वेतन और बेहतर काम करने की स्थिति के लिए कंपनी के मालिकों के साथ बातचीत करते हैं. जब यूनियन के प्रतिनिधि और कंपनी के मालिक सहमत नहीं होते हैं तो अक्सर कर्मचारी हड़ताल पर चले जाते हैं - वे काम करना बंद कर देते हैं. हड़ताल के दौरान श्रमिकों को वेतन नहीं मिलता है, और कंपनी के मालिकों के पास काम करने के लिए कोई कर्मचारी नहीं होता है - इसलिए दोनों पक्ष जल्दी से जल्दी किसी समझौते पर आने की कोशिश करते हैं.

लगभग इसी समय, इला श्रमिक संघों के बारे में अधिक जानने के लिए तीन महीने के लिए इज़राइल गई. "मैंने देखा कि इज़राइल में हर कोई किसी यूनियन से जुड़ा था," उन्होंने कहा, "चाहे वो किसी कंपनी के लिए काम करते हों या फिर स्वरोज़गार करते हों, वे सभी किसी यूनियन में थे, और उन महिलाओं के पति भी किसी यूनियन में थे." उन्हें इज़राइल में कहीं गरीबी नहीं दिखी. इला ने महसूस किया कि भारत में स्वरोज़गार महिलायें अगर वे गरीबी से बचना चाहती हैं तो उन्हें भी किसी यूनियन से ज़रूर जुड़ना चाहिए.

इजराइल की अपनी यात्रा के बाद अहमदाबाद में घर वापस आने के बाद, इला ने सभी स्वरोज़गार महिलाओं के लिए एक बैठक बुलाई. उसमें 100 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया. बैठक बाहर एक पार्क में आयोजित की गई. पहले तो इला के लिए इस बैठक को शुरू करना मुश्किल हुआ, क्योंकि सभी महिलाएं उन्हें सुनने के लिए इतनी उत्सुक थीं कि वे चुप रहने के लिए एक-दूसरे पर चिल्ला रही थीं! इला बात करने की कोशिश करती रहीं, लेकिन कोई भी उनकी बात नहीं सुन सका. हालाँकि इला इस तरह की अनौपचारिक बैठकों में बोलने से घबराती नहीं थीं, लेकिन उनकी आवाज़ बहुत धीमी थी. अंत में, लगभग एक घंटे की मशक्कत के बाद, इला ने एक गहरी साँस ली और वो अपनी सबसे ऊँची आवाज़ में चिल्लाईं, "चुप!" उन्होंने प्रत्येक महिला से कहा कि वो अपने मुंह को अपनी उंगली से बंद रखें. उसके बाद सब चुप हुईं और इला बैठक शुरू कर सकीं.

बैठक के दौरान इला ने महिलाओं को उन तथ्यों के बारे में बताया जो सर्वेक्षण से निकले थे. उन्होंने महिलाओं को दिखाया कि उनमें कई की समस्याएं समान थीं, और वे सभी कामकाजी महिलाएं थीं जो उचित व्यवहार के योग्य थीं. महिलाएं एक-साथ काम करके, संगठित होकर ही अपनी मदद कर सकती थीं. एक यूनियन बनाकर वे खुद को संगठित कर सकती थीं, और तब अपने काम के लिए उच्च वेतन और बेहतर इलाज की मांग कर सकती थीं.

पहले तो महिलाओं को समझ नहीं आया कि इला किस बारे में बात कर रही थीं. "वे यह भी नहीं जानती थीं कि एक संघ या यूनियन क्या होती है," इला को याद आया कि कई महिलाओं ने खुद को श्रमिक के रूप में कभी देखा ही नहीं देखा था. "महिलाएं काम नहीं करती हैं" और "महिलाएं घर में ही रहती हैं" वे इस प्रकार की बातों पर विश्वास करती थीं. इसके अलावा, प्रत्येक महिला यह महसूस करती थी कि उसके पास उन मर्दों के खिलाफ कोई शक्ति नहीं थी जिन्होंने उसे काम दिया था. प्रत्येक महिला को लगता था कि वो उसकी अकेले की समस्या थी. वो भला अन्य महिलाओं के साथ कैसे काम कर सकती थी जो समान रूप से गरीब और अशिक्षित थीं?

लेकिन जैसे ही महिलाओं ने अपनी समस्याओं के बारे में बात करना शुरू की वे सभी महसूस करने लगीं कि उनकी समस्याएं एक जैसी ही थीं. यहाँ तक कि बहुत भिन्न प्रकार के कार्य करने वाली महिलाओं को भी समान समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था: उन्हें पर्याप्त वेतन नहीं मिलता था, और उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता था. इन समस्याओं के बारे में सुनते ही चंदा पापू, एक पुराने कपड़ों की व्यापारी, बहुत गुस्सा हुई. अंत में, वह उठ खड़ी हुई और उसने कहा, "पुलिस हमें गिरफ्तार क्यों करती है और हमें क्यों मारती-पीटती है? हम कोई अपराधी नहीं हैं, हम तो व्यवसायी हैं!"

चंदा पापू चिल्लाई कि सभी महिलाओं को मिलकर अपना यूनियन शुरू करना चाहिए, और यह सुनकर अन्य सभी महिलाओं ने खुशी मनाई. उन्होंने इला से पूछा कि वे अपना संघ कैसे बना सकती थीं. इला ने उनसे कहा कि उन्हें संघ बनाने के लिए चंदा देना होगा. "कितना?" उन्होंने पूछा. "मैंने तब तक उसके बारे में सोचा तक नहीं था," इला ने कहा, "फिर मैंने उनसे तीन रुपये कहा."



इला अक्सर स्वरोजगार महिलाओं की भीड़ से बात करती थीं. यहां वो मछली विक्रेताओं को संबोधित कर रही हैं.

इला को तब आश्चर्य हुआ जब महिलाओं ने अपने ब्लाउज से पैसे निकालना शुरू कर दिए (जहाँ उन्होंने पैसे सुरक्षित रखे थे), और वे तीन रुपये इला को सौंपने लगीं. "मैं रसीद बुक भी नहीं लाई थी!" इला को याद आई. "मैंने नहीं सोचा था कि वे उस दिन महिलाएं चंदा देने के लिए तैयार होंगी."

उस दिन—दिसंबर 3, 1971—स्व-रोजगार महिला संघ (SEWA) का जन्म TLA की महिला विंग के हिस्से के रूप में हुआ. इला SEWA की महासचिव बनीं और TLA के अध्यक्ष - अरविंद बुच SEWA के अध्यक्ष बने. (SEWA स्व-नियोजित महिला संघ का संक्षिप्त नाम था.)

नए संघ के लिए पहली चुनौती सरकार को यह आश्वस्त करने की थी कि उन्हें एक संघ के रूप में पंजीकृत किया जाना चाहिए. इला ने याद किया, "उन्होंने मुझे बताया कि SEWA एक संघ नहीं हो सकता है, क्योंकि हमारे सदस्यों का कोई स्थाई मालिक नहीं था." लेकिन इला निराश नहीं हुई. "कोई कार्यकर्ता हमेशा एक मज़दूर नहीं होता है," उन्होंने कहा. "एक मज़दूर वो व्यक्ति होता है जो अपने स्वयं के प्रयास से जीविकोपार्जन करता है."

अप्रैल 1972 में SEWA को एक ट्रेड यूनियन के रूप में पंजीकृत किया गया. वो दुनिया का पहला श्रमिक संघ था जिसकी सदस्य सबसे गरीब महिलाएं थीं - ऐसी महिलायें जिनका कोई स्थाई मालिक नहीं था, जिन्हें नियमित वेतन चेक नहीं मिला था, और जो एक ही उद्योग में काम नहीं करती थीं. SEWA के सदस्य कई तरह के काम करते थे, जैसे गाड़ी में सामान ले जाना, स्नैक फूड बनाना और बेचना, बढ़ईगीरी और अन्य निर्माण कार्य, कपड़ा, मिट्टी का तेल, सब्जियां और बहुत कुछ बेचना. कमाई करने के लिए SEWA के सदस्यों को हर दिन काम ढूंढना पड़ता था और नए ग्राहकों को ढूंढना पड़ता था.



स्वरोजगार महिलाएं निर्माणाधीन इस इमारत की छत तक कंक्रीट के घमेले उठाती हैं. चूंकि उनके पास इस कंपनी में स्थायी नौकरी नहीं है, इसलिए उन्हें हर दिन नए काम की तलाश करनी पड़ती है.

इला को समझ नहीं आ रहा था कि SEWA सदस्यों की समस्याओं को हल करने में उनकी मदद कैसे की जाए. इस तरह की कोई यूनियन पहले कभी नहीं थी, इसलिए इला और अन्य SEWA कार्यकर्ताओं को अपना समाधान खुद खोजना पड़ा. लेकिन इला के दिमाग में दो लक्ष्य थे: पहला, वो स्वरोजगार महिलाओं के जीवन में सुधार करना चाहती थीं. दूसरा, वो स्वरोजगार महिलाओं को श्रमिक आंदोलन की मुख्य धारा में लाना चाहती थीं. तीसरा, वो इन गरीब, अनपढ़ कामकाजी महिलाओं को, भारत के महिला आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका में लाना चाहती थीं, जिसमें ज्यादातर शिक्षित, मध्यम वर्ग की महिलाओं का वर्चस्व था. गरीब महिलाएं, जैसे पत्नी की पिटाई और हत्या, बलात्कार, और उपभोक्ता मूल्य के मुद्दों के बारे में इला ने कहा, "मैंने देखा कि लगभग सभी महिला कार्यकर्ता आर्थिक रूप से सक्रिय थीं तो, मुझे लगा कि उन्हें निश्चित रूप श्रम और महिला दोनों, आंदोलनों की मुख्यधारा में होना चाहिए."



धार्मिक यात्रा पर निकला तीर्थयात्री केले खरीदने के लिए रुकता है. तेज धूप में घंटों चलने के बाद, वो इस महिला से फल खरीदता है. महिला उस जैसे ग्राहकों पर निर्भर है.

इला और SEWA कार्यकर्ताओं ने गरीब महिलाओं का एक और सर्वेक्षण किया, जिससे पता चला कि 93 प्रतिशत महिलाएं निरक्षर थीं, और उनके औसतन चार बच्चे थे. अट्ठाईस प्रतिशत महिलाओं के पास सिलाई मशीन या ठेले जैसे उपकरण नहीं थे जो उन्हें अपने व्यवसाय के लिए चाहिए थे, लेकिन उन्हें इन उपकरणों को किराए पर लेना पड़ता था. साठ प्रतिशत महिलाएँ किसी स्थानीय साहूकार के कर्ज में डूबी थीं, जो बहुत अधिक ब्याज दर वसूल करता था. 30 प्रतिशत महिलाएं अपने परिवार के लिए एकमात्र कमाई का स्रोत थीं - उनके पति पैसे कमाने में सक्षम नहीं थे, या पति अब नहीं रहे थे.

सबसे पहले निपटने वाली समस्याओं में से एक SEWA सदस्यों का पुलिस उत्पीड़न था. अहमदाबाद के फुटपाथों पर सब्जी बेचने वाली महिलाओं को पुलिस लगातार परेशान करती थी. पुलिस ने दावा किया कि महिलाओं को वहां रहने का कोई अधिकार नहीं था, और वो प्रति दिन 2 से 5 रुपये का जुर्माना मांगते थे (प्रत्येक महिला प्रति दिन केवल 10 से 15 रुपये कमाती थी). यदि कोई महिला भुगतान करने से इनकार करती, तो पुलिसकर्मी उसकी सब्जियों को लात मार देते या उसे लाठी से पीटते, या उसे गिरफ्तार कर जेल भी ले जाते थे. SEWA ने प्रत्येक महिला को एक कानूनी स्थान दिलाने के लिए वर्षों तक काम किया, जहाँ महिलाएं शांति से अपना सामान बेच सकें. इस दौरान SEWA आयोजकों ने पुलिसकर्मियों को उलटे हाथ लिया. उदाहरण के लिए, जैसा कि कलिमा रोज़ ने अपनी पुस्तक में SEWA सचिव के बारे में बताया. नीरू जादव ने देखा कि एक पुलिसकर्मी एक सब्जी विक्रेता के बाद दूसरे से पैसे मांग रहा था, उससे जुर्माना मांग रहा था. नीरू ने पुलिसकर्मी का हाथ पकड़ा और उसकी जेब से 1 और 2 रुपये के नोटों की गड्डी निकाल ली. फिर उसने पुलिस वाले से कहा कि वो उसे पुलिस उच्च अधिकारी के पास ले जायगी और फिर उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा. उससे पुलिसकर्मी इतना डरा गया और उसने उससे विनती की कि वो उसके बॉस को यह न बताए. उस समय तक सब्जी विक्रेताओं को इस बात का अंदाजा नहीं था कि पुलिस का सामना करना इतना आसान होगा.

नीरू की पहल ने सब्जी विक्रेताओं को पुलिस के सामने खड़े होने की हिम्मत दी. परेशान किए जा रहे एक वेंडर ने पुलिसकर्मी का बिल्ला छीन लिया और उस पर बैठ गई. दिन के अंत में, उसने सेवा कार्यालय में इला को पुलिस का वो बिल्ला दे दिया. इला ने तब तक उसे वापस करने से इनकार कर दिया जब तक कि पुलिस कमिश्नर ने उत्पीड़न को खत्म करने का वादा नहीं किया.

इला को यह देखकर अच्छा लगा कि SEWA के सदस्य अपने लिए खड़े होने का साहस जुटा रहे थे. उन्हें गांधी की एक शिक्षा याद आई: कि कोई, किसी व्यक्ति की भागीदारी के बिना उसका का शोषण नहीं कर सकता है. लेकिन एक गरीब, अनपढ़ महिला अपने ही शोषण में कैसे शामिल हो सकती है? इला को ऐसा लग रहा था कि वो बेचारी सिर्फ एक शिकार थी जो अपने उत्पीड़न को रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकती थी. "लंबे समय तक, मैं इस दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं कर सकी," इला ने "गांधी ऑन वीमेन" नामक पुस्तक के परिचय में लिखा. "लेकिन SEWA में वर्षों तक काम करने के बाद, मुझे वो गांधी का सबसे मान्य बयान लगा." जब इला ने देखा कि SEWA के सदस्य पुलिस उत्पीड़न के सामने झुकने से इंकार कर रहे थे, तो उन्हें गांधी क्या कह रहे थे वो समझ में आया. स्वयं के लिए खड़े होकर, SEWA सदस्य उत्पीड़न को समाप्त करने में सक्षम थे. पुलिस जानती थी कि SEWA सदस्य नम्रता से जुर्माना नहीं भरेंगे. वे जानते थे कि नीरू और इला जैसे SEWA अधिकारी, मजदूरों का समर्थन करेंगी. इसलिए, SEWA सदस्यता कार्ड पुलिस उत्पीड़न के खिलाफ एक सुरक्षा-कार्ड बन गया, भले ही शहर की सरकार ने अभी तक सब्जी विक्रेताओं के लिए कानूनी स्थान अलॉट नहीं किए थे.

SEWA सदस्यों के लिए एक और बड़ी समस्या थी - बेहद कम वेतन. SEWA ने बीड़ी कामगारों (घर पर बीड़ी रोल करने वाली महिलाएं) और पेपर पिकर (री-साइकिलिंग के लिए स्क्रैप पेपर लेने वाली महिलाएं) को उचित वेतन दिलाने में मदद की. इन संघर्षों के दौरान इला और SEWA ने सुनिश्चित किया कि वे अहिंसक रहें और केवल वही मांगें जो वास्तव में जायज़ हो, जैसा कि गांधी ने सिखाया था. SEWA ने निष्पक्षता और ईमानदारी के लिए एक प्रतिष्ठा अभियान विकसित करना शुरू किया. इला ने जोर देकर कहा, "हम अपने विरोधियों को भी कभी धोखा नहीं देते हैं."



ये लड़कियां बीड़ी बनाती और बेचती हैं. बीड़ी बनाने के लिए वे एक सूखे पत्ते पर तंबाकू डालती हैं, पत्ते को रोल करती हैं और फिर उसे धागे से बांधती हैं. दाहिनी लड़की के पास तैयार बीड़ी का एक छोटा सा ढेर है.

सदस्यों को उत्पीड़न करने या कम वेतन का विरोध करने के अलावा इला के पास SEWA के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण था. वो यह भी चाहती थीं कि SEWA के सदस्य कच्चे माल की खरीद से लेकर, तैयार उत्पाद बेचने तक अपने काम पर अधिक नियंत्रण रख सकें. इला चाहती थीं कि SEWA एक लेबर यूनियन से बढ़कर कुछ अधिक हो. वो यह भी चाहती थीं कि SEWA अपने सदस्यों को कार्यकर्ता सहकारी समितियों, व्यवसायों के निर्माण में मदद करे, जिनका स्वामित्व और संचालन स्वयं श्रमिक करें. इला को अपनी इज़राइल यात्रा से याद आया कि वहां यूनियन और सहकारी समितियां एक-साथ काम करती थीं.

इला ने देखा कि केवल एक यूनियन SEWA सदस्यों की सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती थी. कभी-कभी यूनियन ने वास्तव में SEWA सदस्यों के जीवन को और बदतर बनाया था. उदाहरण के लिए, 1978 में SEWA ने महिला चिंदी टांके लगाने वालों की मदद करने की कोशिश की. ये वे महिलाएं थीं जो कपड़ा मिलों के कपड़े (चिंदी) के स्क्रैप का उपयोग करके अपने घरों में रजाई सिलती थीं. प्रत्येक महिला, एक पुरुष ठेकेदार के साथ काम करती थी जो उसे चिंदी देता था और फिर उसे तैयार रजाई के लिए पैसे देता था.



महिलाओं की तीन पीढ़ियां चिंदी सिलाई का काम कर रही थीं. दादी और पोती फर्श पर पालथी मारे बैठी हैं, वे कपड़े के स्क्रैप को मोड़ती और छाँटती हैं, जबकि माँ सिलाई मशीन का काम करती है. कई गरीब भारतीय परिवारों में, सभी सदस्यों को घरेलू आय में योगदान के लिए काम करना पड़ता है.

महिलायें प्रत्येक रजाई के लिए लगभग 60 पैसे कमाती थीं, और प्रतिदिन केवल लगभग 3 रुपये ही कमा पाती थीं. SEWA चिंदी स्टिचर्स ने 1.40 रुपये प्रति रजाई बढ़ाने की मांग की, लेकिन ठेकेदार उसके लिए नहीं राज़ी हुए. फिर टांके लगाने वालों ने दस दिनों तक हड़ताल की, जिसके बाद ठेकेदारों ने उनका वेतन बढ़ाकर एक रुपये प्रति रजाई कर दिया. लेकिन जब SEWA टांके लगाने वाली अपना कपड़ा लेने गईं, तो ठेकेदार उन्हें कपड़ा नहीं दिया. हड़ताल का आयोजन करने वाली 40 SEWA महिलाओं को ठेकेदार सजा दे रहा था.

इला ने देखा कि जब तक चिंदी टांके लगाने वाली महिलाएं, ठेकेदारों पर निर्भर रहेंगी, तब तक उन्हें उचित वेतन कभी नहीं मिल पाएगा. उन्हें जिस चीज की जरूरत थी, वो थी मजदूरों की सहकारी समिति यानि कोआपरेटिव की. फिर वे मिलों से खुद चिंदी खरीद सकती थीं, उसे स्वयं छांट सकती थीं, सिलाई करने वालों को दे सकती थीं और उन्हें पैसे दे सकती थीं, और फिर खुद रजाईयां बेच सकती थीं. कुछ कठिनाइयों के बाद, SEWA ने चिंदी रजाई बनाने के लिए सबीना सहकारी की स्थापना की. SEWA ने अपने सदस्यों द्वारा बनाई गई रजाई और अन्य शिल्प को बेचने के लिए अपना स्वयं का स्टोर भी शुरू किया.

पहले तो ठेकेदारों ने सारी चिंदी खरीदकर, SEWA टांके लगाने वाली सबीना को-ऑपरेटिव का धंधा ठप्प करने की कोशिश की. लेकिन SEWA ने ठेकेदारों के सरकारी मिलों के साथ बातचीत की और उनसे को-ऑपरेटिव के लिए सीधे चिंदी खरीदी. SEWA ने चिंदी सिलने वालों के लिए अधिक मुनाफे वाला विकल्प प्रदान किया. इस तरह सबीना को-ऑपरेटिव ने, ठेकेदारों को सभी रजाई सिलने वालों को उच्च मजदूरी का भुगतान करने के लिए मजबूर किया - अन्यथा ठेकेदारों के लिए कोई भी सिलाई वाली काम नहीं करती.

"सहकारिता सभी श्रमिकों को बातचीत करने की शक्ति देती है," इला ने समझाया. "600 श्रमिकों में से, केवल 200 उनकी सहकारी समिति में थीं, लेकिन उससे अन्य 400 को भी लाभ हुआ था. वे 400 अपने ठेकेदारों से उच्च वेतन के लिए सौदेबाजी करने की अब बेहतर स्थिति में थीं. हर कोई जानता था कि उनके पास एक फॉल-बैक था - वे ठेकेदारों के वेतन से असंतुष्ट होने पर जब चाहें सहकारी समिति में शामिल हो सकती थीं."

सबीना को-ऑपरेटिव के इस सफल अनुभव के बाद, SEWA ने बुनकरों, बांस फर्नीचर निर्माताओं, चमड़ा-शिल्पकारों, खाद्य विक्रेताओं, ऑफिस क्लीनर, कचरा संग्रहकर्ता, डेयरी श्रमिकों और बंजर भूमि श्रमिक - जो पेड़ लगाते थे और बंजर भूमि पर सिंचाई करते थे उनके लिए कई अन्य सहकारी समितियां स्थापित कीं.

इला का हर विचार तुरंत सफल नहीं हुआ. उदाहरण के लिए, क्योंकि इला शिक्षा के मूल्य में दृढ़ता से विश्वास करती थीं, इसलिए उन्होंने जो पहली चीज शुरू की, वो SEWA सदस्यों के लिए साक्षरता कक्षाएं थीं. उन्होंने सोचा कि अगर महिलाएं पढ़ना-लिखना सीख जाती हैं, तो वे न केवल बेहतर नौकरी पा सकती थीं, बल्कि नेतृत्व की भूमिका निभाने में भी सक्षम होंगी और यह सुनिश्चित करेंगी कि कोई उन्हें धोखा न दे.



ब्लैकबोर्ड पर खड़ी इला, SEWA महिलाओं के एक वर्ग को पढ़ा रही हैं. चूंकि कक्षाएं कभी-कभी लंबी होती थीं, इसलिए महिलाएं दोपहर के ब्रेक में भोजन करती हैं. महिलाओं के पास साधारण भोजन होता था: रोटी, सब्जी और एक केला.

इला को इस बात का अंदाजा नहीं था कि SEWA सदस्यों के लिए हर दिन, लंबे समय तक काम करने के बाद कक्षाओं में जाना कितना मुश्किल था. कई महिलाओं को यह समझ में नहीं आया कि पढ़ना-लिखना सीखने से उन्हें कैसे मदद मिलेगी - आखिरकार, उनकी याददाश्त बहुत पैनी थी, और वे अपनी धंधे के सभी आवश्यक विवरण याद रख सकती थीं. ऐसा नहीं था कि महिलाएं सीखने की विरोधी थीं. बाद के वर्षों में इला ने देखा कि वे उन कक्षाओं के लिए उत्सुक थीं जो उन्हें पहले से अधिक पैसा कमाने में मदद करती थीं: डेयरी श्रमिकों ने उन कक्षाओं में भाग लिया कि कैसे बकरियों और गायों को स्वस्थ रखा जाए, और ब्लॉक-प्रिंटर ने अधिक परिष्कृत मुद्रण तकनीक सीखी. लेकिन उन्होंने यह नहीं देखा कि कैसे पढ़ना-लिखना सीखना उन्हें अधिक पैसा कमाने में मदद करेगा.

इला ने कई वर्षों तक SEWA सदस्यों को साक्षरता कक्षाओं में भाग लेने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिली. वो लगातार महिला मज़दूरों की रुचि की कमी से परेशान थीं, और विशेष रूप से तब परेशान हुईं जब माताओं ने अपनी बेटियों को स्कूल से बाहर रखा ताकि बेटियां और अधिक पैसा कमा सकें. जैसा कि इला ने लेखक कलिमा रोज़ को बताया, "मैंने सालों तक एक दीवार के खिलाफ अपना सिर पीटा," ताकि सेवा सदस्यों को साक्षरता कक्षाएं उपलब्ध हों. उन्हें विश्वास था कि पढ़ना, लिखना, जोड़ना-घटाना सीखने से SEWA के सदस्यों को बहुत मदद मिलेगी, लेकिन इला उन्हें इस बात के लिए मना नहीं सकीं.

इला को अंततः एहसास हुआ कि अधिकांश SEWA सदस्यों को पढ़ना और लिखना सीखना बहुत देर हो चुकी थी; वे पैसे के लिए इतने बेताब थीं और कुछ ऐसा करना चाहती थीं जिससे उन्हें तुरंत कम-से-कम थोड़ा अधिक पैसा मिल सके. लेकिन इला ने यह भी देखा कि एक माँ ने जितना अधिक पैसा कमाया, उसकी बेटी के स्कूल जाने की उतनी ही अधिक संभावना बढ़ी - क्योंकि अब माँ को अपनी बेटी की आय की इतनी सख्त आवश्यकता नहीं थी.

असल में साक्षरता वर्ग 1990 के दशक के मध्य में लोकप्रिय तब हुए, जब SEWA सदस्यों की दूसरी पीढ़ी, पहले SEWA सदस्यों की बेटियां और बहुएं SEWA में शामिल होने के लायक बड़ी हुईं.

क्योंकि इला ने SEWA सदस्यों की बात सुनी, इसीलिये उन्होंने केवल साक्षरता वर्गों पर ही जोर नहीं दिया. उसकी बजाय, उन्होंने SEWA सदस्यों की उन क्षेत्रों में मदद की, जिनकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता थी: पैसे बचाना और पैसे उधार लेना. इला ने मज़दूर महिलाओं को विश्व प्रसिद्ध संस्था बनने में मदद की: उन्होंने SEWA बैंक स्थापित किया.

अध्याय 6

गरीब महिलाओं के लिए एक बैंक

जब इला ने SEWA के सदस्यों से बात की और स्वरोज़गार महिलाओं का सर्वेक्षण किया, तो उन्होंने महसूस किया कि SEWA सदस्यों के सामने एक मुख्य समस्या यह थी कि जब भी उन्हें अतिरिक्त धन की आवश्यकता होती थी - फर्नीचर बनाने के लिए, बांस खरीदने के लिए, सब्जियां खरीदने के लिए, या परिवार के किसी बीमार सदस्य के लिए दवा खरीदने के लिए - तो उन्हें स्थानीय साहूकारों से उच्च ब्याज दरों पर क़र्ज़ लेना पड़ता था. उदाहरण के लिए, साहूकार प्रति दिन 10 प्रतिशत या प्रति माह 25 प्रतिशत की ब्याज दर वसूलते थे. इसकी तुलना में, बैंक आमतौर पर प्रति वर्ष 9 प्रतिशत से 17 प्रतिशत के बीच ब्याज दर वसूल करते थे.

उदाहरण के लिए, अगर कोई महिला सब्जी खरीदने के लिए सुबह एक साहूकार से 50 रुपये उधार लेती, तो उसे शाम को 55 रुपये (प्रति दिन 10 प्रतिशत की ब्याज दर पर) वापस देना पड़ते थे. एक और दिन पैसे रखने पर उसे और 10 प्रतिशत (5 रुपये) का भुगतान करना पड़ता था. एक हफ्ते के बाद, उसे कुल 85 रुपये का भुगतान करना होता था. अगर उसने एक साल पैसे रखे, तो उस पर 1,875 रुपये का कर्ज चढ़ जाता! महिला के लिए अब आगे बढ़ना या पैसे बचाना असंभव हो जाता, क्योंकि उसे साहूकार को इतना अधिक भुगतान करना पड़ता था. कुछ परिवारों ने स्थानीय साहूकारों से इतना उधार लिया, और पैसे को इतने लंबे समय तक अपने पास रखा था, कि अब वो कभी कर्ज से मुक्त होने की उम्मीद नहीं कर सकते थे.

इसके विपरीत, यदि महिला ने प्रति वर्ष 15 प्रतिशत ब्याज पर बैंक से उतनी ही राशि उधार ली होती, तो वो पूरे साल 50 रुपए रख सकती थी और साल के अंत में उसे केवल 57.50 रुपये ही बैंक को वापस करने पड़ते.

हालाँकि, जब SEWA पहली बार शुरू हुआ, तो ये गरीब महिलाएँ बैंक से पैसे उधार नहीं ले सकती थीं, क्योंकि बैंक उन्हें उधार देते ही नहीं थे. महिलाओं को यह नहीं पता था कि बैंक कैसे काम करते हैं, और वे ऋण का फॉर्म नहीं भर सकती थीं क्योंकि वे अनपढ़ थीं. साथ ही, बैंकों को यह विश्वास नहीं था कि एक गरीब महिला ऋण चुकाने में सक्षम होगी, इसलिए उन्हें गरीब महिलाओं को पैसा उधार देना जोखिम लगता था. लेकिन इला को इस बात का अंदाजा था कि SEWA सदस्यों को बैंक ऋण दिलाने में कैसे मदद की जाए. देश में कई सरकारी बैंक (राष्ट्रीय बैंक) थे, और भारत के प्रधान मंत्री चाहते थे कि ये बैंक अपने पैसों का 1-प्रतिशत क़र्ज़ गरीब लोगों को उधार दें. 1972 में, इला ने SEWA सदस्यों को पैसे उधार देने के लिए राष्ट्रीय बैंकों की व्यवस्था की. SEWA ने अपने सदस्यों को सिखाया कि बैंक कैसे काम करते थे, उनकी ऋण आवेदन भरने में मदद की, ऋण प्राप्त करने के लिए वे महिलाओं के साथ बैंक गए, और यह सुनिश्चित किया कि लोग बैंक का क़र्ज़ चुकाएँ.

अहमदाबाद में स्वरोजगार महिलाएं इस कार्यक्रम को लेकर इतनी उत्साहित हुईं कि 3,000 महिलाएं SEWA में शामिल हो गईं. महिलाएँ समूहों में SEWA के कार्यालयों में ऋण प्राप्त करने का तरीका सीखने के लिए आती थीं. वहां आने के बाद वो इला और अन्य सेवा कार्यकर्ताओं को घेर लेती थीं, और ऋण के बारे में जानने की उत्सुकता में एक-दूसरे पर चिल्लाती थीं और काम में बाधा पहुंचती थीं. कभी-कभी इला और अन्य SEWA कार्यकर्ता एक कमरे में भाग जाते थे और महिलाओं की भीड़ से बचने के लिए पांच मिनट के लिए कमरे का दरवाजा बंद कर देते थे!

ऋण कार्यक्रम ने SEWA सदस्यों को कम ब्याज दरों पर पैसे उधार लेने में मदद की. लेकिन अभी भी कई समस्याएं थीं. उदाहरण के लिए, बैंक किसी महिला को अपेक्षाकृत बड़ी राशि - 500 से 1,500 रुपये के बीच उधार देते थे और उसे यह सारा पैसा एक ही बार में देते थे.

हमें बैंकों की आवश्यकता क्यों होती है?

किसी बैंक का उद्देश्य क्या होता है? हम अपना पैसा घर में स्टील की अलमारी में या कोठरी में क्यों नहीं रख सकते? हम वैसा कर सकते हैं, लेकिन तब हमारा पैसा चोरी हो सकता है, चूहों द्वारा खाया जा सकता है, या किसी अन्य कारण से नष्ट हो सकता है. बैंक, पैसा रखने की एक सुरक्षित जगह है.

इसके अलावा, बैंक ऐसे लोगों को क़र्ज़ देते हैं, जिन्हें अधिक धन की आवश्यकता होती है— उदाहरण के लिए, घर खरीदने या व्यवसाय शुरू करने के लिए. बैंकों से ऋण के बिना, किसी व्यक्ति के लिए घर खरीदना एक बहुत कठिन काम होगा, क्योंकि बहुत कम लोग एक ही बार में एक घर का भुगतान करने के लिए पर्याप्त धन बचा पाते हैं. कोई व्यवसाय शुरू करना भी बहुत मुश्किल होगा, क्योंकि कमाई करने से पहले अक्सर व्यापार में पूँजी लगाने की जरूरत होती है. जो व्यक्ति ऋण लेता है वो धीरे-धीरे करके क़र्ज़ का वापस भुगतान करने के लिए राजी होता है - आमतौर पर हर महीने वो एक छोटी राशि लौटता है - साथ में थोड़ा अतिरिक्त, ब्याज भी. ब्याज, बैंक को अपने कर्मचारियों का वेतन और अन्य खर्चों का भुगतान करने में मदद करता है.

बैंक अन्य सेवाएँ भी प्रदान करते हैं, जैसे चेक देना, और फिर लोग, अपने द्वारा खरीदी चीज़ों के भुगतान के लिए चेक लिखते हैं; और मुद्रा विनिमय सेवाएं, जो विदेशी धन को अपने देश के धन में परिवर्तित करती हैं.

पर एक महिला मज़दूर अपना पैसा कहां रखेगी? उसका किसी बैंक में बचत खाता ही नहीं था, और उसे कभी-कभी डर लगता था कि अगर वो पैसे घर में रखेगी तो उसका पति या बेटे वो पैसे ले लेंगे. यह भारत में गरीब परिवारों में एक बड़ी समस्या थी - मर्द अपने परिवार की महिलाओं से पैसे चुराते थे, लेकिन आमतौर पर किसी महिला की बेटियां या बहनें ऐसा नहीं करती थे. इसलिए, महिलाएं कभी-कभी स्थानीय साहूकार के पास अपने पैसे सुरक्षित रखती थीं - उसी साहूकार के पास, जो महिलाओं से अनुचित ब्याज दर वसूल करता था, और जिस साहूकार से इला, SEWA के सदस्यों को मुक्त करना चाहती थीं. इसके अलावा, इनमें से अधिकतर महिलाओं ने पहले कभी बैंक का इस्तेमाल नहीं किया था. जब वे अपना कर्ज चुकाने के लिए बैंक जाती थीं, तो वे कभी-कभी गलत बैंक में चली जाती थीं, क्योंकि उन्हें यह याद ही नहीं रहता था कि किस बैंक ने उन्हें कर्ज दिया था. या वे कभी-कभी बैंक के बंद होने के बाद वहां जाती थीं, क्योंकि दिन के समय उन्हें अपने काम के दौरान कोई फुर्सत ही नहीं मिलती थी.

और यहां तक कि जब वे सही समय पर सही बैंक में जाती थीं, तो भी अक्सर बैंक कर्मचारी उनका अपमान करते थे. बैंक के लोग नाराज होते थे क्योंकि महिलाएं अपने गंदे काम के कपड़ों में अपने शोरगुल करते बच्चों के साथ बैंक में जाती थीं, और उनके पास उचित पहचान पत्र नहीं होता था. SEWA के सदस्य बैंकों में काम करने के तरीके से परिचित नहीं थे - और बैंक कर्मचारियों को यह नहीं पता था कि इन मेहनती महिलाओं के पास बैंक आने से पहले अपने बच्चों को छोड़ने या अपने कपड़े बदलने के लिए कोई जगह नहीं थी.

1974 की शुरुआत में, इला और SEWA सदस्यों ने बैंकों के साथ इन समस्याओं पर चर्चा करने के लिए एक बैठक की. कलिमा रोज ने अपनी किताब "जहां महिलाएं नेता हैं" में इस मुलाकात का वर्णन किया है. सैकड़ों महिलाओं ने बैठक में भाग लिया और एक-एक करके उन्होंने राष्ट्रीय बैंकों में उनके सामने आने वाली कठिनाइयों के बारे में बताया. पुराने कपड़ों की व्यापारी चंदा पापू खड़ी हो गयीं और उसने इला से पूछा, "हम अपना बैंक क्यों नहीं खोल सकते?"

इला इस विचार को बढ़ावा नहीं देना चाहती थीं. "हम अपना बैंक नहीं खोल सकते. हम लोग बहुत गरीब हैं. हमें अपना बैंक खोलने के लिए 100,000 रुपये चाहिए होंगे." (यही नियम सरकार ने उन लोगों के लिए बनाया था जो अपना बैंक शुरू करना चाहते थे).

लेकिन महिलाएं निराश नहीं हुईं. "हम गरीब हैं, लेकिन हम बहुत हैं!" उन्होंने जोर देकर कहा. भीड़ जय-जयकार करने लगी. महिलाएं बहुत उत्साही थीं और उनमें बहुत आत्मविश्वास था. उन्होंने इला को आश्वस्त किया कि वे पैसे जुटा सकती थीं.

इला और SEWA कार्यकर्ताओं ने सदस्यों को धन जुटाने की योजना विकसित की. SEWA के सदस्यों ने प्रत्येक स्वरोज़गार महिला से बात की, और उन्हें SEWA के ऑफिस में आने और बैंक के एक या अधिक शेयर (10 रुपये प्रति शेयर) के हिसाब से खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया. एक शेयर खरीदकर, प्रत्येक महिला बैंक का एक छोटा सा हिस्सा खरीद सकती थी; वो बैंक की एक मालिक बन सकती थी.



भारत में, परिवार के सदस्य अक्सर बच्चों की देखभाल में मदद करते हैं जैसे यह दादी इन युवा लड़कियों की देखभाल कर रही है. लेकिन जब दादी सहित परिवार के हर सदस्य को काम करना पड़ता है, तो बच्चों के साथ घर पर रहने के लिए कोई नहीं बचता है. कोई अन्य विकल्प न होने के कारण, गरीब महिलाओं को अक्सर अपने बच्चों को अपने साथ काम पर लाने के लिए मजबूर होना पड़ता है.

इला इस प्रयास की सफलता से काफी चकित थीं. "वो एक लहर की तरह थी," इला ने याद करते हुए कहा. "इससे पहले कि मैं सुबह कार्यालय पहुँचती, सैकड़ों महिलाएँ पहले ही लाइन में लग चुकी थीं," प्रत्येक महिला एक शेयर खरीदने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थीं. भुगतान के एवज में हर महिला को प्लास्टिक के लिफाफे में एक रसीद मिलती थी. SEWA बैंक के औपचारिक रूप से बैंक के रूप में पंजीकृत होने के बाद, एक सच्चे शेयर प्रमाण पत्र के लिए बदला जाना था. वो कागज का एक टुकड़ा आधिकारिक तौर पर यह घोषणा करता था कि वो महिला बैंक की मालिक थी. हजारों महिलाओं को SEWA में इतना विश्वास था कि वे अपनी मेहनत से कमाए गए दस रुपयों का शौक से भुगतान करती थीं भले ही बैंक अभी तक शुरू नहीं हुआ था. बहुत सी महिलायें जिनके पास भोजन खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे वे भी पैसे दे रही थीं. उनके लिए वो बहुत सारा पैसा था: उन दिनों एक थाली की कीमत केवल 1.50 रुपये होती थी. लेकिन पैसों से अधिक, इला इस बात से प्रभावित थीं कि महिलाओं को अपना पैसा सौंपने के लिए SEWA में पर्याप्त विश्वास था. "अगर उन्हें भरोसा नहीं होता, तो वे एक पैसा भी नहीं देतीं," इला ने कहा.

SEWA सदस्यों ने बैंक में शेयर खरीदने के लिए इतनी सारी महिलाओं को कैसे ढूंढा? इस प्रयास के आयोजकों में से एक आनंदिनी बुद्धभाई ने कलिमा रोज़ को यह समझाया:

"हम अनपढ़ महिलाएं कैसे काम करती हैं? अपने हाथों से काम करके. पैदल चलकर. सिर पर भार ढोकर. आपस में बात करके. इस तरह हमने इस बैंक का निर्माण किया है. पूरे शहर में घूमकर, अपनी बहनों से बातें करके, इतनी सारी महिलाओं से थोड़ी-थोड़ी नकदी इकट्ठी करके हमने एक बड़ी रकम जमा की है."

जब SEWA के सदस्य पैसे जुटा रहे थे, तब इला बैंक को रजिस्टर करने के लिए कोआपरेटिव बैंकों के रजिस्ट्रार के पास गयीं. रजिस्ट्रार ने बैंक का रजिस्ट्रेशन करने से इनकार कर दिया. "उन्होंने मुझसे पूछा, 'आपके पास ऐसी महिलाओं का बैंक कैसे हो सकता है, जिनके पास परिवार में कोई निश्चित आय नहीं है?'" उन्होंने याद किया. इला ने बताया कि ये महिलाएं काम कर रही थीं और अपना पैसा कमा रही थीं. "फिर उन्होंने पूछा, 'आप अनपढ़ महिलाओं के साथ बैंक कैसे बना सकती हैं?'" रजिस्ट्रार को यह समझ में नहीं आ रहा था कि कोई अनपढ़ महिला कैसे अपने पैसे का हिसाब रख पाएगी? क्या वो अपने पहचान पत्र पर अपना नाम भी लिख पाएगी? इला अपने ऑफिस वापस गयीं. उन्होंने एक ऐसी बैंक पासबुक विकसित की, जिसमें प्रत्येक महिला एक स्लेट पकड़े हुए थी जिस पर उसका खाता नंबर छपा हुआ था, ताकि उसकी पहचान की जा सके. जब रजिस्ट्रार ने देखा कि SEWA सदस्य बैंक शुरू करने के लिए अधिक-से-अधिक धन एकत्र कर रहे थे, तो वो बैंक को पंजीकृत करने के लिए सहमत हो गया.



यह SEWA सदस्य गर्व से अपनी बैंक पासबुक दिखाती है. उससे वो SEWA बैंक में अपने खाते से पैसे निकाल सकती है.

छह महीने में SEWA के सदस्यों ने 60,000 रुपये जमा किए. बैंक शुरू करने के लिए यह काफी पैसा नहीं था, लेकिन सरकार ने उन्हें आगे बढ़ने की अनुमति दे दी. जुलाई 1974 में महिला SEWA सहकारी बैंक (SEWA महिला सहकारी बैंक) पंजीकृत हुआ. बैंक के पंजीकृत होने के एक दिन पहले एक अंतिम समस्या आई. SEWA ने पाया कि बैंक को पंजीकृत करने के लिए, पंद्रह शेयरधारकों को अपने नाम के आगे हस्ताक्षर करने थे! इसलिए, पंजीकरण से पहले, पंद्रह SEWA सदस्य रात भर जागीं और उन्होंने अपने नाम के हस्ताक्षर करने का बार-बार अभ्यास किया.

SEWA बैंक काफी लोकप्रिय था: 1977 तक उसने लगभग 9,000 ऋण दिए थे. इनमें से कई ऋण अभी भी सरकारी बैंकों से थे, क्योंकि SEWA बैंक के पास अभी तक सभी ऋणों को कवर करने के लिए पर्याप्त धन नहीं था. लेकिन अब SEWA सदस्य SEWA बैंक के माध्यम से धन जमा कर सकते थे या निकाल सकते थे: अब उन्हें सरकारी बैंकों के साथ बिल्कुल भी व्यवहार करने की ज़रुरत नहीं थी.



इस सब्जी विक्रेता महिला ने सेवा बैंक की मदद से अपना घर खरीदा.

ऋण राशि व्यापक रूप से भिन्न होती थी, वो 50 रुपये से 10,000 रुपये और उससे अधिक हो सकती थी. 1980 से पहले ज्यादातर कर्ज 500 रुपये या उससे कम के होते थे. 1990 तक एक सामान्य ऋण राशि 2,000 से 3,000 रुपये के बीच थी.

इला ने देखा कि SEWA बैंक ऋण कितना उपयोगी था - यहां तक कि वो जीवनरक्षक भी हो सकता है, जैसा कि उन्होंने लेखक कलिमा रोज़ को बताया:

1975 में जब बैंक ज्यादा जोखिम नहीं उठा रहे थे, तब एक सब्जी विक्रेता आई. वो इतने आर्थिक दबाव के कारण बिल्कुल हताश हो गई थी. उसका पति एक बेरोजगार कपड़ा मजदूर था, पर वो हर दिन किसी-न-किसी तरह घूम-घूमकर अपना पेट भर लेता था. लेकिन उसके बच्चों की बहुत मुश्किल स्थिति थी. बैंक ने उसे 50 रुपये का ऋण देने का फैसला किया. फिर कोई उसके साथ धनिया, पुदीना, अदरक, लहसुन और मिर्च खरीदने गया. उस दिन SEWA ने उसके बच्चों की देखभाल की, जो बीमार और भूखे थे. उसने उस दिन सब्ज़ी बेचकर 6 रुपये का मुनाफा कमाया और उस रात घर का खाना ले गई. उसने दिन-ब-दिन अपना व्यवसाय बढ़ाना जारी रखा, और अगले सप्ताह उसने 51 रुपये चुकाए. बैंक के लिए यह कोई जोखिम का सौदा नहीं था, पर उसका मतलब उस महिला के लिए जीवन या मृत्यु हो सकती थी. उसके बाद हमने उन 50 रुपये का कर्ज कई महिलाओं को दिया.

बैंक फल-फूल रहा था, लेकिन कुछ समस्याएं भी थीं. जबकि अधिकांश महिलायें अपने ऋणों का नियमित भुगतान करती थीं कई महिलाओं को अपना ऋण चुकाने में परेशानी होती थी. जब SEWA कार्यकर्ता एक सदस्य के घर गए और उससे पूछा कि वो भुगतान क्यों नहीं कर पाई, तो उन्हें पता चल सकता है कि उसके पति ने शराब खरीदने के लिए पैसे चुरा लिए थे, या परिवार में किसी बीमारी ने उसे क़र्ज़ चुकाने से रोका था, या यहां तक कि एक महिला की बच्चे के जन्म के दौरान मृत्यु हो गई थी.

इला ने महसूस किया कि कई SEWA सदस्यों को बैंक ऋणों का भुगतान करने में सक्षम इसलिए नहीं थे क्योंकि उन्हें उसके पहले अपने जीवन में मदद की ज़रूरत थी. एक समस्या यह थी कि जब किसी महिला को बच्चा होता था, तो उसे अक्सर संक्रमण हो जाता था और उसकी मृत्यु हो जाती थी क्योंकि बच्चे का जन्म अस्वच्छ परिस्थितियों में होता था. और अगर उसे कोई संक्रमण नहीं होता, तो भी वो आमतौर पर बच्चे के जन्म के बाद आराम करने के लिए कुछ दिनों से अधिक समय नहीं निकाल सकती थी: उसे पैसे कमाने के लिए फिर से काम करना शुरू करना पड़ता था. इला को लगा कि SEWA के सदस्यों को किसी प्रकार के बीमा की आवश्यकता थी जिसकी रकम उन्हें संतान होने पर मिल सके.

इला ने सरकार और बीमा कंपनियों द्वारा SEWA सदस्यों को बीमा दिलवाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिली. कोई भी बीमा कंपनी गरीब महिलाओं का बीमा नहीं करना चाहती थी. कंपनियों को लगता था कि वे पैसे खो देंगे क्योंकि महिलाएं बीमा के लिए ज्यादा भुगतान नहीं कर पाएंगी, और अगर वे बहुत बीमार हो जाएंगी तो कंपनियों को उन्हें बहुत सारा पैसा देना होगा.

इसलिए, 1975 में इला ने सुझाव दिया कि प्रत्येक SEWA सदस्य, SEWA महिला ट्रस्ट फंड शुरू करने के लिए SEWA को एक दिन का वेतन दान दें. इस पैसे का उपयोग करते हुए, SEWA ने नई माताओं को पैसे दिए ताकि वे अधिक समय तक घर पर रह सकें. साथ में उन्हें एक "सुरक्षित डिलीवरी किट" भी दी जिसका स्थानीय दाई उपयोग कर सके. उसमें साथ में घी का एक डिब्बा भी था - एक पारंपरिक उच्च कैलोरी वाला भोजन जो भारत में नई माताएँ खाती हैं.

SEWA ने सदस्यों को कच्चे माल के लिए सबसे सस्ती सप्लाई खोजने में मदद की. अब समान व्यवसाय के सदस्य एक-साथ मिलकर थोक में, कच्चा माल सस्ती कीमत पर खरीदने लगे. SEWA ने उन्हें उनके व्यापार के उपकरण और औज़ार, जैसे चरखा, बुनाई करघे, ठेले, सिलाई मशीन, या बढ़ईगीरी उपकरण खरीदने के लिए सरकारी धन का लाभ उठाने में मदद की.

इन सभी चीजों ने SEWA सदस्यों को अपना ऋण चुकाने में मदद की. लेकिन अभी भी एक और समस्या थी: किसी महिला का पति या बेटे, उसके कर्ज के पैसे चुरा सकते थे. इला ने महसूस किया कि SEWA सदस्यों को अपने ऋण के पैसे को सुरक्षित रखने के लिए बचत खातों की आवश्यकता थी.

लेकिन कोई गरीब महिला जिसके पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था, क्या वो पैसे बचा सकती थी? इला जानती थी कि गरीबी के बावजूद उनमें से कुछ महिलाएं पहले से ही पैसे बचा रही थीं. वे घर में टिन के डिब्बे में एक बार में एक-दो रुपये जमा कर रही थीं. महिलाओं को अधिक बचत करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, SEWA ने एक छोटे टेलीविजन सेट के आकार का एक गुल्लक डिजाइन किया (क्योंकि उस समय भारत में टेलीविजन एक नई चीज थी). गुल्लक SEWA सदस्यों ने बनाए थे जो टिन का काम करते थे.

इला चाहती थीं कि SEWA बैंक, सदस्यों के लिए सुविधाजनक हो. महिलाओं को बैंक में जाने के बजाय बैंक को महिलाओं के पास क्यों नहीं लाया जाए? इसलिए, हर हफ्ते, एक SEWA कार्यकर्ता, विभिन्न मोहल्लों और बाजारों का दौरा करता था, महिलाओं द्वारा गुल्लक में बचाए गए धन को इकट्ठा करता था, क़र्ज़ का पैसा वापिस लेता और महिलाओं की पासबुक भरकर, उन्हें यह बताता था कि उन्होंने कितना बचाया था और उन पर कितना पैसा बकाया था. महिलाएं अपनी बचत का उपयोग डॉक्टर के बिल और दवा के लिए, घर की मरम्मत के लिए, या बेटी की शादी के लिए कर सकती थीं.



सेवा बैंक के काउंटर पर इंतजार कर रही महिलाएं.

हालाँकि बैंक के बाहर बहुत सारी बैंकिंग होती थी, फिर भी SEWA बैंक के कार्यालय में हर दिन भीड़-भाड़, शोर-शराबा होता था. वो एक ऐसा स्थान था जहाँ महिलाएँ मिल सकती थीं, समाचारों का आदान-प्रदान कर सकती थीं, एक कप चाय पी सकती थीं और आराम कर सकती थीं. SEWA के सदस्य, SEWA बैंक को अपना "मायका" बुलाती थीं. भारत में विवाहित महिलाएं परंपरागत रूप से अपने पति के परिवार के साथ रहती हैं, और बहू को आमतौर पर परिवार में निम्नतम दर्जा प्राप्त होता है. इसके विपरीत, महिला की माँ का घर "मायका" एक ऐसी जगह होती है जहाँ उसका खुले दिल से स्वागत किया जाता है. इला ने लेखक कलिमा रोज़ को समझाया. "मायके के दरवाजे बेटियों के लिए हमेशा खुले रहते हैं. वो एक ऐसी जगह होती है जहाँ महिलाएं अपनी समस्याओं और कठिनाइयों, अपने सपनों और आकांक्षाओं को व्यक्त कर सकती है. ... माँ उनकी बात को गंभीरता से लेती है और उनकी समस्याओं को सुलझाने में मदद करती है. . . . . इसलिए शुरू से ही हमने अपने बैंक में एक अनौपचारिक माहौल बनाए रखा. वहां पर महिलाएं कभी भी अपना काम ख़त्म करने की जल्दी में नहीं होती हैं, क्योंकि उन्हें वहां पर अपनी अन्य बहनों से मिलना अच्छा लगता है."

कभी-कभी यह अनौपचारिक माहौल इला और अन्य मध्यमवर्गीय सेवा कार्यकर्ताओं के लिए कष्टप्रद होता था. चूंकि अधिकांश SEWA सदस्यों के घरों में स्नानघर नहीं थे, इसलिए वे SEWA के बाथरूम का उपयोग करने का आनंद लेती थीं. लेकिन उन्हें बाथरूम का इस्तेमाल करना और उसे साफ रखना नहीं आता था. वो आईने के सामने अपने बालों में कंघी करती थीं, जिससे बालों की लंबी लड़े हर जगह पड़ी रहती थीं. वो शौचालय का इस्तेमाल करती थीं लेकिन उन्हें फ्लश नहीं करती थीं. इला ने कहा, "उन्होंने शौचालय इतना गंदा कर दिया था - उससे मैं बहुत परेशान थी, और TLA में भी हर कोई शिकायत कर रहा था." अंत में, इला ने महिलाओं को फ्लशिंग और बाथरूम को साफ रखने का सबक सिखाया.

बैंक, महिलाओं को अधिक पैसा कमाने और काम करने की बेहतर स्थिति हासिल करने में मदद करने में सफल रहा. 1970 के दशक के अंत तक, SEWA बैंक की मदद से कई महिलायें उत्पादन के अपने उपकरण खरीद पाईं, साहूकार के कर्ज चुका पाईं और ऋण के बदले में एक स्थानीय साहूकार के पास गिरवी रखे आभूषणों को छुड़ा पाईं. इसके अलावा, कुछ महिलाओं ने अपने कारोबार का भी विस्तार किया. उदाहरण के लिए, एक महिला जो बेचने के लिए गुलाब उगाती थी, वो अपने सिर पर पहनने के लिए एक लैंप खरीद पाई, जिसकी मदद से वो रात में अपने दोनों हाथों से गुलाब तोड़ सकती थी.

1990 के SEWA सर्वेक्षण में, महिलाओं ने अपनी SEWA सदस्यता के कई लाभों को सूचीबद्ध किया: 73 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि उनकी आय में वृद्धि हुई थी: 76 प्रतिशत को नियमित आय मिल रही थी; 75 प्रतिशत अधिक काम पाने में सक्षम थीं: 44 प्रतिशत के पास कच्चे माल की नियमित और सस्ती सप्लाई थी; 23 प्रतिशत के पास अपने स्वयं के उपकरण और औज़ार थे; 19 प्रतिशत के पास काम करने की जगह थी; और 17 प्रतिशत ने कोई नया व्यवसाय शुरू किया था.

इला को इस बात पर बहुत गर्व था कि SEWA बैंक का पुनर्भुगतान का रिकॉर्ड सरकारी बैंकों से कहीं बेहतर था. उदाहरण के लिए, 1980 में, SEWA बैंक का 87 प्रतिशत क़र्ज़ समय पर चुकाया गया था, जबकि बैंक ऑफ इंडिया द्वारा गरीब महिलाओं को दिया केवल 16 प्रतिशत ऋण ही वापिस मिला था.

पुनर्भुगतान की इस उच्च दर का मुख्य कारण यह था कि SEWA सदस्यों ने अपने स्वयं अपने बैंक को नियंत्रित किया था. उन्हें पता था कि जो ऋण वो दे रहे थे वो पूँजी बैंक में रखी गई उनकी अपनी ही बचत से आई थी. यदि कोई ऋण वापस नहीं करता, तो उससे SEWA के अन्य सदस्य बहुत चिंतित होते - क्योंकि वो उनका अपना पैसा था जिसे उन्होंने उधार दिया था! सदस्य धीरे से उस महिला से पूछते थे कि वो भुगतान क्यों नहीं कर सकी थी और नियमित भुगतान करने में उसकी मदद करते थे.

महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक क्या था?

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) दुनिया के सभी देशों के प्रतिनिधियों से बना एक संगठन है. इसका गठन 1945 में, द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, युद्ध को रोकने और दुनिया में शांति बनाए रखने में मदद करने के लिए किया गया था. संयुक्त राष्ट्र - रोग, अकाल और गरीबी से पीड़ित देशों की भी मदद करता है.

संयुक्त राष्ट्र ने 1975-1985 को महिलाओं का दशक घोषित किया क्योंकि कई विश्व नेताओं ने महसूस किया कि अलग-अलग देशों और संयुक्त राष्ट्र द्वारा महिलाओं की चिंताओं की अनदेखी की जा रही थी. इस दशक के दौरान संयुक्त राष्ट्र ने महिलाओं के मुद्दों पर दुनिया भर के नेताओं के लिए तीन सम्मेलनों को प्रायोजित किया. सम्मेलनों ने इन महिलाओं को अपने विचारों को साझा करने का मौका दिया कि महिलाओं के खिलाफ भेदभाव को कैसे समाप्त किया जाए और महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, आय और स्थिति को बेहतर बनाने में मदद की जाए. इसके अलावा, देशों ने महिलाओं के मुद्दों के बारे में अपने स्वयं के सम्मेलन और कार्यक्रम आयोजित किए, जिससे लोगों को प्रत्येक देश में महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं के बारे में जानने का मौका मिला.

महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक ने कई लोगों को दुनिया भर में महिलाओं के सामने आने वाली कठिन समस्याओं से अवगत कराया, और इन समस्याओं को हल करने को कुछ प्राथमिकता दी. हालांकि, महिलाओं को सुरक्षा, सम्मान और समानता मिले इससे पहले संयुक्त राष्ट्र और स्थानीय महिला संगठनों को अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है.

इला, बाएं से दूसरे स्थान पर, "राइट लाइवलीहुड" अवार्ड प्राप्त करती हुई. यह अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार उन लोगों को सम्मानित करता है जो वंचितों की सहायता के लिए काम करते हैं.



कई सालों तक इला को इस बात का एहसास नहीं था कि वो और SEWA जो कर रहे थे वो दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण था. पहली बार उन्हें यह बात 1975 में समझ में आई, जब उन्होंने महिलाओं पर संयुक्त राष्ट्र के प्रथम विश्व सम्मेलन में भाग लेने के लिए मेक्सिको सिटी की यात्रा की. यह संयुक्त राष्ट्र दशक की शुरुआत के लिए महिलाओं के लिए, एक सम्मेलन था, और इस सम्मेलन के दौरान इला और SEWA ने अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया.

"उस समय, मैं छोटी थी और हम बिना किसी ब्लूप्रिंट या मॉडल के कुछ करने की कोशिश कर रहे थे," इला ने समझाया. "हमारे सभी विचार SEWA सदस्यों से और मेरी अपनी आत्म-खोज से आ रहे थे. इसलिए, उस समय हमारे लिए उस तरह का ध्यान और मान्यता प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण था."

1975 के सम्मेलन में, इला के काम से प्रेरित लोगों में से एक अमेरिकी निवेशका - मिशेला वॉल्श थीं. वॉल्श ने दुनिया भर की महिलाओं को ऋण प्राप्त करने में मदद करने के लिए एक संगठन, महिला विश्व बैंकिंग शुरू करने का फैसला किया.

लेकिन 1975 के सम्मेलन में SEWA का ध्यान आकर्षित करने के बाद भी, इला को अभी भी इस बात का पूरा महत्व समझ नहीं आया था कि वो क्या कर रही थीं. 1976 में इला ने अपने पसंदीदा लेखकों में से एक, चीनी उपन्यासकार हान सुयिन को, TLA और SEWA को देखने के लिए आमंत्रित किया. हान सुयिन ने इला को बताया कि SEWA का काम गरीब लोगों के लिए TLA के काम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण था.

"मैं हैरान थी," इला ने कहा. "मुझे पहले कभी इसका एहसास नहीं हुआ था. उस समय मैं इतनी व्यस्त थी कि मेरे पास उसके बारे में सोचने का समय नहीं था." इला, SEWA को TLA की एक शाखा मानती थीं जो एक बड़ा, सम्मानित संगठन था, भारत की सबसे पुरानी लेबर यूनियन थी.

लेकिन बहुत जल्द ही पूरी दुनिया के लोग हान सुयिन से सहमत होने लगे. 1977 में इला को फिलीपींस द्वारा "स्वरोज़गार महिलाओं के कार्यबल को गांधीवादी सिद्धांत द्वारा वास्तविकता बनाने" के लिए दिए गए प्रतिष्ठित "रेमन मैग्सेसे पुरस्कार" से सम्मानित किया. इला ने 20,000 डॉलर की यह पुरस्कार राशि SEWA महिला ट्रस्ट को दान कर दी. उससे संस्था अपनी सेवाओं का विस्तार करने में सक्षम हुई. ट्रस्ट ने उन नई विधवाओं को पैसा दिया जो परंपरागत रूप से पति की मृत्यु के बाद एक महीने तक काम नहीं करती थीं. ट्रस्ट ने चाइल्ड केयर सेंटर और नर्सरी स्कूल भी शुरू किए, ताकि SEWA सदस्यों के पास काम करने के दौरान अपने बच्चों को छोड़ने के लिए कोई सुरक्षित जगह हो.

मैग्सेसे पुरस्कार SEWA के लिए एक महान सम्मान था और एक बड़ी मदद थी. उसके बाद उन्हें कई और पुरस्कार मिले, जैसे स्वीडिश संसद का दिया गया "राइट लाइवलीहुड अवार्ड" (जिसे "वैकल्पिक नोबेल शांति पुरस्कार" भी कहा जाता है), जो इला ने 1984 में जीता. 1990 में पेरिस में फेम एलायंस से "वीमेन एंड क्रिएशन हॉनर" और 1994 में केयर से अंतर्राष्ट्रीय मानवीय पुरस्कार मिला.

लेकिन विडंबना यह हुई कि मैग्सेसे पुरस्कार के बाद, इला और TLA के नेतृत्व के बीच परेशानियों की शुरुआत हुई. इन परेशानियों ने अंततः दोनों संगठनों को अलग होने के लिए मज़बूर किया. यह चीज़ें बाद में इला को अपने घर और समुदाय से उखड़ने का कारण बनीं.

अध्याय 7

SEWA महिलाएं अपने ही दम पर

अप्रैल 1981 में, इला अपनी रोम यात्रा से लौटीं. जब उन्होंने अपने कार्यालय में प्रवेश किया, तो उन्होंने पाया कि उनका टेलीफोन हटा दिया गया था. फिर उन्होंने अपने डेस्क पर TLA नेतृत्व का एक पत्र देखा. पत्र में लिखा था कि चूंकि उन्होंने रोम जाने के लिए औपचारिक अनुमति नहीं मांगी थी, इसलिए उनकी गैरहाज़िरी के लिए उनका वेतन काटा जाएगा.

इला परेशान थीं. उन्होंने TLA को पुनर्विचार करने के लिए एक छोटा नोट लिखा. इसके बजाय, उन्हें निम्नलिखित "सलाह" प्राप्त हुई, जो उन्होंने भारतीय पत्रिका डेबोनेयर के अपने इंटरव्यू में बताई. TLA नेताओं ने लिखा था, "चूंकि आप अपनी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं में इतनी व्यस्त हैं, इसलिए अब आप TLA छोड़ सकती हैं, और SEWA को भी अपने साथ ले जा सकती हैं, ताकि हम आपकी नौकरी और कार्यालय की जगह किसी और को दे सकें."

"मैं बहुत हैरान हुई," इला ने याद करते हुए कहा. "मैं घर गई. मैं रोई." यह पहली बार नहीं था जब इला का TLA नेतृत्व के साथ टकराव हुआ था, लेकिन उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उन्हें और SEWA को इस तरह बाहर कर दिया जाएगा. इला TLA नेताओं को अपना गुरु मानती थीं और अपने माता-पिता की तरह उनका सम्मान करती थीं.

इला के पति ने यह कहकर उन्हें सांत्वना देने की कोशिश की कि TLA से अलग होने के बाद इला और SEWA को अब और अधिक स्वतंत्रता मिलेगी. लेकिन इला नहीं चाहती थी कि TLA से बाहर किए जाने से SEWA को चोट पहुंचे, इसलिए वो काम पर वापस गयीं और उन्होंने TLA नेताओं से माफी मांगी. उनका वेतन बहाल कर दिया गया. लेकिन 1 मई को उन्हें एक और पत्र मिला जिसमें उनसे जाने के लिए कहा गया.

इला की TLA के साथ परेशानी तब शुरू हुई जब उन्हें 1977 में मैगसेसे पुरस्कार मिला. कुछ TLA नेता असहज थे क्योंकि इतने सारे फोटोग्राफर इला की तस्वीरें लेने आए थे, और इतने पत्रकारों ने उनका साक्षात्कार लिया था. जब वो पुरस्कार स्वीकार करने के बाद फिलीपींस से वापस आईं, तो कुछ TLA नेता परेशान थे क्योंकि इला ने अपने स्वीकृति भाषण में उन्हें पर्याप्त धन्यवाद नहीं दिया था, हालांकि उन्होंने सामान्य रूप से TLA को धन्यवाद दिया था.

उस समय, 1977 में, इला को यह समझ में नहीं आया कि TLA नेता इतनी छोटी सी बात को लेकर इतने परेशान क्यों थे. लेकिन सालों बाद उन्हें लगा कि TLA नेताओं को उनसे इसलिए ईर्ष्या थी क्योंकि SEWA की महिलाओं को, TLA नेताओं की तुलना में इतना अधिक ध्यान मिल रहा था. भारत में, और दुनिया के अधिकांश अन्य हिस्सों की तरह ही, पुरुष नेता बनने और ध्यान आकर्षित करने की उम्मीद करते हैं, और वे महिलाओं से पृष्ठभूमि में रहने की उम्मीद करते हैं. जब दुनिया भर के लोग SEWA आंदोलन में दिलचस्पी लेने लगे, तो TLA नेता SEWA द्वारा प्राप्त ध्यान को सहन नहीं कर सके.

मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त करने के बाद, इला को कई अन्य देशों में जाने का, SEWA के बारे में बताने का और अन्य देशों को गरीब स्वरोजगार महिलाओं के लिए इसी तरह के कार्यक्रम विकसित करने में मदद करने के लिए आमंत्रित किया गया था.

TLA नेताओं ने उन्हें इन यात्राओं पर जाने की अनुमति दी, लेकिन एक लंबे संघर्ष के बाद, और वो भी केवल अंतिम समय पर. इला को ऐसा लग रहा था कि TLA नेताओं को इस बात से जलन हो रही थी कि वो विदेश जा रही थीं. उन्होंने इला से कहा कि वो TLA की महिला विंग में अपने काम पर पर्याप्त समय नहीं बिता रही थीं. इला उनसे असहमत थीं. इला ने महसूस किया कि महिला विंग उसकी अनुपस्थिति से आहत नहीं था. उन्हें अपने सहकर्मियों पर पूरा भरोसा था. और उन्हें समझ नहीं आया कि TLA नेताओं को उनकी यात्राओं से जलन क्यों हो रही थी. कोई फर्क नहीं पड़ता कि वो कहाँ जाती थीं, वो प्रतिदिन बारह से चौदह घंटे काम करती थीं. उन्हें आराम करने का समय ही नहीं मिलता था.

इन संघर्षों और समस्याओं के बावजूद, SEWA, TLA का हिस्सा बना रहा. इला ने कभी TLA छोड़ने के बारे में नहीं सोचा. वो TLA को अपना घर समझती थीं. फिर, 1981 के फरवरी में, इला ने कुछ ऐसा किया जिससे TLA नेता बहुत नाराज़ हुए. इला ने एक ऐसे मुद्दे पर बात की जिसके बारे में वो दृढ़ता से महसूस करती थीं, यह जानते हुए कि TLA उनकी स्थिति से सहमत नहीं था. यह TLA नेतृत्व के लिए आखिरी तिनका साबित हुआ.

1981 के पहले तीन महीनों के दौरान अहमदाबाद शहर दंगों, हिंसा और मजदूरों की हड़तालों से लगभग पंगु हो गया था. यह सब इसलिए शुरू हुआ क्योंकि उच्च जाति के मेडिकल छात्रों के एक समूह ने इस बात का विरोध करना शुरू किया कि प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में, हरिजनों के लिए कुछ सीटें आरक्षित की गयीं थीं, ताकि उन्हें भेदभाव को दूर करने में मदद मिल सके. जिस तरह से अमेरिका में नस्लवाद एक समस्या है, उसी तरह भारत में जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव एक बड़ी समस्या है.

मेडिकल छात्रों के विरोध ने पूरे शहर में हरिजनों के खिलाफ हिंसा भड़का दी - ऐसी हिंसा जिसका मेडिकल कॉलेज की सीटों से कोई लेना-देना नहीं था. दुकानों को लूटा गया, बसों को जलाया गया, और लोगों को पीटा गया या जलाया गया और भीड़ द्वारा हरिजनों पर तेजाब से हमला किया गया. डॉक्टरों ने मेडिकल छात्रों के समर्थन में काम करना बंद कर दिया और कपड़ा मज़दूरों ने हरिजनों के समर्थन में काम करना बंद कर दिया. फिर शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया.

TLA ने इस मुद्दे पर किसी भी पक्ष का साथ नहीं देने का फैसला लिया, हालांकि उनके कई सदस्य हरिजन थे. कई TLA नेता राष्ट्रीय श्रम संगठन के नेता भी थे, जिसमें मध्यम वर्ग के सदस्य भी थे जो हरिजन छात्र आरक्षण के विरोध में थे.

लेकिन इला ने महसूस किया कि SEWA को हरिजनों का समर्थन करने की आवश्यकता थी, क्योंकि SEWA के कई सदस्य हरिजन थे, और इसलिए भी कि हिंसा और कर्फ्यू SEWA सदस्यों को सामान्य रूप से काम करने और जीवन यापन करने से रोक रहे थे. इसलिए, इला और SEWA के सदस्यों ने फरवरी के अंत में एक प्रार्थना सभा आयोजित करने का फैसला किया. बैठक में इला ने SEWA सदस्यों को स्थिति के बारे में बताया और उन्होंने एक प्रस्ताव पारित कर अहमदाबाद में सभी लोगों से शहर में शांति के लिए काम करने को कहा.

दो दिन बाद, इला को एक गांधीवादी संगठन, सर्व सेवा संघ द्वारा आयोजित एक शांति बैठक में आमंत्रित किया गया. उन्होंने उसमें भाग लिया और शांति की आवश्यकता और हरिजनों की रक्षा करने की आवश्यकता के बारे में बात की और मेडिकल छात्रों के विरोध को सही परिप्रेक्ष्य में रखने की कोशिश की. गरीब महिलाओं के साथ अपने काम के दौरान, इला को इतना पता चल गया था कि कई डॉक्टरों को प्रसव के दौरान गरीब महिलाओं की उच्च मृत्यु दर की कोई परवाह नहीं थी.



लंबी यात्राओं के बाद, इला को हमेशा पत्रों का विशाल ढेर मिलता था, जिस पर उन्हें तत्काल ध्यान देना होता था. लेकिन उन्हें कभी भी TLA नेतृत्व से कभी भी अस्वीकृति का पत्र मिलने की उम्मीद नहीं थी.

"मेरी कड़वाहट बह निकली." इला ने बाद में डेबोनेयर पत्रिका को बताया, "मैंने कहा, 'आप जिस बारे में आंदोलन कर रहे हैं वो वास्तविक समस्या नहीं है. असली समस्या ... ये मौतें हैं, चिकित्सा और देखभाल है. आज भी नवजात शिशु की नाड़ को एक दरांती से काटा जाता है जो लंबी घास या अनाज काटने के लिए इस्तेमाल की जाती है. और उस दरांती को आग में निष्फल भी नहीं किया जाता है, हम अभी तक गांव की दाई के हाथ में एक उचित चाकू या कैंची तक नहीं पहुंचा पाए हैं." इसलिए, मैंने मेडिकल छात्रों और डॉक्टरों से कहा! ... "आप लोग किस बारे में लड़ रहे हैं, अपनी चंद सीटों के लिए! आप अपने छोटे-मोटे झगड़ों में पूरे राज्य को शामिल कर रहे हैं? यह इतना अप्रासंगिक है!"

इला की टिप्पणी को अखबारों और टेलीविजन पर उद्धृत किया गया और बैठक के बाद तीसरी रात को लोगों ने इला के घर पर हमला कर दिया. इला और उनका परिवार डर गया क्योंकि वे अंदर अकेले थे और उन्होंने अपने घर पर पत्थरबाजी की आवाजें सुनीं. छह रातों तक पत्थरबाजी चलती रही.

इला ने आखिरकार उस आतंक को गहराई से समझा, जिसके तहत SEWA के हरिजन सदस्य महीनों से जी रहे थे. जैसा कि उन्होंने लेखक कलिमा रोज को बताया. "वे सदस्य महीनों से मुझे हिंसा के आतंक के बारे में बता रहे थे, और मुझे उनके साथ सहानुभूति थी. लेकिन अब मैं डर से घिरी, रातों की हराम नींद को समझ गई थी - वो अंधेरे में फेंके हुए किसी अज्ञात व्यक्ति से पत्थरों से डरने का आतंक और क्रोध था."

दो रातों के बाद उन्होंने घर की सारी बत्तियाँ बुझा दीं. फिर इला के पति और उनका इक्कीस वर्षीय पुत्र मिहिर, अंधेरे में बाहर गए, यह देखने के लिए कि कौन पत्थर फेंक रहा था. वे यह जानकर चौंक गए कि कुछ पत्थर फेंकने वाले उनके अपने पड़ोस के लड़के थे - वे लड़के जो मिहिर के साथ बचपन में खेलते थे!

पत्थरबाजी और गाली-गलौज खत्म नहीं हुई. अब पड़ोस में कोई भी इला या उनके परिवार से बात नहीं करता था. यहाँ तक कि इला के कुछ रिश्तेदार भी उसकी बात से सहमत नहीं थे और इला का उनके घरों में उतना स्वागत नहीं था. यद्यपि इला मजदूर वर्ग के बीच लोकप्रिय थीं, इला को TLA नेतृत्व द्वारा डांटा गया था. हालाँकि, उन्होंने महसूस किया कि उसने सही काम किया था, और SEWA सदस्यों ने उसका समर्थन किया था. लेकिन TLA नेतृत्व संघर्ष से थक गया था और ईर्ष्या से भस्म हो गया था. अंत में, उन्होंने जोर देकर इला और SEWA को TLA छोड़ देने को कहा.

TLA से बाहर किए जाने के कारण पहले SEWA के लिए कुछ समस्याएँ आईं. SEWA की अपनी एक इमारत थी जिसे उन्होंने 1980 में बनाया था और जिसे वे बैठकों के लिए इस्तेमाल करते थे, लेकिन अब उन्हें अपने सभी कार्यालयों के लिए और जगह तलाशनी पड़ी. उन्हें अपने कुछ सदस्यों के लिए कच्चे माल के लिए नए अनुबंधों पर भी बातचीत करनी पड़ी.

साथ में TLA ने SEWA बैंक से अपनी जमा राशि - 700,000 रुपये वापस ले ली. यह उस समय SEWA बैंक की कुल जमा राशि का 25 प्रतिशत से अधिक था. SEWA को TLA की जमा पूँजी की भरपाई के लिए अतिरिक्त धन की तलाश करनी पड़ी. "यह हमारे लिए एक कठिन समय था," इला ने याद किया. "लेकिन हम TLA को दिखाने के लिए दृढ़ थे कि हम उनके बिना जीवित रह सकते थे." SEWA के सदस्य और कर्मचारी, अनेक लोगों से राशि जमा करके लाए - रिश्तेदार, दोस्त, वो बचत जो उन्होंने घर पर रखी थी. छह महीने के भीतर पैसे की भरपाई हो गई.

लेकिन जैसे कि इला के पति ने भविष्यवाणी की थी, वो SEWA के लिए स्वतंत्रता का समय था. "हालांकि जिस तरह से हमें बाहर निकाला गया था, वो बहुत अपमानजनक था. वास्तव में, हम अब खुद को बहुत शक्तिशाली महसूस कर रहे थे, स्वतंत्रता की एक अविश्वसनीय भावना महसूस कर रहे थे," इला ने लेखक कलिमा रोज को बताया. "हमें वो एक बेटी के धर्म संघर्ष की तरह लगा. हमने अपना घोंसला छोड़ दिया था."

SEWA स्टोर में ग्राहक टोकरी, कपड़े, पर्स, सजावटी कपड़े, और बहुत कुछ खरीद सकते हैं. सभी SEWA महिलाओं द्वारा बनाए गए हैं. एक आदमी बांस की कचरे की टोकरी की कीमत पर मोलभाव कर रहा है.



इला और SEWA सदस्यों ने SEWA को एक सर्व-महिला संगठन बनाने का फैसला किया था. यह आंशिक रूप से इसलिए था क्योंकि वे TLA नेताओं से नाराज़ थे. लेकिन इला ने यह भी महसूस किया कि महिलाएं अधिक आत्मविश्वासी होंगी और अधिक नेतृत्व की भूमिका निभाएंगी यदि संगठन में केवल महिलायें ही हों. एलिज़ाबेथ बुमिलर "मे यू बी द मदर ऑफ़ ए हंड्रेड सन्स: ए जर्नी अमंग द वीमेन ऑफ़ इंडिया" नामक पुस्तक के लिए इला का साक्षात्कार कर रही थीं, तब इला ने कहा, "भले ही हम अपनी बैठकों में पुरुषों को वोट देने का अधिकार न दें, पुरुषों की उपस्थिति, विशेष रूप से उनके अपने परिवार की महिलाओं को पीछे हटने पर मजबूर कर देती है."

इला ने स्वरोज़गार महिलाओं को SEWA का नेतृत्व करने में मदद करने के बारे में दृढ़ता से महसूस किया. उन्होंने महसूस किया कि वो और अन्य मध्यम वर्ग की महिलाएं स्वरोज़गार महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं, या उन समाधानों को सही मायने में नहीं समझ सकती थीं. "हमें महिला नेतृत्व का स्रोत कहां मिलेगा?" इला ने TLA के साथ अपने शुरुआती वर्षों के दौरान अनुसूया साराभाई से पूछा था. अनुसूया जवाब दिया. "अपने सदस्यों में."

इला ने SEWA में भी वही किया: वो हमेशा ऐसी स्वरोज़गार महिलाओं की तलाश में रहती थीं, जो मुखर और भावुक हों, ताकि वे उन्हें उनके ही उद्योग की लीडरशिप के लिए प्रशिक्षित कर सकें. ये महिलाएं SEWA के बारे में अन्य उद्योगों में कार्य करने वाली अन्य महिलाओं को शिक्षित करने में मदद करेंगी. वे अधिक सदस्यों को लाएंगी और आवश्यकता पड़ने पर विरोध, हड़ताल या रैलियों का आयोजन भी करेंगी. इसके अलावा, कुछ स्वरोज़गार महिलाएँ SEWA की "अधिकारी" थीं (जैसे चंदा पापू, पुराने कपड़ों की डीलर, जो कुछ वर्षों के लिए SEWA की उपाध्यक्ष थीं) और SEWA में निर्णय लेने में मदद करती थीं.

लेकिन इला उस दिन की प्रतीक्षा थी जब स्वरोज़गार महिलाएं SEWA को चला सकें. इसलिए उन्होंने शुरू में अनुभवहीन, अशिक्षित महिलाओं को नेतृत्व की जिम्मेदारी नहीं सौंपी. उन्होंने महसूस किया कि स्वरोजगार महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए तैयार करते समय, शिक्षित और अनुभवी महिलाओं को भी जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी. शोधकर्ता जेनिफर सेबस्टैड के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा, "हमें सत्ता और नियंत्रण हथियाने के लिए सावधान रहना होगा, लेकिन हमें अंतिम जिम्मेदारी लेने के लिए भी तैयार रहना चाहिए. केवल जागरूकता पैदा करना ही पर्याप्त नहीं होगा. हमें नेताओं की तैयारी भी करनी चाहिए. लेकिन जब तक वे सत्ता संभालने के लिए तैयार नहीं होती हैं, हमें कार्रवाई की अंतिम जिम्मेदारी लेनी चाहिए. अगर हम वैसा नहीं करेंगे तो हम असफल होंगे. यदि गरीबों के पास पहले से ही वो क्षमता होती, तो उनका इतने लंबे समय तक शोषण नहीं होता."

SEWA ने SEWA अकादमी के माध्यम से, नए नेताओं को प्रशिक्षित किया, जिसने उन्हें आयोजन, टीम वर्क और अन्य कौशल में प्रशिक्षित किया. SEWA ने नए नेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए वीडियो का भी उपयोग किया. 1984 में इला ने न्यूयॉर्क शहर के वीडियो निर्माता मार्था स्टुअर्ट को अहमदाबाद आने और SEWA सदस्यों को वीडियो कैमरा चलाने और सरल वीडियो टेप बनाने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए कहा.

चूंकि कई महिलाएं अनपढ़ थीं, इसलिए उन्हें पूरी प्रक्रिया याद रखनी पड़ती थी. इन SEWA सदस्यों ने नए सदस्यों को बैंक के बारे में सिखाने के लिए, महिलाओं को सहकारी समिति चलाने का तरीका सिखाने के लिए, और महिलाओं को यह दिखाने के लिए कि कैसे एक प्रदर्शन या रैली का आयोजन किया जाता है, वीडियो टेप बनाए. इसके अलावा, SEWA ने झुग्गी बस्तियों में गरीबी में रहने वाले अपने सदस्यों की पीड़ा को डॉक्यूमेंट करने के लिए भी वीडियो बनाए, और उन्होंने उन वीडियो को अपनी लड़ाई के दौरान सबूत के रूप में इस्तेमाल किया. उदाहरण के लिए, उन्होंने सरकारी अधिकारियों को एक झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र में खुले सीवरों का वीडियो दिखाया, और उसके बाद सरकार ने अंततः समस्याओं को ठीक करना शुरू कर दिया. भारतीय टेलीविज़न पर कई SEWA वीडियो दिखाए गए, जिन्होंने भारतीय लोगों को स्वरोज़गार महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं के बारे में शिक्षित करने में मदद की.

इला उन सामाजिक परंपराओं के बारे में SEWA सदस्यों की चेतना को भी बढ़ाना चाहती थी जो उन्हें उत्पीड़ित में रखती थीं. उदाहरण के लिए, जब अहमदाबाद के आसपास के ग्रामीण इलाकों में SEWA का आयोजन शुरू हुआ, तो सबसे बड़ी समस्या यह थी कि किसी गरीब महिला के परिवार के स्वामित्व वाली भूमि को अक्सर ऋण के बदले स्थानीय साहूकार के पास गिरवी रख दिया जाता था.



एक SEWA सदस्य, SEWA स्टोर के उद्घाटन के समय पूजा समारोह का वीडियो शूट कर रही है.

ग्रामीण SEWA सदस्यों ने परिवार की जमीन वापस खरीदने के लिए SEWA बैंक से कर्ज मांगा. SEWA ने एक शर्त पर सहमति दी - भूमि का स्वामित्व महिला के नाम पर होगा - उसके पति या ससुर के नाम पर नहीं. जब SEWA ने उन्हें इस स्थिति की जानकारी देतीं थीं तो कभी-कभी ग्रामीण महिलाएं वो सुनकर दंग रह जाती थीं. एक बहू, जो परिवार की सबसे निम्न स्थिति वाली सदस्य थी, वो भला पारिवारिक भूमि की मालिक कैसे हो सकती थी? लेकिन SEWA बैंक के आग्रह से कई ग्रामीण महिलाएं पारिवारिक भूमि की मालिक बन गईं. एक बार जब वे परिवार में जमीन की मालिक बनीं, तो इन महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई.

SEWA सदस्यता ने शहरों में महिलाओं के परिवार और समुदाय की स्थिति में भी सुधार किया. उदाहरण के लिए, 1990 के एक सर्वेक्षण में, शहरी SEWA सदस्यों ने बताया कि SEWA में शामिल होने के बाद, उनकी अपने काम, बड़े घरेलू खर्च, अपने बच्चों की शिक्षा और शादी और सामाजिक रीति-रिवाजों के मामले में निर्णय लेने की शक्ति बढ़ गई थी. SEWA के साठ प्रतिशत सदस्यों ने कहा कि उन्होंने मालिक या पुलिस के साथ संघर्ष में खुद के लिए खड़े होने का साहस हासिल किया था. SEWA में शामिल होने के परिणामस्वरूप, लगभग 50 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि परिवार और समुदाय के भीतर राय व्यक्त करने में उनका विश्वास बढ़ा था, और लगभग 40 प्रतिशत ने कहा कि उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई थी.

SEWA के साथ अपने काम से इला को पता चला कि एक महिला जितना अधिक पैसा कमाती थी, उसके परिवार की स्थिति उतनी ही बेहतर होती थी. "क्योंकि महिलाओं की आय का उपयोग ज्यादातर रोटी, कपड़े और घर के लिए किया जाता था, जितनी अधिक नकद आय उसके हाथों में जाती थी, उतनी ही तेज़ी से परिवार का जीवन स्तर ऊपर उठता था," इला ने लेखक कलिमा रोज़ को बताया.

इला SEWA सदस्यों को उचित वेतन और अच्छी काम करने की स्थिति के अधिकारों से परे, महिलाओं के अधिकारों और उनके उत्पीड़न के बारे में व्यापक अर्थों में शिक्षित करना चाहती थीं. 1987 में, राजस्थान राज्य में, सती की एक घटना राष्ट्रीय सुर्ख़ियों में रही. रूप कंवर नाम की अठारह वर्षीय महिला ने अपने पति की चिता पर खुद को जला लिया था. सती को अंग्रेजों द्वारा 1829 में अवैध घोषित किया गया था, और तब से वैसे हादसे दुर्लभ थे. लेकिन बहुत से लोग, विशेष रूप से राजस्थान में, किसी पत्नी के लिए अपने पति के प्रति सम्मान दिखाने के लिए सती को एक सम्मानजनक बात मानते थे. सती में हजारों लोग शामिल होते थे, जिसे आशीर्वाद प्रदान करने वाला एक पवित्र कार्य माना जाता था. लेकिन महिला अधिकार समूह उससे नाराज थे. उन्होंने दावा किया कि महिला को नशीला पदार्थ दिए गए थे और उसे खुदकशी करने के लिए मजबूर किया गया था.

कई SEWA सदस्य मूल रूप से राजस्थान राज्य के थे. और इला ने SEWA की एक बैठक में सती के बारे में कहा. "आप में से कौन सती बनने को तैयार है?" इला ने पूछा. वहां मौजूद 2,000 में से सिर्फ एक महिला ने अपना हाथ उठाया. SEWA के अन्य सदस्यों ने उसका विरोध किया, और इस बारे में बात की कि महिलाओं के काम मूल्यवान और उपयोगी होने के बावजूद महिलाओं पर विनाशकारी चीजें करने के लिए दबाव क्यों डाला जाता था. SEWA के सदस्यों ने सती प्रथा के मौन विरोध में देश भर की अन्य महिलाओं के साथ शामिल होने के लिए राजस्थान जाने का फैसला किया. उन्होंने सती प्रथा की निंदा करते हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन भी भेजा.

अनुसूया साराभाई की तरह, जिन्होंने इला और अन्य महिलाओं को निडर होने के लिए प्रोत्साहित किया था, इला भी चाहती थीं कि SEWA सदस्य अपने अधिकारों के लिए खड़े होने में सक्षम हों. इला ने कहा, "मुझे लगता है कि SEWA के साथ मेरा काम TLA के साथ अनुसूया के काम की एक निरंतरता है," क्योंकि 1917 में मिल-मजदूरों की स्थिति निराशाजनक थी - ठीक उसी तरह जैसे स्वरोजगार वाली महिलाओं की स्थिति थी जब हमने SEWA शुरू की थी."

अध्याय 8

SEWA ने राष्ट्र और दुनिया को सिखाया

1999 में, इला पैंसठ साल की थीं और अभी भी SEWA के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई थीं. अन्य महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका में आगे आने के लिए उन्होंने 1996 में SEWA के महासचिव का पद छोड़ दिया, लेकिन उन्होंने प्रमुख नीतिगत मुद्दों पर SEWA के साथ काम करना जारी रखा और उनके संगठनों के निर्माण में मदद की.

SEWA का कार्यालय मध्य अहमदाबाद के एक पार्क, विक्टोरिया गार्डन से सड़क के पार, साबरमती नदी के किनारे एक चार मंजिली ईंट की इमारत है. SEWA के इसी ब्लॉक में चार घर भी हैं. SEWA बैंक, यूनियन कार्यालय, कोआपरेटिव कार्यालय, कानूनी कार्यालय, SEWA का सामान बेचने वाली एक दुकान, और कढ़ाई और बिजली के तारों जैसी चीजों के लिए प्रशिक्षण केंद्र. सभी इस इमारत और चार घरों में स्थित हैं. इस आंतरिक स्थान के अलावा, SEWA सदस्य आसपास के कुछ बाहरी स्थान का भी उपयोग करते हैं: मुख्य भवन की छत का उपयोग ब्लॉक प्रिंटिंग के लिए किया जाता है, और पास के खाली प्लाट का उपयोग बांस के बुनकरों द्वारा किया जाता है. 1999 तक SEWA के गुजरात में 160,000 से अधिक और भारत में 250,000 से अधिक सदस्य थे.

इला अन्य SEWA कार्यकर्ताओं और बाहरी आगंतुकों के साथ बैठकों में सुबह बिताती थीं. दोपहर के भोजन के बाद वो अपने कार्यालय में या उनके कार्यस्थलों पर SEWA सदस्यों से मिलती थीं, और शाम को कभी-कभी सरकारी अधिकारियों या मालिकों के साथ बैठकें करती थीं.

इस सामान्य कार्यक्रम में अक्सर यात्रा से बाधा पहुँचती थी. इला सप्ताह में लगभग एक बार राजधानी नई दिल्ली में राजनेताओं और विशेषज्ञों से मिलने, अहमदाबाद के आसपास के ग्रामीण इलाकों में अन्य SEWA सदस्यों से मिलने, या अन्य राज्यों में SEWA के स्थानीय लोगों से मिलने जाती थीं. इला साल में लगभग दो बार SEWA के हस्तशिल्प की बैठकों और प्रदर्शनियों के लिए अमेरिका या यूरोप की यात्रा करती थीं.

अपने खाली समय के दौरान, इला भारतीय शास्त्रीय और लोक गीत गाने का आनंद लेती थीं और वो खुद हारमोनियम बजाती थीं. उन्होंने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन की शिक्षा ली थी. उनका बेटा पास में ही अपने परिवार के साथ रहता था, और इला को विशेष रूप से अपने पांच वर्षीय पोते, सोमनाथ के साथ समय बिताने में आनंद आता था. अमेरिका की यात्राओं के दौरान इला अपनी बेटी अमी से मिलती थीं जो अपने अमेरिकी पति और दो बच्चों के साथ न्यू हेवन, कनेक्टिकट में रहती थी. इला के पति रमेश का 1993 के अगस्त में अचानक दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था और वो उन्हें बहुत याद करती थीं.

जब उन्होंने पहली बार SEWA की शुरुआत की थी, तब से इला ने अपने लिए निर्धारित सभी लक्ष्य हासिल कर लिए थे: वो गरीब स्वरोजगार वाली महिलाओं के जीवन में सुधार करना चाहती थीं; वो स्वरोज़गार महिलाओं को मज़दूर आंदोलन की मुख्य धारा में लाना चाहती थीं; और वो स्वरोज़गार महिलाओं को भारत के महिला आंदोलन में, एक अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार करना चाहती थीं.

SEWA के सदस्यों के जीवन में लगभग तुरंत सुधार होना शुरू हो गया था, जैसा कि SEWA सर्वेक्षणों से पता चलता है - महिलाओं की आय में वृद्धि हुई, और वे जमीन और घर खरीदने में सक्षम हुईं. 1999 तक शुरू के SEWA सदस्यों की पुत्रियाँ और बहुएँ भी अब SEWA में शामिल हो गई थीं.

ये युवतियां अब पैसों के लिए उतनी बेताब नहीं थीं, जितनी उनकी मां और सास थीं. उनके पास अब साक्षरता कक्षाएं लेने का समय और रुचि थी जिसके लिए इला SEWA की शुरुआत से ही बहुत उत्सुक थीं. उन्होंने अनुभव किया था पढ़ने और लिखने में सक्षम होने के बाद उन्हें ठेकेदार धोखा नहीं दे सकते थे. वे अधिक आसानी से आने-जाने में भी सक्षम थीं, क्योंकि अब वे सड़क के संकेत और बस नंबर पढ़ सकती थीं.

लेकिन भले ही अगली पीढ़ी का जीवन अपनी माँ की पीढ़ी से बेहतर बना हो, फिर भी उन्हें SEWA की आवश्यकता थी. बेटियां और उनकी बेटियां हमेशा यूनियन, बैंक, बीमा योजना और कई अन्य सेवा कार्यक्रमों का उपयोग कर पाएंगी, जैसे कि भारत का बाकी मध्यम वर्ग करता है. पर दुर्भाग्य से, अहमदाबाद में अभी भी बहुत अधिक गरीब स्वरोजगार महिलाएं थीं जिनकी माताएँ SEWA सदस्य नहीं थीं.



झाड़ू बनाने वाले की बेटी यह युवती SEWA के कई कार्यक्रमों का लाभ उठा सकेगी. वो और उसका परिवार अहमदाबाद के एक गरीब हिस्से, पाम लीफ कम्युनिटी में रहते हैं, जहाँ अन्य कई स्वरोजगार वाली महिलाएँ हैं.

इला अपने दूसरे लक्ष्य तक पहुँचने में सफल रहीं. वो स्वरोजगार महिलाओं को श्रमिक आंदोलन की मुख्यधारा में लाईं. उन्होंने श्रमिक आंदोलन में लोगों को इस तथ्य के बारे में सिखाया कि स्वरोजगार महिलाएं भी श्रमिक थीं जिन्हें एक यूनियन के संरक्षण का लाभ उठाना चाहिए था. वर्षों तक इला ने अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठनों के सम्मेलनों में SEWA के बारे में भाषण दिए. 1985 तक SEWA संघ खुद को अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठनों, जैसे कि इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फूड, बेवरेज, टोबैको, एंड एलाइड वर्कर्स, और इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ प्लांटेशन, एग्रीकल्चर एंड एलाइड वर्कर्स के साथ संबद्ध करने में सक्षम रहा. स्थापित यूनियनों के साथ इन जुड़ावों ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वरोजगार महिलाओं को यूनियन संरक्षण की उतनी ही आवश्यकता थी, जितनी वेतनभोगी श्रमिकों को, जिनका एक स्थाई मालिक था.

लेकिन इला उससे संतुष्ट नहीं हुईं. वो चाहती थीं कि सबसे बड़ा, सबसे महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय श्रम समूह, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) स्वरोजगार महिलाओं पर ध्यान दे. ILO, अंतरराष्ट्रीय श्रम कानूनों के लिए मानक निर्धारित करता है. 1989 के अंत तक, ILO केवल औपचारिक कार्य क्षेत्र के प्रतिनिधियों से बना था, और SEWA सदस्यों जैसी महिलाओं पर उन्होंने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया था. लेकिन इला और SEWA जोर देते रहे, और 1996 में ILO ने न्यूनतम वेतन और काम करने की शर्तों सहित गृह-श्रमिकों के लिए मानक पारित किए. इला इस जीत से रोमांचित थीं, लेकिन वो जानती थीं कि उनकी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई थी: इन मानकों को कानून बनने से पहले अलग-अलग देशों द्वारा अभी भी उनकी पुष्टि की जानी बाकी थी.

अब SEWA श्रमिक आंदोलन की मुख्य धारा में भाग लेने से कुछ ज्यादा कर रही थी. SEWA वास्तव में श्रमिक संघों के काम करने के तरीके को बदल रही थी. इंटरनेशनल यूनियन ऑफ फूड, बेवरेज, टोबैको एंड एलाइड वर्कर्स यूनियन के पूर्व महासचिव डैन गैलिन के अनुसार, "SEWA के मॉडल यूनियनों का भविष्य था."

"SEWA अन्य यूनियनों से अलग है," इला ने समझाया, "क्योंकि हम केवल श्रमिकों का एक समूह नहीं हैं जो मालिकों पर अधिक वेतन और बेहतर स्थितियों के लिए दबाव डालते हैं. SEWA में 100 सहकारी समितियां भी हैं - जहाँ श्रमिक स्वयं अपने मालिक हैं." जब यूनियन और कोआपरेटिव मिलकर एक साथ काम करते हैं, जैसा कि SEWA में होता है तब सभी कार्यकर्ता लाभान्वित होते हैं.

भारत सरकार ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया कि स्वरोजगार करने वाले लोग श्रमिक होते थे. इला और SEWA ने नेशनल सेंटर फॉर लेबर नामक एक संगठन बनाने में मदद की, जो देश भर के स्वरोजगार श्रमिकों के लिए ट्रेड यूनियनों का एक समूह है. इस संगठन को 1994 में बिना किसी समस्या के एक यूनियन के रूप में पंजीकृत किया गया था - जबकि 1972 में SEWA को उसके लिए महीनों इंतजार करना पड़ा और तभी यूनियनों के रजिस्ट्रार को उसे पंजीकृत किया.

इला अपने तीसरे लक्ष्य को प्राप्त करने में भी सफल रहीं: स्वरोजगार महिलाओं को भारत के महिला आंदोलन की मुख्यधारा में लाना. भारतीय महिला आंदोलन ने सती प्रथा, दहेज-मृत्यु, पुलिस द्वारा बलात्कार और पत्नी की पिटाई जैसे मुद्दों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया था. SEWA सदस्यों के साथ काम करते हुए, इला ने पाया कि सेवा की महिलाएं भी इनमें से कुछ समस्याओं से पीड़ित थीं लेकिन उनकी प्रमुख चिंता उनका काम था. उन्होंने महसूस किया कि अगर उन्हें स्थिर, अच्छी तनख्वाह वाला काम मिल जाए तो वे अपनी अन्य समस्याओं को संभालने में सक्षम होंगी. इला और SEWA ने यह सुनिश्चित किया कि भारतीय महिला आंदोलन गरीब महिलाओं और उनके काम पर भी ध्यान दें.

अब सरकारी नेताओं ने भी स्वरोजगार महिलाओं पर ध्यान देना शुरू कर दिया. सालों से SEWA ने भारत सरकार से स्वरोजगार महिलाओं की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक आयोग गठित करने के लिए कहा था, और 1987 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी उसके लिए सहमत हुए. उन्होंने इला को भारतीय संसद की राज्यसभा (उच्च सदन) के लिए मनोनीत किया, और उन्हें स्वरोजगार महिलाओं पर बने राष्ट्रीय आयोग का अध्यक्ष होने के लिए आमंत्रित किया.

भारतीय महिला आंदोलन क्या करता है?

दुनिया भर की महिलाओं की तरह भारत में भी महिलाएं भेदभाव और असमानता से पीड़ित हैं. उदाहरण के लिए, आमतौर पर महिलाएं पुरुषों की तरह शिक्षित नहीं होती हैं, और पुरुषों की तुलना में कम पैसा कमाती हैं. भारत में, जब एक महिला की शादी होती है, तो वो आमतौर पर अपने पति के परिवार के साथ रहने चली जाती है, जहाँ उसकी स्थिति निम्न होती है और वहां उसके साथ कभी-कभी खराब व्यवहार किया जाता है. कभी-कभी एक महिला को उसके पति या ससुराल वालों द्वारा पीटा जाता है या मार दिया जाता है क्योंकि वो अपनी शादी के समय पर्याप्त दहेज नहीं लाई थी. शराब की लत पुरुषों के बीच एक समस्या है - विशेष रूप से गरीब पुरुषों के बीच, जिनके पास कम शिक्षा और कम अवसर होते हैं - और कई महिलाओं को उनके पतियों द्वारा पीटा जाता है. बच्चों को पालने का मुख्य बोझ महिलाएं ही उठाती हैं.

भारतीय महिला आंदोलन इन और भारतीय महिलाओं के सामने आने वाली कई अन्य समस्याओं को हल करना चाहता है. यह आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी में शुरू हुआ था, और मूल रूप से भारतीय पुरुषों द्वारा शुरू किया गया था जो इंग्लैंड में शिक्षित थे और भारतीय महिलाओं के साथ जिस तरह से व्यवहार किया जाता था, उससे खुद को शर्मिंदा महसूस करते थे. उस समय, अधिकांश महिलाएं अशिक्षित थीं, बहुत कम उम्र में ही उनकी शादी कर दी जाती थी (अक्सर बहुत बड़ी उम्र के पुरुषों के साथ), और विधवा होने पर उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाता था.

धीरे-धीरे, जैसे-जैसे अधिक-से-अधिक महिलाएं शिक्षित हुईं, महिलाओं ने, महिलाओं के अधिकारों के आंदोलन को अपने हाथ में लिया. स्वतंत्रता के लिए भारतीय संघर्ष के दौरान, महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. भारतीय संविधान, महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अधिकारों की गारंटी देता है. आज पूरे भारत में सैकड़ों महिला संगठन हैं - महिलाओं के स्वास्थ्य, नौकरी प्रशिक्षण, और बलात्कार के विरोध से लेकर कॉलेजों में महिला अध्ययन विभागों और कई करियर में महिलाओं के लिए पेशेवर संघों तक हर चीज में शामिल हैं. इसके अलावा, सोलह वर्षों तक भारत का नेतृत्व एक लोकप्रिय महिला प्रधान मंत्री-इंदिरा गांधी ने किया था. उनके नेतृत्व ने सभी भारतीय महिलाओं को यह देखने में मदद की कि वे शक्तिशाली और अपने जीवन की प्रभारी हो सकती हैं.

देश भर में स्वरोजगार महिलाओं के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए, इला और आयोग के अन्य सदस्यों ने भारत के हर राज्य की यात्रा की. उन्होंने स्वरोजगार महिलाओं से बात करके यह पता लगाया कि उनकी समस्याएं क्या थीं और उन्हें क्या मदद चाहिए. आयोग ने "श्रमशक्ति" नामक एक 400-पृष्ठ की रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसका अर्थ है "महिला शक्ति," उसमें समस्याओं के विवरण के साथ ही समाधानों के पचास पृष्ठ भी हैं. आयोग के अनुसार, सबसे महत्वपूर्ण समाधान, स्वरोजगार महिलाओं को उनकी उत्पादक संपत्ति, जैसे कि उपकरण, कच्चा माल, भूमि, पशु, बैंक खाते और भवनों के मालिक होने में मदद करना था. "श्रमशक्ति", जिसे इला ने SEWA का "घोषणापत्र" बताया, का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ, और इसका उपयोग राष्ट्रीय सरकार, राज्य सरकारों और अन्य महिला संगठनों द्वारा किया जब उन्होंने स्वरोजगार महिलाओं की सहायता के लिए कार्यक्रम विकसित किए.

अपने तीन लक्ष्यों को प्राप्त करने के अलावा, इला ने एक ऐसा लक्ष्य भी हासिल किया जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी. जब उन्होंने SEWA पहली बार शुरू की थी: वो पूरे भारत और दुनिया भर में गरीब महिलाओं की मदद करने में सक्षम रहीं. इला और SEWA ने भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में स्वरोजगार महिला संघों को शुरू करने में मदद की है. जब इला ने 1977 में "मैगसेसे पुरस्कार" जीता तो उसका इतना प्रचार हुआ, फिर पूरे भारत की महिलाओं ने उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि वे भी वैसा ही संगठन कैसे शुरू कर सकती थीं. इला ने उन्हें अहमदाबाद में SEWA में आने और यह देखने के लिए आमंत्रित किया कि SEWA कैसे काम करता था. फिर वो वापिस जाकर अपना खुद संगठन शुरू कर सकती थीं. ये अन्य SEWA, अहमदाबाद में SEWA से पूरी तरह से स्वतंत्र हैं, लेकिन वे अक्सर एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करते हैं और समस्याओं में एक-दूसरे की मदद करते हैं.



बीड़ी कार्यकर्ताओं की एक बैठक में इला ने SEWA के बारे में जानकारी साझा की.

SEWA बैंक के साथ इला के काम ने अन्य लोगों को भी इसी तरह के संगठन शुरू करने के लिए प्रेरित किया - जैसे कि महिला विश्व बैंक, 1981 में शुरू हुआ. विश्व बैंक के ज़रिये गरीब देशों की सरकारें अपने देशों को विकसित करने के लिए ऋण प्राप्त करने की कोशिश करती हैं, लेकिन महंगी सरकारी परियोजनाओं के लिए धन उधार देने के लिए विश्व बैंक की आलोचना भी की गई है, क्योंकि उनसे अंततः गरीब लोगों को नुकसान होता है: उदाहरण के लिए, अगर एक बांध बनाने के लिए कोई सरकार धन उधार लेती है जिससे लाखों लोग प्रभावित होंगे. फिर गरीब लोगों को अपनी जमीन और घर छोड़ना पड़ेगा. SEWA बैंक के साथ इला के काम से प्रेरित होकर, विश्व बैंक ने सीजीएपी शुरू किया, जो ग्रामीण और शहरी गरीब लोगों, ज्यादातर महिलाओं को ऋण देता है.

इला, रॉकफेलर फाउंडेशन के बोर्ड की सदस्य हैं, जो अमरीका में सबसे पुराने, सबसे बड़े फाउंडेशनों में से एक है. (फाउंडेशन एक ऐसा संगठन होता है जो उन समूहों को पैसा देता है जो दुनिया के लिए अच्छा काम कर रहे हैं.) इला को दुनिया भर में गरीब महिलाओं के साथ काम करने में अनुभवी नेता की खोज के बाद ही बोर्ड का सदस्य बनाया गया था. बोर्ड के सदस्य के रूप में, इला फाउंडेशन को यह तय करने में मदद करती हैं कि फाउंडेशन हर साल किन संगठनों को पैसे दे. रॉकफेलर फाउंडेशन के उपाध्यक्ष लिंकन चेन के अनुसार, "इला जानती हैं कि बाहरी लोगों द्वारा किस प्रकार के हस्तक्षेप वास्तव में गरीबों को मजबूत और सशक्त बना सकते हैं."

दुनिया के हर देश में गरीब महिलाएं हैं, और कई देश यह नहीं समझ पाए हैं कि इन महिलाओं की मदद कैसे की जाए. इला और SEWA गरीब महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने में उनकी सफलता के लिए इतने प्रसिद्ध हो गए हैं कि दुनिया भर के नेताओं ने SEWA का दौरा किया है और इला से बातचीत की है. अमेरिका की प्रथम महिला हिलेरी क्लिंटन ने इला के साथ कई बार वाशिंगटन, डी.सी. और अहमदाबाद का दौरा किया है. पोलिश नेता लेच वालेसा और दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मंडेला भी इला से मिलने अहमदाबाद आए हैं.

इला ने 1996 में अपने भाषण में घोषणा की, "सेवा ने निश्चित रूप से एक चीज हासिल की है, वह है दुनिया भर में सभी असंगठित, स्वरोजगार महिलाओं के लिए "विजिबिलिटी". जो महिलाएं नीति निर्माताओं के लिए, सांख्यिकीविदों के लिए पहले अदृश्य थीं, उन्हें हमारी सामूहिक ताकत ने दृश्यमान बनाया है."

इला ने SEWA की "बरगद के पेड़" से तुलना की. बरगद का पेड़ एक भारतीय पेड़ है जो अपनी शाखाओं से नीचे जड़ें भेजता है. प्रत्येक जड़ जमीन की ओर बढ़ती है, और उस जड़ से एक और नया तना बनता है. किसी बरगद के पेड़ में ऐसे अनगिनत संख्या में तने होते हैं, और उससे पेड़ ज़मीन के एक बड़े क्षेत्र में फैल सकता है - वो इतना बड़ा हो सकता है कि उसकी शाखाओं के नीचे एक बड़ा बाजार लगाया जा सकता है. बरगद के पेड़ की तरह, SEWA की कई अलग-अलग परियोजनाएँ हैं जो उसकी शाखाओं से फैलती हैं, और हर वर्ष, प्रत्येक परियोजना ने कई और परियोजनाओं को जन्म देती है. SEWA यूनियन ने नेशनल सेंटर फॉर लेबर को अंकुरित किया. SEWA की ग्रामीण विकास गतिविधियों ने ग्रामीण महिला उत्पादक संघ को जन्म दिया, जो ग्रामीण महिलाओं को व्यवसाय विकसित करने और ग्राहकों तक पहुँचने में मदद करता है. SEWA बैंक से अहमदाबाद के आसपास के जिलों में महिला बचत संघों का विकास हुआ. SEWA महिला ट्रस्ट ने बाल देखभाल सहकारी समितियों और स्वास्थ्य सहकारी समितियों को स्थापित किया. SEWA कार्यकर्ताओं की सहकारी समितियों में इकहत्तर सहकारी समितियों में 60,000 महिलाओं को शामिल किया गया है.



एक छोटे से बरगद के पेड़ के सामने दो बच्चे चल रहे हैं. जब बरगद की लटकी हुई जड़ें जमीन पर पहुंचती हैं, तो वे एक तने में विकसित हो जाती हैं और अंततः तना, पेड़ को सहारा देने में मदद करता है.



इला ने एक बैठक में ग्रामीण सेवा सदस्यों को बधाई दी.

और बरगद के पेड़ की तरह, SEWA के पास अपनी "शाखाओं" (कार्यक्रमों) का समर्थन करने के लिए एक से अधिक "तने" (नेता) हैं. इला पहली नेता थीं, लेकिन वो अकेले SEWA को संचालित नहीं सकती थीं. इला के मुख्य लक्ष्यों में से एक यह सुनिश्चित करना था कि SEWA के कई कार्यक्रमों को चलाने के लिए कई अन्य सक्षम महिला नेता हों.

आने वाले वर्षों में इला चाहती हैं कि SEWA का विकास जारी रहे और स्वरोजगार महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानूनों पर दबाव डाला जाए. और वो चाहती हैं कि स्वरोजगार वाली महिलाएं - जिन्होंने 1999 में SEWA के नेतृत्व का 87 प्रतिशत हिस्सा बनाया - SEWA के भीतर और अधिक नेतृत्व की अपनी भूमिका को जारी रखें. वो यह भी चाहती हैं कि स्वरोजगार महिलाएं मतदाता और नेता के रूप में राजनीतिक शक्ति हासिल करें. राजनेता अभी भी स्वरोजगार वाली लोगों को एक मतदान समूह के रूप में नहीं देखते हैं, और इसलिए ऐसे कार्यक्रमों और नीतियों को विकसित करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं जिससे स्वरोजगार को लाभ मिले. "राजनेता उन्हें मतदाता के रूप में देखते हैं लेकिन अनौपचारिक क्षेत्र के मतदाताओं के रूप में नहीं," इला ने ग्लोबल सिटी पत्रिका में समझाया. "उन्हें अलग-अलग समूहों के रूप में देखा जाता है: हरिजन, मुस्लिम, या ईसाई. मैं संगठन में बहुत विश्वास रखती हूं, और मेरा मानना है कि अगर उन्हें जाति या धार्मिक आधार पर नहीं बल्कि पीपुल्स सेक्टर के हिस्से के रूप में लामबंद किया जा सके, तो चीजें बदल जाएंगी."

इसके अलावा, इला चाहती हैं कि SEWA और अन्य महिला समूह यह तय करें कि वे वास्तव में किस तरह की सरकार चाहती हैं. "हम, महिलाओं के रूप में, नारीवादी शासन को कैसे देखते हैं?" उन्होंने 1997 में भारत की स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगांठ मनाते हुए महिला समूहों के एक सम्मेलन में पूछा. "मैं सरकार द्वारा विकास को अधिक समान, अधिक देखभाल करने वाले, अधिक प्रभावी, अधिक उत्तरदायी प्रशासन की बात कर रही हूं."

अंततः, इला एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहती हैं जिसमें महिलाएं और पुरुष बिना रूढ़िवाद या भय के कंधे से कंधा मिलाकर काम करें. वो चाहती हैं कि पुरुष, महिलाओं को एक भागीदार के रूप में देखें, न कि उपयोग की जाने वाली वस्तुओं के रूप में: और वो चाहती हैं कि महिलाएं, पुरुषों को एक भागीदार के रूप में देखें, न कि डरावने जीवों की तरह.



इला अन्य देशों में संगठनों के साथ परामर्श करने में काफी समय बिताती हैं क्योंकि वहां वे गरीब श्रमिकों के जीवन में सुधार के लिए SEWA के प्रभावी मॉडल का इस्तेमाल कर रहे हैं.

इला भट्ट ने ऐसे लोगों को देखा जो दूसरों के लिए अदृश्य थे: धूल से सनी, भूखी, कम वेतन पाने वाली महिलाएं जो सुबह से शाम तक सब्जियां बेचती थीं, या पुराने कागज इकठ्ठा करती हैं, या मीलों तक भारी कपड़े ढोने का काम करती हैं. इला ने न केवल उन्हें देखा, बल्कि वो उनकी मदद करना चाहती थीं - केवल उन्हें थोड़े से पैसे देकर नहीं. इला इन महिलाओं को खुद की मदद करने और उनकी मानवीय गरिमा को वापस पाने में मदद करना चाहती थी.

SEWA महिलाओं की ताकत को बहाल करने के साथ-साथ, इला इन महिलाओं को दुनिया के ध्यान में लाने में कामयाब रही हैं. उन्होंने मिलकर दुनिया को यह साबित करके दिखाया कि गरीब, अनपढ़ स्वरोजगार महिलाएं अपनी यूनियनें, व्यवसाय, बैंक और सहकारी समितियां चला सकती हैं - कि अगर उन्हें मौका मिले, तो वे अपना जीवन भी चला सकती हैं.

समयरेखा

1933 इला भट का जन्म 7 सितंबर को अहमदाबाद, भारत में हुआ.

1942 इला के नाना और मामा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए जेल गए थे.

1947 भारत को ब्रिटेन से आजादी मिली.

1951 इला ने एक जनगणना पर काम किया, और डेटा इकट्ठा करने के लिए गरीब बस्तियों की यात्रा की. यह व्यापक, घोर गरीबी देखने का उनका पहला मौका था. फिर उन्होंने एक साल गरीबी में गुजारा.

1952 इला ने लॉ स्कूल में पढ़ाई शुरू की.

1955 इला ने टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन के साथ काम शुरू किया.

1956 इला ने 20 अप्रैल को रमेश भट्ट से शादी की.

1958 इला की बेटी अमीमयी का जन्म 8 जनवरी को हुआ.

1959 इला का बेटा, मिहिर का जन्म 24 नवंबर को हुआ.

1968 सालों बाद इला फिर से टीएलए में शामिल हो गई. इस बार वो टीएलए की महिला विंग की प्रमुख बनीं.

1971 इला, इज़राइल के तेल अवीव में श्रम और सहकारी समितियों पर एक सम्मेलन में भाग लेने गईं, जहाँ उन्होंने यूनियन और सहकारी समितियाँ एक साथ कैसे काम कर सकती हैं उसके बारे में सीखा. गरीब स्व-रोजगार महिलाओं के समूह टीएलए में इला से मिले. स्व-रोजगार महिला संघ का जन्म 3 दिसंबर को हुआ.

1974 महिला सेवा सहकारी बैंक (सेवा महिला सहकारी बैंक) जुलाई में पंजीकृत हुआ.

1975 महिला सेवा ट्रस्ट की स्थापना जिससे प्रत्येक सेवा सदस्य को मातृत्व अवकाश के लिए धन और आपूर्ति प्रदान करने के लिए की गई. इला ने मेक्सिको सिटी में महिलाओं पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भाग लिया.

1976 SEWA बैंक में पर्याप्त पैसा जमा हुआ फिर उन्होंने उस धन से महिलाओं को कर्ज़ा देना शुरू किया.

1977 SEWA ने शहरी क्षेत्र में महिला चिंदी स्टिचर्स के लिए प्रति रजाई अधिक पैसे की मांग की, और उससे सबीना चिंदी सहकारी समिति का जन्म हुआ. इला को "रेमन मैग्सेसे पुरस्कार" मिला. उन्होंने SEWA ट्रस्ट को $20,000 की अपनी पुरस्कार राशि दान की.

1980 SEWA ने स्वरोजगार महिलाओं के साथ काम करने वाली महिला नेताओं के लिए एक बैठक आयोजित की. उनके सुझावों को एक सरकारी योजना में शामिल किया गया. महिला विश्व बैंकिंग की स्थापना मिशेला वॉल्श ने की, जो 1975 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में इला से मिलकर प्रेरित हुईं थीं. SEWA ने अपने स्वयं के भवनों का निर्माण किया.

1981 मेडिकल कॉलेजों में हरिजनों के लिए आरक्षण के मुद्दे पर दंगे और हिंसा ने अहमदाबाद शहर को पंगु बना दिया. SEWA ने एक अलोकप्रिय स्टैंड लिया और फिर लोगों ने कई रातों तक इला के घर पर पथराव किया. मई में, टीएलए ने इला और SEWA को टीएलए कार्यालय छोड़ने को कहा.

1983 SEWA एक बड़े अंतर्राष्ट्रीय संघ, इंटरनेशनल फ़ेडरेशन ऑफ़ फ़ूड, बेवरेज, टोबैको, एंड अलाइड वर्कर्स के साथ संबद्ध हुआ.

1984 इला को स्वीडिश संसद में "राइट लाइवलीहुड अवार्ड" मिला.

1985 SEWA इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ प्लांटेशन, एग्रीकल्चर एंड अलाइड वर्कर्स में शामिल हुआ. SEWA ने भारत सरकार को एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें स्व-नियोजित महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक आयोग की मांग की. इला और SEWA समुदाय ने मुस्लिम और हिंदू सदस्यों के बीच सुलह/शांति के प्रयास शुरू किये.

1987 इला को राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया और स्वरोजगार महिलाओं पर आयोग की अध्यक्षता करने को कहा गया. इला ने सती और रूप कंवर की घटना के विरोध में एक मौन मार्च का नेतृत्व किया.

1990 पेरिस में "फेम एलायंस" से सम्मानित.

1993 इला के पति, रमेश की मृत्यु.

1994 इला ने नेशनल सेंटर फॉर लेबर बनाने में मदद की, जो देश भर के स्वरोजगार महिलाओं की ट्रेड यूनियनों का एक समूह है.

1996 पहली बार, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) न्यूनतम वेतन और काम करने की स्थिति सहित गृह-श्रमिकों के लिए मानक पारित किया. इला ने SEWA के महासचिव का पद छोड़ दिया, लेकिन SEWA आंदोलन में काम करना जारी रखा.